49वां राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार

49th National Film Awards

2002

संपादन
सुमन तरफदार

Editor
Suman Tarafdar

समन्वय
मनोज श्रीवास्तव

Co-ordination
Manoj Srivastava

सहयोग
मंजु खन्ना
पवन कुमार कटारिया
गौरी, नूपुर, अंकित

Assistance
Manju Khanna
Pawan Kumar Kataria
Gauri, Noopur, Ankit

उत्पादन
जी.पी. धुसिया
वी.के.मीणा
विलास पगारे

Production
G.P. Dhusia
V.K. Meena
Vilas Pagare

फिल्म समारोह निदेशालय के लिए विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आकल्पित और प्रकाशित
मुद्रक : इंडिया आफसेट प्रेस, मायापुरी, नई दिल्ली - 110064

Designed and published by the Directorate of Advertising & Visual Publicity, Ministry of Information & Broadcasting, Government of India, for the Directorate of Film Festivals, Printed at India Offset Press, New Delhi -110064

No. 2/15/2002-PP-III 1500 Copies February 2003

विषय सूची

CONTENTS

	Page No.	
निर्णायक मंडल	7	**JURY MEMBERS**
दादा साहेब फाल्के पुरस्कार	11	**DADASAHEB PHALKE AWARD**
दादा साहेब फाल्के पुरस्कार विजेता	14	**Winners of President's Gold Medal (Swarna Kamal)**
48वां राष्ट्रीय पुरस्कार - संक्षेप में	16	**Dadasaheb Phalke Award Winners**
कथाचित्र पुरस्कार	17	**AWARDS FOR FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार	18	Best Feature Film
निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार	20	Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director
लोकप्रिय एवं स्वस्थ् मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम फ़ीचर फिल्म का	22	Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment
राष्ट्रीय एकता के लिए सर्वोत्तम कथाचित्र का नर्गिस दत्त पुरस्कार	24	Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration
अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म	26	Best Film on Other Social Issues
सर्वोत्तम निर्देशन	28	Best Direction
सर्वोत्तम अभिनेता	30	Best Actor
सर्वोत्तम अभिनेत्री	32	Best Actress
सर्वोत्तम सह अभिनेता	34	Best Supporting Actor
सर्वोत्तम सह अभिनेत्री	36	Best Supporting Actress
सर्वोत्तम बाल कलाकार	38	Best Child Artist
सर्वोत्तम पार्श्व गायक	40	Best Male Playback Singer
सर्वोत्तम पार्श्व गायिका	42	Best Female Playback Singer
सर्वोत्तम छायांकन	44	Best Cinematography
सर्वोत्तम पटकथा	46	Best Screenplay
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	48	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	50	Best Editing
सर्वोत्तम कला निर्देशन	52	Best Art Direction
सर्वोत्तम वेषभूषाकार	54	Best Costume Designer
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	56	Best Music Direction
सर्वोत्तम गीत	58	Best Lyrics
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	60	Special Jury Award
सर्वोत्तम विशेष प्रभाव	62	Best Special Effects
सर्वोत्तम नृत्य संयोजन	64	Best Choreography

सर्वोत्तम बंगला फ़ीचर फ़िल्म	66	Best Feature Film In Bengali
सर्वोत्तम हिंदी फ़ीचर फ़िल्म	68	Best Feature Film In Hindi
सर्वोत्तम कन्नड़ फ़ीचर फ़िल्म	70	Best Feature Film In Kannada
सर्वोत्तम मलयालम फ़ीचर फ़िल्म	72	Best Feature Film In Malayalam
सर्वोत्तम उड़िया फ़ीचर फ़िल्म	74	Best Feature Film In Oriya
सर्वोत्तम तमिल फ़ीचर फ़िल्म	76	Best Feature Film In Tamil
सर्वोत्तम तेलुगु फ़ीचर फ़िल्म	78	Best Feature Film In Telugu
सर्वोत्तम अंग्रेजी फ़ीचर फ़िल्म	80	Best Feature Film In English
विशेष उल्लेख	82	Special Mention
पुरस्कार जो नहीं दिए गए - फ़ीचर फ़िल्म	84	Awards not given
गैर कथाचित्र पुरस्कार	85	**AWARDS FOR NON-FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम गैर कथाचित्र पुरस्कार	86	Award for the Best Non-Feature Film
निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम गैर कथाचित्र पुरस्कार	88	Award for the Best First Non-Feature Film of a Director
सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय मानवजातीय फ़िल्म	90	Award for the Best Anthropological/ Ethnographic Film
सर्वोत्तम जीवनी फ़िल्म	92	Award for the Best Biographical Film
सर्वोत्तम पर्यावरण परिरक्षण फ़िल्म	94	Award for the Best Environment/Conservation Film
सर्वोत्तम संवर्धनात्मक फ़िल्म	96	Award for the Best Promotional Film
सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म	98	Award for the Best Film On Social Issues
सर्वोत्तम शैक्षिक, शिक्षाप्रद फ़िल्म	100	Award for the Best Educational/ Motivational Film
सर्वोत्तम खोज प्रधान फ़िल्म	102	Award for the Best Investigative Film
सर्वोत्तम एनीमेशन फ़िल्म	104	Award for the Best Animation Film
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	106	Special Jury Award
सर्वोत्तम लघु कल्पित फ़िल्म	108	Award for the Best Short Fiction Film
परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फ़िल्म	110	Award for the Best Film On Family Welfare
सर्वोत्तम निर्देशन	112	Award for the Best Direction
सर्वोत्तम छायांकन	114	Award for the Best Cinematography
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	116	Award for the Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	118	Award for the Best Editing
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	120	Award for the Best Music Direction
विशेष उल्लेख	122	Special Mention
पुरस्कार जो नहीं दिए गए-गैर कथाचित्र	124	Awards Not Given
सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन पुरस्कार	125	**AWARDS FOR BEST WRITING ON CINEMA**
सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक	126	Award for the Best Book On Cinema
सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक	128	Award for the Best Film Critic
विशेष उल्लेख	130	Special Mention

फ़ीचर फ़िल्म सारांश	133	**SYNOPSES - FEATURE FILMS**
आलावंदन	134	Aalavandan
अतिथि	135	Atithi
बब	136	Bub
चाँदनीबार	137	Chandni Bar
डैनी	138	Dany
दिल चाहता है	139	Dil Chahta Hai
द्वीप	140	Dweepa
हेमांतेर पाखी	141	Hemanter Pakhi
कुट्टी	142	Kutty
लगान	143	Lagaan
मगुनीरा शगदा	144	Magunira Shagada
मित्र - माई फ्रैंड	145	Mitr - My Friend
नेयतुकरन	146	Neythukaran
उरुकु नूरुपेर	147	Ooruku Nooruper
पनोइ जोंगकी	148	Panoi Jongki
शो	149	Show
तिलादानम्	150	Tiladaanam
उदयगीतविन् 'अज़ाही'	151	Udayageethavin 'Azhahi'
ग़ैर फ़ीचर-फ़िल्म सारांश	153	**SYNOPSES – NON-FEATURE FILMS**
आत्मन्	154	Athman
चैत्र	155	Chaitra
डायरी ऑफ़ ए हाउसवाइफ़	156	Diary of a Housewife
एनफ़ ऑफ़ साइलेंस	157	Enough of Silence
द होली गंगा	158	The Holy Ganga
जोरसंको ठाकुरबाड़ी	159	Jorasanko Thakurbari
कालाहांडी	160	Kalahandi
कानावु मलाइलेक्कु	161	Kanavu Malayilekhu
द मोनपास ऑफ़ अरुणाचल प्रदेश	162	The Monpas of Arunachal Pradesh
ए न्यू पैराडाइम	163	A New Paradigm
इन सर्च ऑफ़ मुगासिल्क	164	In Search of Muga Silk
आर्केस्ट्रा	165	Orchestra
द पिंक कैमल	166	The Pink Camel
सायंथन थिन्ते पाडावुकल	167	Sayanthana Thinte Padavukal
सोनल	168	Sonal
तीजनबाई	169	Teejan Bai

निर्णायक मंडल Jury Members

कथाचित्र
निर्णायक मंडल

JURY FOR FEATURE FILMS

के. एस. सेतुमाधवन (अध्यक्ष)
K.S. Sethumadhavan (Chairperson)

अली रज़ा
Ali Reza

अरुण कौल
Arun Kaul

अरुणा हरप्रसाद
Aruna Har Prasad

चित्रा लक्ष्मणन
Chitra Lakshmanan

चित्रा मुदगल
Chitra Mudgal

हेमन दास
Hemen Das

जे. एल. रल्हन
J.L. Ralhan

के.सी.एन. चन्द्रशेखर
K.C.N. Chandrashekhar

के इबोहल शर्मा
K. Ibohal Sharma

के. सम्पत
K.Sampath

के. एस. रामाराव
K.S. Rama Rao

मीरा दीवान
Meera Dewan

नबेन्दु चटर्जी
Nabyendu Chatterjee

पल्लवी जोशी
Pallavi Joshi

प्रदीप बिस्वास
Pradip Biswas

प्रकाश दुबे
Prakash Dubey

राजीव नाथ
Rajeev Nath

रमेश एच. देसाई
Ramesh H. Desai

संजय सुरकर
Sanjay Surkar

संजीव हजारिका
Sanjeev Hazorika

गैर कथाचित्र निर्णायक मंडल

JURY FOR NON FEATURE FILMS

के. के. कपिल (अध्यक्ष)
K.K. Kapil (Chairperson)

दिनकर चौधरी
Dinkar Chowdhury

सुधाकर राव
K Sudhakar Rao

नरेश बेदी
Naresh Bedi

शालिनी शाह
Shalini Shah

सर्वोत्तम सिनेमा लेखन निर्णायक मंडल JURY FOR BEST WRITING ON CINEMA

रत्नोत्तमा सेन गुप्ता
Ratnottama Sengupta

भरत गोपी (अध्यक्ष)
Bharat Gopy (Chairman)

सविता भाखडी
Savita Bhakhry

दादा साहेब
फाल्के पुरस्कार

Dada Saheb Phalke Award

भारतीय सिनेमा के लिए उत्कृष्ट योगदान के लिए

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार 2001

यश चोपड़ा

जाने माने फ़िल्म निर्माताओं में से एक यश चोपड़ा लगभग पाँच दशकों से फ़िल्मों से संबद्ध हैं। इस विशिष्ट अवधि के दौरान यश चोपड़ा ने हिन्दी सिनेमा के लिए बहुत सी यादगार फ़िल्में बनाईं। सन 1932 में जालन्धर में जन्मे चोपड़ा ने अपने कैरियर की शुरुआत अपने भाई बी.आर. चोपड़ा के सहायक के रूप में की तथा बाद में बी.आर. फ़िल्मस के लिए पाँच फ़िल्मों का निर्देशन स्वयं किया। उसके उपरान्त उन्होंने अपना यश राज फ़िल्मस नामक प्रोडक्शन हाउस बनाया जिसमें बीस से भी अधिक फ़िल्मों का निर्माण और निर्देशन किया। यश चोपड़ा अपनी फ़िल्मों में रोमांचकता का पुट देने तथा जीवनशैली से ज्यादा अपनी मनमोहकता के लिए जाने जाते हैं।

वे यूरोप में शूटिंग के शौकीन हैं और वहां पर उनके नाम की एक झील भी है। उनके इस कार्य के लिए उन्हें स्विस सरकार द्वारा सम्मानित भी किया गया। वे अपनी लोकप्रिय फ़िल्मों के माध्यम से उत्कृष्ट संगीत प्रस्तुत करने के लिये भी विख्यात हैं। उन्होंने विवादित एवं निर्भीक विषयों पर भी फ़िल्म बनाने से संकोच नहीं किया। उनकी आत्मकथा ब्रिटिश फ़िल्म संस्थान 'वर्ल्ड डायरेक्टर सीरीज़' के अन्तर्गत जारी की जा चुकी है। यह पुरस्कारों एवं सम्मानों में सर्वाधिक था जिससे वे काफी लोकप्रिय हुए।

निर्देशक के रूप में उनकी फ़िल्में

1959: धूल का फूल, 1961: धर्म पुत्र, 1965: वक्त, 1969: आदमी और इंसान, इत्तेफ़ाक, 1973: जोशीला, दाग, 1975: दीवार, 1976: कभी कभी, 1978: त्रिशूल, 1979: काला पत्थर, 1981: सिलसिला, 1984: मशाल, 1985: फासले, 1988: विजय, 1989: चाँदनी, 1991: लम्हे, 1992: परम्परा, 1993: डर, 1997: दिल तो पागल है

निर्माता एवं प्रस्तुति

1977: दूसरा आदमी, 1979: नूरी, 1980: सवाल, 1981: खुदा, 1993: आईना, 1994: ये दिल्लगी, 1995: दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगें, 1997: हमको इश्क ने मारा, 2000: मोहब्बतें, 2002: मुझसे दोस्ती करोगे, साथिया

DADASAHEB PHALKE AWARD 2001

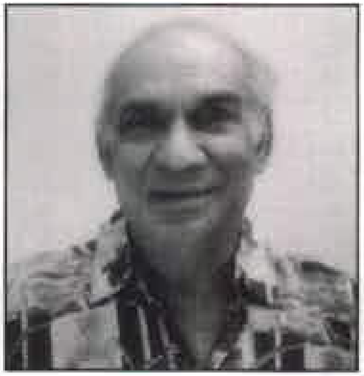

OUTSTANDING CONTRIBUTION TO INDIAN CINEMA

YASH CHOPRA

One of India's foremost filmmakers, Yash Chopra has been associated with films for over five decades. During this remarkably long span, Yash Chopra has made some of the most memorable films of Hindi cinema.

Born in 1932 in Jalandhar, he started out as an assistant to his brother, B R Chopra, and later independently directed five films for B R Films. After that, he started his own production house, Yash Raj Films, which has already produced more than 20 films, and for most of which he has wielded the directorial baton.

Yash Chopra is best known for the romantic flavour of his films, and for his glamorous, larger than life style. Fond of shooting in Europe, he even has a lake in Switzerland named after him. He has also been honoured by the Swiss government for his work. He is known for his keen sense of music and musical scores from his films have repeatedly topped the popularity charts.

He has not fought shy of making films on controversial and bold themes. His biography was released under the British Film Institute's World Directors Series. This is the latest in a series of awards and honours that he has been showered with.

Filmography

As Director:

1959: Dhool Ka Phool, 1961: Dharamputra, 1965: Waqt, 1969: Aadmi Aur Insaan, Ittefaq, 1973: Joshila, Daag, 1975: Deewar, 1976: Kahbie Kabhie, 1978: Trishul, 1979: Kala Patthar, 1981: Silsila, 1984: Mashaal, 1985: Faasle, 1988: Vijay, 1989: Chandni, 1991: Lamhe, 1992: Parampara, 1993: Darr, 1997: Dil To Pagal Hai

As Producer and Presenter:

1977: Doosra Aadmi, 1979: Noorie, 1980: Sawaal, 1981: Nakhuda, 1993: Aaina, 1994: Yeh Dillagi, 1995: Dilwale Dulhania Le Jayenge, 1997: Humko Ishq Ne Mara, 2000; Mohabbatien, 2002: Mujhse Dosti Karoge, Saathiya

WINNERS OF PRESIDENT'S GOLD MEDAL (SWARNA KAMAL) OVER THE YEARS

Sr. No.	Film	Director	Language	Year
1.	Shyamchi Aai	P. K.Atre	Marathi	1953
2.	Mirza Ghalib	Sohrab Modi	Hindi	1954
3.	Pather Panchali	Satyajit Ray	Bengali	1955
4.	Kabuliwala	Tapan Sinha	Bengali	1956
5.	Do Ankhen Barah Haath	V.Shantaram	Hindi	1957
6.	Sagar Sangame	Debaki Kumar Bose	Bengali	1958
7.	Apur Sansar	Satyajit Ray	Bengali	1959
8.	Anuradha	Hrishikesh Mukherjee	Hindi	1960
9.	Bhagini Nivedita	Bijoy Basu	Bengali	1961
10.	Dada Thakur	Sudhir Mukherjee	Bengali	1962
11.	Shehar Aur Sapna	Khwaja Ahmed Abbas	Hindi	1963
12.	Charulata	Satyajit Ray	Bengali	1964
13.	Chemmeen	Ramu Kariat	Malayalam	1965
14.	Teesri Kasam	Basu Bhattacharya	Hindi	1966
15.	Hatey Bazare	Tapan Sinha	Bengali	1967
16.	Gopi Gyne Bagha Byne	Satyajit Ray	Bengali	1968
17.	Bhuvan Shome	Mrinal Sen	Hindi	1969
18.	Samskara	T. Pattabhiram Reddy	Kannada	1970
19.	Seemabhaddha	Satyajit Ray	Bengali	1971
20.	Swayamvaram	Adoor Gopalakrishnan	Malayalam	1972
21.	Nirmalyam	M.T. Vasudevan Nair	Malayalam	1973
22.	Chorus	Mrinal Sen	Bengali	1974
23.	Chomana Dudi	B. V. Karanth	Kannada	1975

Sr. No.	Film	Director	Language	Year
24.	Mrigaya	Mrinal Sen	Hindi	1976
25.	Ghatashraddha	Girish Kasaravalli	Kannada	1977
26.	No award recommended			1978
27.	Shodh	Biplab Ray Choudhri	Hindi	1979
28.	Akaler Sandhane	Mrinal Sen	Bengali	1980
29.	Dakhal	Goutam Ghose	Bengali	1981
30.	Chokh	Utpalendu Chakraborty	Bengali	1982
31.	Adi Sankaracharya	G.V. Iyer	Sanskrit	1983
32,	Damul	Prakash Jha	Hindi	1984
33.	Chidambaram	G. Aravindan	Malayalam	1985
34.	Tabarana Kathe	Girish Kasaravalli	Kannada	1986
35.	Halodhia Choraye Bodhan Kahi	Jahnu Barua	Assamese	1987
36.	Piravi	Shaji N. Karun	Malayalam	1988
37.	Bagh Bahadur	Buddhadeb Dasgupta	Hindi	1989
38.	Maruppakkam	K. S. Sethumadhavan	Tamil	1990
39.	Agantuk	Satyajit Ray	Bengali	1991
40.	Bhagavad Gita	G. V. Iyer	Sanskrit	1992
41.	Charachar	Buddhadeb Dasgupta	Bengali	1993
42.	Unishe April	Rituparno Ghosh	Bengali	1994
43.	Kathapurushan	Adoor Gopalkrishnan	Malayalam	1995
44.	Lal Darja	Buddhadeb Dasgupta	Bengali	1996
45.	Thai Saheb	Girish Kasaravalli	Kannada	1997
46.	Samar	Shyam Benegal	Hindi	1998
47.	Vaanaprastham	Shaji N. Karun	Malayalam	1999
48.	Shantham	Jayaraj	Malayalam	2000
49.	Dweepa	Girish Kasaravalli	Kannada	2001

DADASAHEB PHALKE AWARD WINNERS

SR. NO.	YEAR	AWARDEE
1.	1970	Devika Rani Roerich
2.	1971	B. N. Sircar
3.	1972	Prithviraj Kapoor
4.	1973	Pankaj Mullick
5.	1974	Sulochana (Ruby Myers)
6.	1975	B. N. Reddi
7.	1976	Dhiren Ganguly
8.	1977	Kanan Devi
9.	1978	Nitin Bose
10.	1979	R. C. Boral
11.	1980	Sohrab Modi
12.	1981	P. Jairaj
13.	1982	Naushad Ali
14.	1983	L. V. Prasad
15.	1984	Durga Khote
16.	1985	Satyajit Ray
17.	1986	V. Shantaram
18.	1987	B. Nagi Reddy
19.	1988	Raj Kapoor
20.	1989	Ashok Kumar
21.	1990	Lata Mangeshkar
22.	1991	Akkineni Nageshwara Rao
23.	1992	Balachandra Govind Pendharakar
24.	1993	Dr. Bhupen Hazarika
25.	1994	Majrooh Sultanpuri
26.	1995	Dilip Kumar
27.	1996	Dr. Rajkumar
28.	1997	Shivaji Ganesan
29.	1998	Kavi Pradeep
30.	1999	B. R. Chopra
31.	2000	Asha Bhonsle
32.	2001	Yash Chopra

कथाचित्र पुरस्कार
Awards for Feature Films

सर्वोत्तम कथाचित्र

द्वीप (कन्नड़)

निर्माता: सौन्दर्या को स्वर्ण कमल और रुपये 50,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक: गिरीश कासरावल्ली को स्वर्ण कमल और रुपये 50,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 की सर्वोत्तम फ़ीचर फ़िल्म का पुरस्कार कन्नड़ फ़िल्म द्वीप को दिया गया जिसमें परियोजनाओं के विकास हेतु जन स्थानान्तरण की समस्या को मानवीय चेहरा दिया गया है।

यह फ़िल्म सत्यनिष्ठा, सृजनात्मकता एवं सौन्दर्यता पूर्वक एक ऐसे परिवार की कथा है जो विषय परिस्थितियों में भी अपनी जड़ों से जुड़ा रहता है।

BEST FEATURE FILM

DWEEPA (Kannada)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to the Producer **SOUNDARYA**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to the Director **GIRISH KASARAVALLI**

CITATION

The award for the best feature film of 2001 is given to the Kannada film Dweepa for giving a human face to the topical theme of displacement of people to make way for development projects. The film combines integrity, creativity and aesthetics in its depiction of both the dilemmas and the spirit of a family who defy logic and weather to hold on to their roots.

सौन्दर्या

तेलुगु सिनेमा की जानी -मानी अभिनेत्री सौन्दर्या सभी मुख्य भाषाओं एवं हिन्दी में 85 से भी ज्यादा फ़िल्मों में काम कर चुकी हैं। उन्होंने भारतीय सिनेमा के जाने माने लोगों के साथ भी काम किया है जिसमें अमिताभ बच्चन, कमल हासन, और रजनीकांत शामिल हैं। फ़िल्मों में उनके अच्छे अभिनय के लिए पुरस्कार भी मिले हैं। निर्माता के रूप में द्वीप उनकी पहली फ़िल्म है।

SOUNDARYA

One of the most popular film actresses of Telugu cinema, Soundarya has acted in over 85 films in all the major languages of southern India and Hindi. She has worked with some of the biggest names of Indian cinema, including Amitabh Bachchan, Kamal Hasan and Rajnikanth. She won popular wards for her performances in films like *Ammoru, Raja* and *Anthapuram*. Dweepa is her first film as a producer.

गिरीश कासरावल्ली

कन्नड़ सिनेमा के जाने माने निर्देशकों में से एक गिरीश कासरावल्ली की फ़िल्म का श्रेय भाषा से ज्यादा उनके निर्देशन को जाता है। अपनी पहली फ़िल्म घटाश्राद्ध (1978) से अब तक उन्होंने साहस एवं उद्देश्य के साथ सामाजिक समस्याओं का अपनी फ़िल्मों में संवेदनशील चित्रण किया है।

गिरीश कासरावल्ली पहले तीन बार राष्ट्रीय पुरस्कार घटाश्राद्ध *(1978), ताबरणा कथे (1987)* और *थाई साहेब (1997)* के लिए जीत चुके हैं। अन्य फ़िल्में जैसे *आक्रमण 1980, मूरु दारीगालू (1981), बन्नड वेश (1988), मानै (1989)* और *क्रौर्य (1995)* के लिए भी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। घटाश्राद्ध को पेरिस में सिनेमा शताब्दी अनुष्ठान पर दिखाए जाने का भी गौरव प्राप्त है।

GIRISH KASARAVALLI

One of the most important directors of the Kannada new wave cinema, the appeal of Girish Kasaravalli's films goes much beyond the language they are made in. Right from *Ghatashraddha* (1978), his debut feature, he has made his films with courage and conviction, tackling social issues with sensitivity and insightfulness. Kasaravalli has already won the National Award thrice earlier, for *Ghatashraddha, Tabarana Kathe (1987) and Thai Saheba (1997).* His other films *Akramana* (1980), *Mooru Darigalu* (1981), *Bannada Vesha* (1988), *Mane* (1989) and *Kraurya* (1995) have also won awards nationally and across the world. *Ghatashraddha* also had the honour of being screened in Paris as part of centenary of cinema celebrations.

निर्देशक की प्रथम सर्वोत्तम फ़ीचर फ़िल्म के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार

तिलादानम तेलुगु

निर्माताः राष्ट्रीय फ़िल्म विकास निगम को स्वर्ण कमल और रुपये 25,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशकः के. एन. टी. शास्त्री को स्वर्ण कमल और रुपये 25,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 की निर्देशक की प्रथम सर्वोत्तम फ़िल्म का पुरस्कार तेलुगु फ़िल्म 'तिलादानम' को दिया जाता है जिसमें एक ही परिवार में दो भिन्न विचारधाराओं की संस्थिति को दर्शाया है जिनमें पिता का विश्वास धर्म एवं परम्पराओं के प्रति और बेटे की विचारधारा क्रांतिकारी प्रवृति की है। यह फ़िल्म पीढ़ियों के आन्तरिक विचारों के अन्वेषण का बहुत सुन्दर ढंग से प्रदर्शन करती है।

INDIRA GANDHI AWARD FOR THE BEST FIRST FILM OF A DIRECTOR

TILADAANAM (Telugu)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to the Producer **NFDC**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to the Director **K.N.T. SASTRY**

CITATION

The Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director of 2001 is given to the Telugu film Tiladaanam for its juxtaposition of two diverse ideologies existing within the same family – the father's belief in his religion and traditions and his son's revolutionary ideology. The film strikes a very fine balance in inter-generational explorations.

के. एन. टी. शास्त्री

जाने माने फ़िल्म समीक्षक शास्त्री को तीन बार राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है। *'तिलादानम'* निर्देशक के रूप में उनका पहला साहसिक कदम है। श्री शास्त्री ने सिनेमा पर विस्तृत रूप से लिखा है और वे मुख्य समाचार पत्रों जैसे *हिन्दुस्तान टाइम्स, इंडियन एक्सप्रेस* तथा *डेकन हैराल्ड* से भी संबद्ध रहे हैं। फ़िल्म समीक्षक के रूप में उन्होंने बहुत से पुरस्कार जीते है जिनमें सर्वोत्तम समीक्षक के रूप में 1989 का राष्ट्रीय पुरस्कार भी शामिल है। उन्होंने तेलुगु सिनेमा पर *'अलानटी चलचित्रम'* नामक पुस्तक भी लिखी हैं।

श्री शास्त्री ने विदेशों में होने वाले समारोहों जैसे सोची एवं पुसान में भी निर्णायक मंडल के सदस्य के रूप में भूमिका निभाई है।

K.N.T. SASTRY

Well known film critic and thrice National Award winner, *Tiladaanam* is Sastry's first directorial venture. Sastry has written extensively on cinema and has been associated with major newspapers like *Hindustan Times, Indian Express* and *Deccan Herald*. Film criticism has seen him win many an award, including the National Award for best critic in 1989. He has also written a book on Telugu cinema, *Alanati Chalachitram*. Sastry has also served as jury member on a number of festivals abroad like Sochi and Pusan.

लोकप्रिय एवं स्वस्थ्य मनोरंजन करने वाली सर्वोत्तम फ़ीचर फ़िल्म का पुरस्कार

लगान (हिन्दी)

निर्माताः आमिर खान को स्वर्ण कमल और रुपये 40,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशकः आशुतोष गोवारीकर को स्वर्ण कमल और रुपये 40,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन करने वाली सर्वोत्तम फ़ीचर फ़िल्म का पुरस्कार हिन्दी फ़िल्म '*लगान*' को दिया गया है जिसमें क्रिकेट के खेल के माध्यम से औपनिवेशिक शोषण पर राष्ट्रवाद और मानवीय विचारों की विजय का कलात्मक चित्रण किया गया है।

BEST POPULAR FILM PROVIDING WHOLESOME ENTERTAINMENT

LAGAAN (Hindi)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 40,000/- to the Producer **AAMIR KHAN**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 40,000/- to the Director **ASHUTOSH GOWARIKER**

CITATION

The award for the Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment of 2001 is given to the Hindi film Lagaan showing the victory of the human spirit in the face of oppression and for the creative use of a cricket game as a metaphor for both colonisation and nationalism.

आमिर खान

भारतीय सिनेमा के जाने माने एवं उत्कृट कलाकार आमिर खान ने अपनी पहली फ़िल्म कयामत से कयामत तक के माध्यम से भारतीयों के दिलों में जगह बनाई। अपने को ग्राहय बॉलीवुड स्टार स्थापित करने के बाद उन्होंने फ़िल्मों की संख्या को बढ़ावा न देते हुए फ़िल्मों में काम की गुणवत्ता पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया। उनके किरदारों की समीक्षा करने पर देखा गया कि वे पिछले वर्ष उच्च शिखर पर थे जब उन्होंने अपनी पहली फ़िल्म का निर्माण किया। उनका नाम तब और लोकप्रिय हुआ जब उनकी फ़िल्म सर्वोत्तम विदेशी भाषा के अकादमी पुरस्कार के लिए अंतिम पांच फ़िल्मों की चयन तालिका में नामित की गई। यह ऐसा दूसरा अवसर था जब एक भारतीय फ़िल्म इसके लिए नामित की गई।

आशुतोष गोवारीकर

एक कहावत है तीसरी बार सौभाग्यशाली जो कि निर्देशक आशुतोष गोवारीकर के बारे में सही सिद्ध हुई है। अपनी पहली दो असफल फ़िल्मों *पहला नशा (1993)* और *बाजी (1995)* का निर्देशक के रूप में जोखिम उठाने के उपरान्त अभिनेता से निर्देशक बने गोवारीकर कहते हैं कि फ़िल्म *लगान* को मिली प्रसिद्धि उनकी आशाओं से कहीं अधिक है। गोवारीकर ने इस फ़िल्म की कहानी को नया मोड देने के लिए लगभग पांच वर्ष कार्य किया।

AAMIR KHAN

One of the best known figures of Indian cinema and one of the most widely admired, Aamir Khan entered India's hearts through his first popular film, *Qayamat Se Qayamat Tak*. After establishing himself as a bankable Bollywood star, Khan consistently chose to focus on quality, even cutting down on the number of assignments. Critically acclaimed for many of his roles, the last year saw him reach new heights when the first film he produced, *Lagaan*, was not just acclaimed for its quality but also for the way production was handled. The topping on the cake came when it was nominated for the Best Foreign Language Film at the Academy Awards and made it to the shortlist of five films, only the second time an Indian film had done so.

ASHUTOSH GOWARIKER

Third time lucky is an adage that has proved to be amply true in the case of director Ashutosh Gowariker. After the commercial failure of his first two directorial ventures, *Pehla Nasha* (1993) and *Baazi* (1995), this actor-turned-director says the popularity of *Lagaan* has belied all his expectations. Gowariker worked for about five years on the script of this film, making umpteen changes along the way. To find a producer who would stick to his vision of this period piece within the commercial framework of Indian cinema was not easy, but Gowariker was successful in persuading star actor Aamir Khan to act and also produce the film.

राष्ट्रीय एकता के लिए सर्वोत्तम फ़ीचर फ़िल्म को नर्गिस दत्त पुरस्कार

बब (कशमीरी)

निर्माताः राष्ट्रीय फ़िल्म विकास निगम को रजत कमल और रुपये 30,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशकः ज्योति सरूप को रजत कमल और रुपये 30,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का राष्ट्रीय एकता पर आधारित सर्वोत्तम फ़िल्म का पुरस्कार कश्मीरी फ़िल्म 'बब' को दिया गया है। इस फ़िल्म में सीमापार से सेना की आतंकवादी गतिविधियों का सामना करने में होने वाली समस्याओं का चित्रण किया है। इस विशाल परिदृश्य में यह फ़िल्म छोटे-छोटे अंतरंगों, छोटी-छोटी कहानियों जैसे संवेदनशील सरकारी अफसर एवं एक अनाथ बच्चे के जुड़ाव की कहानी है।

NARGIS DUTT AWARD FOR BEST FEATURE FILM ON NATIONAL INTEGRATION

BUB (Kashmiri)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer **NFDC**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Director **JYOTI SARUP**

CITATION

The Nargis Dutt Award for the Best Feature Film on National Integration of 2001 is given to the Kashmiri film Bub. The film explores the problems of a minority in the face of terrorist activities of forces across the border. Against this macro scenario, the film weaves together more intimate micro stories particularly of the bonding between a sensitive bureaucrat and an orphaned boy.

ज्योति सरूप

लेखक निर्देशक ज्योति स्वरूप भारत में सर्वप्रथम एवं निजी समस्याओं पर आधारित सर्वाधिक लोकप्रिय धारावाहिक *'बुनियाद'* से प्रसिद्ध हुए। सरूप कई वर्षों से फ़िल्मों एवं टेलीविजन से संबद्ध है। उन्होंने सहायक निर्देशक के रूप में रामानन्द सागर और शक्ति सामंत जैसे निर्देशकों के साथ काम किया। उन्होंने टेलीविजन धारावाहिकों जैसे गुलदस्ता, दरवाजे, परवरिश, रानी केतकी की कहानी और इंस्पेक्टर नवीन मोहन में भी काम किया।

उन्होंने एडस पर बनी फ़ीचर फ़िल्म *नया जहर* और जयपुर फुट अस्पताल पर लघु फ़िल्म *'आधे-अधूरे से परे'* का भी निर्देशन किया। उन्होंने बहुत सी किताबें भी लिखी हैं जिनमें *लर्न बैटर कुंग फ़ू, एक्सर्ट लव* और *फाइन आर्ट ऑफ एक्टिंग* भी शामिल है।

JYOTI SARUP

Writer-director Jyoti Sarup became a household name with *Buniyaad*, one of India's first and most popular soap operas. Sarup has been associated with films and television for many years, starting as an assistant director to directors like Ramanand Sagar and Shakti Samanta. His work in television has also included serials like *Guldasta, Darwaze, Parvarish, Rani Ketki Ki Kahani* and *Inspector Navin Mohan*. He also directed *Naya Zaher*, a feature film on AIDS and a short film, *Aadhe Adhure Se Pure* on the Jaipur Foot Hospital. He has also written various books including *Learn Better Kung Fu, Expert Love* and *the Fine Art of Acting*.

अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़ीचर फ़िल्म

चांदनी बार (हिन्दी)

निर्माताः लता मोहन अय्यर को रजत कमल और रुपये 30,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशकः मधुर भंडारकर को रजत कमल और रुपये 30,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का अन्य सामाजिक मुद्दों जैसे निषेध, स्त्री एवं बाल कल्याण, दहेज विरोधी, नशा विरोधी एवं विकलांग कल्याण इत्यादि पर सर्वोत्तम फ़ीचर फ़िल्म का पुरस्कार हिन्दी फ़िल्म 'चांदनी बार' को दिया गया है जिसमें एक बेसहारा स्त्री की समस्याओं का वास्तविक चित्रण किया है जिसे मुंबई लाया जाता है और बीयर बार में काम करने के लिए बाधित किया जाता है। इस फ़िल्म में उन निर्दोष लड़कियों की व्यथा का मार्मिक चित्रण है जो माफियाओं के चंगुल में फंसी हैं।

BEST FILM ON OTHER SOCIAL ISSUES SUCH AS PROHIBITION, WOMEN AND CHILD WELFARE, ANTI-DOWRY, DRUG ABUSE, WELFARE OF THE HANDICAPPED ETC

CHANDNI BAR (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer **LATA MOHAN IYER**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Director **MADHUR BHANDARKAR**

CITATION

The award for the Best Film On Other Social Issues Such As Prohibition, Women and Child Welfare, Anti-Dowry, Drug Abuse, Welfare of the Handicapped etc. of 2001 is given to the Hindi film Chandni Bar for its realistic portrayal of the problems of an uprooted woman who is brought to Mumbai and forced to work in a beer bar. The film is a poignant and sensitive depiction of innocent girls trapped in the vicious cycle of survival in the underworld.

लता मोहन अय्यर

लता मोहन अय्यर, शोगन ग्रुप ऑफ कम्पनीज जो कि श्लोक फिल्म्स से संबंधित है, की प्रबंधन समिति की सदस्या हैं। वह फ़िल्मों के निर्माण एवं वितरण से भी संबद्ध हैं।

LATA MOHAN IYER

Lata Mohan Iyer is part of the management at Shogun Group of Companies, of which Shlok Films is a sister concern. She has been associated with production and distribution of films.

मधुर भंडारकर

अपनी वर्तमान फ़िल्म *चांदनी बार* से पहचाने जाने वाले मधुर भंडाकर ने राय गोपाल वर्मा के साथ सहनिर्देशक के रूप में *शिवा*, *रात*, *रंगीला*, *द्रोही* आदि फ़िल्मों से कार्य प्रारंभ किया। *त्रिशक्ति* उन की पहली तथा *चांदनी बार* उन की दूसरी फ़िल्म है।

MADHUR BHANDARKAR

Best known for his latest film, *Chandni Bar*, Madhur Bhandarkar started his career with Ram Gopal Verma as associate director for the films *Shiva*, *Raat*, *Drohi* and *Rangeela*. He then branched out on his own with *Trishakti*. *Chandni Bar* was his second film.

सर्वोत्तम निर्देशन

उरुकु नूरूपेर (तमिल)

निर्देशकः बी. लेनिन को स्वर्ण कमल और रुपये 50,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम निर्देशन का पुरस्कार बी. लेनिन को उनकी तमिल फ़िल्म उरुकु नुरुपेर के लिए दिया गया है। इस फ़िल्म में निर्देशक एक क्रांतिकारी की कहानी बताता है जिसमें कि वह अपनी लक्ष्य-सिद्धि के लिए हत्याएं करता है तथा उसे इस अपराध के लिए मृत्युदंड दिया जाता है। फ़िल्म मृत्युदंड के प्रश्न को उठाती है।

BEST DIRECTION

B. LENIN

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to the Director **B. LENIN**

CITATION

The award for the Best direction of 2001 is given to B. Lenin for his Tamil film Ooruku Nooruper. The film director tells the eventful story of a revolutionary who has killed for his cause and awarded the death sentence for his crime. It further looks at the issue of capital punishment.

बी. लेनिन

अनुभवी फ़िल्म निर्माता ए. भीमसिंह के पुत्र लेनिन ने अपने कैरियर की शुरुआत सन 1966 में अपने पिता की फ़िल्म में एक सह-निर्देशक एवं नैगेटिव कटर की हैसियत से की। तब से अब तक उन्होंने बहुत सी फ़ीचर एवं गैर फ़ीचर फ़िल्मों का सम्पादन किया है। लेनिन ने पांच फ़ीचर फ़िल्मों, चार लघु फ़िल्मों, दो लघु विडियोज एवं बहुत से टेलीविजन धारावाहिकों का निर्देशन भी किया है। लेनिन पहले भी अपनी लघु फ़िल्म '*नॉकआउट*' जो कि भारतीय पैनोरमा वर्ग 1993 में दिखाई गई थी, के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार ग्रहण कर चुके हैं।

B. LENIN

Son of veteran filmmaker A. Bhimsingh, Lenin started his career in 1966 as an associate director and negative cutter for his father's films. He has edited many feature and non-feature films since then. Lenin has also directed five feature films, four short films, two short videos and several television serials. He has already the National Award for his acclaimed short film, *Knockout*, screened as part of the Indian Panorama in 1993.

सर्वोत्तम अभिनेता

मुरली

अभिनेता मुरली को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम अभिनेता का पुरस्कार मुरली को मलयालम फ़िल्म नेतुकरन (द वीवर) में उनके मेस्ट्री नामक किरदार के सुंदर चित्रण के लिए दिया गया जो बदलते सामाजिक मानदण्डों के जाल में फंसा एक वचनवद्ध कार्यकर्ता है।

BEST ACTOR

MURALI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Actor **MURALI**

CITATION

The award for the Best Actor of 2001 is given to Murali for his role in the Malayalam film Neythukaran (The Weaver) for his brilliant portrayal of a character called Mestri, a committed political worker, caught in a web of shifting values-political and social.

मुरली

केरल के जाने माने अभिनेता मुरली सिनेमा के क्षेत्र में बहुत से पुरस्कारों से पुरस्कृत किए गए हैं। मुरली ने अभिनय की शुरूआत बचपन में ही रंगमंच से की। उन की भरत गोपी द्वारा निर्देशित फ़िल्म '*जत्तादी*' से शुरूआत करने वाले मुरली 170 फ़िल्मों में काम कर चुके हैं। उन्हें अभिनय के लिये पांच बार केरल राज्य सरकार फ़िल्म पुरस्कार मिल चुका है।

MURALI

One of Kerala's foremost actors, Murali has been numerously awarded for his cinematic portrayals. Murali displayed an inclination towards acting from an early age and was first drawn towards theatre. His first film was *Njattadi*, directed by Bharat Gopi and he has since acted in more than 170 films. He has bagged five Kerala State Government Film awards for acting.

सर्वोत्तम अभिनेत्री

तबु एवं शोभना

तबु को रजत कमल और रुपये 5,000/- का नकद पुरस्कार

शोभना को रजत कमल और रुपये 5,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम अभिनेत्री का पुरस्कार हिन्दी फ़िल्म '*चाँदनी बार*' की अभिनेत्री तबु और अंग्रेजी फ़िल्म मित्र -माई फ्रैंड की अभिनेत्री शोभना को संयुक्त रूप से प्रदान किया गया। तबु को यह पुरस्कार सांप्रदायिक हिंसा की शिकार हुई बेसहारा स्त्री के जुझारूपन का वास्तविक एवं संवेदनशील चित्रण के लिए दिया गया है। शोभना को यह पुरस्कार, सामाजिक मूल्यों में फंसी एक अकेली मां और गृहणी की मनोदशा का सजीव चित्रण करने के लिये दिया गया।

BEST ACTRESS

TABU and SHOBHANA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000/- each to the Actresses **TABU and SHOBHANA**

CITATION

The award for the Best Actress of 2001 is shared by Tabu in Chandni Bar in Hindi and Shobhana in Mitr – My Friend in English. While Tabu is given the award for her down to earth and sensitive depiction of a never say die woman, uprooted by the scars of communal violence, Shobhana gets the award for her lifelike performance of a lonely mother and housewife torn between the social values of diverse societies which reflects the mood of the film.

तबु

उत्कृट अभिनय के सामाजिक मूल्यों में फंसी एक अकेली मां और गृहणी की मनोदशा का सजीव चित्रण करने के लिये दिया गया। जब भी निर्देशकों के समक्ष कोई चुनौतीपूर्ण किरदार निभाने की परिस्थिति आई तब उन्होंने सिर्फ तबु को ही उपयुक्त समझा। फ़िल्म *'प्रेम'* से उन्होंने नियमित बॉलीवुड अभिनेत्री के रूप में अपने फ़िल्मी जीवन की शुरूआत की और उन्हें फ़िल्म *'विजयपथ'* के गाने रुक-रुक गर्ल के माध्यम से दर्शकों ने सराहा। लेकिन समीक्षकों ने फ़िल्म *'माचिस'* के लिए उन्हें सराहा जिसमें उन्होंने दर्शकों पर अपनी छाप छोडी। इस परम्परा को आगे बढाते हुए उन्होंने *सजा-ए-कालापानी, हू तू तू, दरमियाँ, तक्षक, अस्तित्व* एवं *चाँदनी* बार में भी चुनौतीपूर्ण किरदार निभाए।

TABU

Setting constantly higher standards of excellence in acting, Tabu is perhaps the name most directors think of whenever they have a challenging role. Starting out as a regular Bollywood actress in *Prem*, she was accepted as the ruk ruk girl in *Vijaypath*. But critical acclaim was to follow in films like *Maachis*, which made the audience take notice of her potential. She followed it up with notable roles in *Sazaa-e-Kaalapaani*, *Hu Tu Tu*, *Darmiyaan*, *Takshak*, *Astitva* and *Chandni Bar* among others. She has also acted in more mainstream productions like *Border, Biwi No 1, Hum Saath Saath Hain* and *Virasat*.

शोभना

अभिनय की विभिन्न विधाओं के लिये जानी जाने वाली अभिनेत्री शोभना का ये दूसरा राष्ट्रीय पुरस्कार है। उन्हें पहला राष्ट्रीय पुरस्कार मलयालम फ़िल्म *'मणिचित्रात्तु'* के लिये मिला। तमिल फ़िल्म *मंगलनायकी* से बचपन में अभिनय की शुरूआत करने वाली शोभना फ़िल्म जगत में पच्चीस वर्ष पूरे कर चुकी हैं। शोभना स्वयं एक नृत्यांगना हैं और अपनी नृत्य अकादमी 'कलादरपनम्' चलाती हैं।

SHOBHANA

An actress known for her nuanced performances, this is Shobhana's second National Award for acting. She won her first National Award for the Malayalam film *Manichitrathazu* for essaying the role of a woman with a split personality. Shobhana has been part of films for nearly two-and-a-half-decades, starting out as a child actress in the Tamil film *Mangalnayaki*. A trained dancer, she has set up a dance academy, Kaladarpanam, in Chennai and travels extensively for performances.

सर्वोत्तम सह-अभिनेता

अतुल कुलकर्णी

अतुल कुलकर्णी को रजत कमल और रुपये10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम सह-अभिनेता अतुल कुलकर्णी को फिल्म 'चांदनी बार' में सामाजिक मूल्य विहीन संसार में रह रहे एक निर्दयी व्यक्ति के सटीक चित्रण के लिये दिया गया है।

BEST SUPPORTING ACTOR

ATUL KULKARNI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Supporting Actor **ATUL KULKARNI**

CITATION

The award for the Best Supporting Actor of 2001 is given to Atul Kulkarni in the Hindi film Chandni Bar for depicting a ruthless character, trapped in a world without social values.

अतुल कुलकर्णी

रंगमंच पर एक कलाकार के रूप में अभिनय की शुरूआत करने वाले अतुल कुलकर्णी ने अपने आपको कुछ ही समय में बॉलीवुड में स्थापित कर लिया है। अपने अभिनय के लिये अतुल अनेक पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। इसी श्रेणी में ये उन का दूसरा राष्ट्रीय पुरस्कार है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से दीक्षा प्राप्त अतुल ने अपना कैरियर *'हे राम'* (2000) से शुरू किया। कुलकर्णी के नाटकों जैसे *'गांधी विरूद्ध गांधी'* आदि में भी काम किया है। पांच भाषाओं में फ़िल्मों में काम कर चुके अतुल की कुछ फ़िल्में हैं - *कल का आदमी, कैदी और भूमिगीता।*

ATUL KULKARNI

Starting out as a theatre actor in Solapur, Atul Kulkarni in a few short years carved a niche for himself in Bollywood. His finely nuanced performances have seen him seen him accolades and awards fairly regularly. This is the second National Award for Atul Kulkarni, the first coming in the same category too. A graduate of the National School of Drama, his earlier award was for *Hey Ram* (2000). Kulkarni has also acted in the play *Gandhi Viruddh Gandhi*. His filmography includes films like *Kairee, Kal ka Aadmi* and *Bhumi Gita*. He has already acted in films in five languages.

सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री

अनन्या खरे

सह-अभिनेत्री अनन्या खरे को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री का पुरस्कार अनन्या खरे को हिन्दी फ़िल्म '*चाँदनी बार*' में की गई भूमिका के लिए दिया है जिसमें उन्होंने एक जटिल किरदार को मानवीय एवं वास्तविक अभिनय से दर्शाया है।

BEST SUPPORTING ACTRESS

ANANYA KHARE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Supporting Actress **ANANYA KHARE**

CITATION

The award for the best supporting actress of 2001 goes to Ananya Khare for her humane and realistic performance of a complex character in the Hindi film Chandni Bar.

अनन्या खरे

काफी समय से दूरदर्शन की जानी मानी कलाकार अनन्या खरे वर्तमान में दो फ़िल्मों '*चाँदनी बार*' तथा '*देवदास*' दोनों ही फ़िल्मों में उनकी प्रशंसा की गई। उन्होंने पहला शॉट राष्ट्रीय स्तर पर टेलीविजन धारावाहिक '*निर्मला*' में अपने किरदार के रूप में किया, जिससे आगे उन्होंने *मैला आँचल, उजाले की ओर, जमीन आसमान, कक्काजी कहिन, एक दो तीन* तथा अन्य बहुत से धारावाहिकों में प्रशंसनीय अभिनय किया। अनन्य ने नियमित रूप से रंगमंच पर भी नाटक किए है जिनमें *ताम्रपात्र, बहू, पाप और प्रकाश* तथा *बगिया बंछाराम की,* आदि शामिल है। उनकी प्रतिभा को अनेक अवसरों पर बहुत से पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

ANANYA KHARE

A well-known television actress of long standing, Ananya Khare has been seen and appreciated in two recent films, *Chandni Bar* and *Devdas*. She first shot into national limelight with her role in the television series *Nirmala*, which was followed by acclaimed roles in *Maila Anchal, Ujale Ki Oar, Zameen Aasman, Kakkaji Kahain, Ek Do Teen* and many other serials. Khare has also regularly performed on stage with plays including *Tamra Patra, Bahu, Paap Aur Prakash* and *Bagiya Banchharam Ki*. Her talent has been recognised with many awards coming her way.

सर्वोत्तम बाल कलाकार

बेबी पी. श्वेता

बाल कलाकारः बेबी पी. श्वेता को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम बाल कलाकार का पुरस्कार बेबी पी. श्वेता को तमिल फ़िल्म कुट्टी में उनके सटीक अभिनय के लिए दिया है। जिस में उन्होंने सामाजिक असामनताओं एवं मानवीय शोषण का शिकार एक छोटी लड़की की भूमिका न्यायपूर्वक निभाई है।

BEST CHILD ARTISTE

BABY P. SHWETHA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Child Artiste **P. SHWETHA**

CITATION

The award for the best child artiste of 2001 given to P. Shwetha for her subdued portrayal of Kutty, a young girl made to suffer the agonies of social disparity and human exploitation in the Tamil film Kutty.

पी. श्वेता

एक अनोखी प्रतिभा पी. श्वेता जिसे फ़िल्म '*मल्ली*' में अभिनय के लिए पहले ही राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है। वह चेन्नई में कक्षा 8 की छात्रा हैं। श्वेता ने अपना फ़िल्मी कैरियर बहुत जल्दी शुरू कर दिया था। श्वेता का परिचय फ़िल्म '*भारती राजा*' के साथ हुआ। श्वेता एक-एक हिन्दी तथा मलयालम फ़िल्मों के साथ-साथ बारह तमिल फ़िल्मों मे भी काम कर चुकी हैं। *मल्ली* में उनके अभिनय के लिए उन्हें अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले। वह दूरदर्शन धारावाहिक '*इलाकिया*' और '*डाक्टर्स*' में भी अभिनय कर चुकी हैं।

P. SHWETHA

A prodigious talent, P. Shwetha has already earlier bagged the National Award for acting in *Malli*. A student of class eight in Chennai, Shwetha began her career in films fairly early in life. Introduced by Bharatiraja, she has acted in twelve Tamil films besides a film each in Hindi and Malayalam. Her performance in *Malli* was widely appreciated and many national and international awards came her way. She has also acted in television serials like *Ilakkiya and Doctors.*

सर्वोत्तम पार्श्व गायक

उदित नारायण

पार्श्व गायकः उदित नारायण को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम पार्श्व गायक का पुरस्कार उदित नारायण को हिन्दी फ़िल्म 'लगान' के लिए गीत 'मितवा' और हिन्दी फ़िल्म 'दिल चाहता है' के गीत 'जाने क्यों लोग प्यार करते हैं' के लिए दिया गया।

BEST MALE PLAYBACK SINGER

UDIT NARAYAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Male Playback Singer **UDIT NARAYAN**

CITATION

The award for the Best Male Playback Singer of 2001 is given to Udit Narayan for the song *Mitwa* in the Hindi film Lagaan and *Jaane kyon log pyaar karte hain* in the Hindi film Dil Chahta Hai.

उदित नारायण

वे आमिर खान की आवाज में गाने के लिए जाने जाते हैं। नेपाल में जन्में उदित नारायण ने 1988 की फ़िल्म *कयामत से कयामत तक* से शुरू में ही मिली पहली बडी सफलता के बाद से ही भारतीय संगीत से अपना नाता जोड लिया था। प्रशिक्षित संगीतज्ञ नारायण ने लगभग 15 भाषाओं में पहले भी हजारों गाने गाए हैं। बॉलीवुड में आने से पहले वे रेडियो नेपाल पर भी गाते थे। नारायण दो नेपाली फ़िल्मों में अभिनय के साथ-साथ लगभग 750 स्टेज शो पहले ही कर चुके हैं और अपनी संगीत एलबम भी जारी कर चुके हैं।

UDIT NARAYAN

Perhaps best known as the singing voice of Aamir Khan, Nepal-born Udit Narayan has been a fixture on the Indian music scene right from his first major success, *Qayamat Se Qayamat Tak* in 1988. A trained musician, Narayan has already sung thousands of songs in about 15 languages. Before entering Bollywood, he also sang on Radio Nepal. Prolific outside films too, he has already done about 750 stage shows and has released his music albums besides acting in two Nepali films.

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका

साधना सरगम

पार्श्व गायिका: साधना सरगम को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम पार्श्व गायिका का पुरस्कार साधना सरगम को तमिल फ़िल्म 'उदयागीताविन' अजाही के गीत पाटू चोली में उत्कृष्ट गायन और प्रदर्शन करने के लिए दिया गया।

BEST FEMALE PLAYBACK SINGER

SADHANA SARGAM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to best Female Playback Singer **SADHANA SARGAM**

CITATION

The award for the Best Female Playback Singer of 2001 is given to Sadhana Sargam for her lilting and touching rendering of the song *Paatu cholli* in the Tamil film Udayageethavin 'Azhahi'.

साधना सरगम

एक गायिका की पुत्री साधना सरगम ने बहुत छोटी उम्र से ही गाना शुरू कर दिया था। अपनी माता के संरक्षण के बाद उनका प्रशिक्षण पंडित जसराज के अधीन हुआ। उन्हें फ़िल्मों में गाने का पहला मौका संगीतकार कल्याण जी आनन्द जी ने दिया। उन्होंने बहुत से जाने माने संगीतकारों के साथ भी गाया जिनमें नौशाद, लक्ष्मीकान्त प्यारेलाल, राजेश रोशन, अनु मलिक, जतिन ललित, आर. डी. बर्मन, रविन्द्र जैन एवं ए. आर. रहमान शामिल है। उन्होंने बहुत सी भारतीय भाषाओं में गाया है और स्टेज शो भी किए हैं।

SADHANA SARGAM

A singer daughter, Sadhana Sargam started singing very early in life. After her mother's tutelage, she trained under Pandit Jasraj. She was first given an opportunity to sing in films by the music composer duo, Kalyanji Anandji. She went to sing for many other leading music composers including Naushad, Laxmikant Pyarelal, Rajesh Roshan, Anu Malik, Jatin Lalit, R. D. Burman, Ravindra Jain and right up to A. R. Rahman. She has sung in many Indian languages and done a number of stage shows.

सर्वोत्तम छायांकन

एच. एम. रामाचन्द्र हलकेरे

कैमरामैनः एच. एम. रामाचन्द्र हलकेरे को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रसाद फ़िल्म लैबोरेटरी, बंगलोर को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम छायांकन का पुरस्कार एच. एम. रामाचन्द्र हलकेरे को कन्नड़ फ़िल्म द्वीप में किए गए उत्कृष्ट छायांकन के लिए दिया गया है जो कि कृषिक वातावरण को रूपक अलंकारों के माध्यम से प्रबल रूप को कैमरे में कैद करता है। वे परिस्थितिनुसार, सामाजिक चित्रण एवं किरदारों के अभिनय का छायांकन पूर्ण दक्षता के साथ करने के लिए जाने जाते हैं।

BEST CINEMATOGRAPHY

H.M. RAMACHANDRA HALKERE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to **H.M. RAMACHANDRA HALKERE**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Laboratory Processing the film PRASAD LAB, BANGALORE

CITATION

The award for the Best Cinematography of 2001 is given to H. M. Ramachandra for the Kannada film Dweepa for his excellent camerawork that captures the agrarian milieu with strong visual metaphors. His work stands out for its deft handling of the situation, social vignettes and characters.

एच.एम. रामाचन्द्र हलकेरे

छायाकार एच.एम. रामाचन्द्र हलकेरे, सागर, कर्नाटक के रहने वाले हैं। मैसूर विश्वविघालय से पत्रकारिता एवं जनसंचार में मास्टर डिग्री लेने के उपरान्त उन्होंने फ़िल्म एवं टेलीविजन संस्थान पुणे से मोशन पिक्चर फोटोग्राफी में डिप्लोमा किया। उन्हें '*थाई साहेब*' और '*द्वीप*' फ़िल्मों के लिए कर्नाटक राज्य के सर्वोत्तम छायाकार को पुरस्कार सहित बहुत से पुरस्कार मिले हैं। उन्हें 1995 में एफ.टी.टी.आई. से उत्कृष्ट विघार्थी होने के नाते दादासाहेब फाल्के मैमोरियल पुरस्कार भी मिल चुका है।

H. M. RAMACHANDRA HALKERE

Cinematographer H. M. Ramachandra Halkere hails from Sagar, Karnataka. After a Masters degree in Journalism and Mass Communications from Mysore University, he completed his Diploma in Motion Picture Photography from the Film and Television Institute of India, Pune. He has won various awards including the Karnataka State Best Cinematographer award for *Thai Saheba* and *Dweepa* and the Dadasasheb Phalke Memorial Prize for Outstanding Student, FTII in 1995.

सर्वोत्तम पटकथा

नीलकंठ

पटकथा लेखकः नीलकंठ को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम पटकथा लेखन का पुरस्कार नीलकांता को तेलुगु फ़िल्म 'शो' को दो किरदारों की भावुकता एवं संघर्ष का वास्तविक - अवास्तविक नाटकीय परिस्थियों के अनुसार चित्रण करने के लिये दिया गया है।

BEST SCREENPLAY

NEELAKANTA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Screenplay Writer **NEELAKANTA**

CITATION

The award for the Best Screenplay of 2001 is given to Neelakanta for the Telugu film Show which seems to probe a real – unreal dramatic situation involving two characters full of emotion and conflicts, with a rare touch of artistic sensitivity.

नीलकंठ

तेलुगु की *जमदग्नि* फ़िल्म के निर्माता के रूप में आए नीलकंठ जिनका पूरा नाम जी. नीलकंठ रेड्डी है, फ़िल्म उद्योग में दर्ज हुए। उन्होंने अभी तमिल फ़िल्म *प्रियंका* का निर्माण एवं निर्देशन भी किया है जिसके लिए उन्होंने तथा जानी मानी अभिनेत्री रेवती ने पुरस्कार जीते।

NEELAKANTA

Neelakanta, or to give his full name, G. Neelakanta Reddy entered the film industry as a producer with *Jamadagni* in Telugu. He has since also produced and directed *Priyanka* in Tamil, which won him and the lead actress Revathy awards.

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन

एच. श्रीधर एवं नकुल कामटे

अंतिम मिश्रित ट्रैक के पुनः ध्वनि आलेखक एच. श्रीधर को रजत कमल और रुपये 5000/- का नकद पुरस्कार

अंतिम मिश्रित ट्रैक के पुनः ध्वनि आलेखक नकुल कामटे को रजत कमल और रुपये 5000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का पुरस्कार एच. श्रीधर एवं नकुल कामटे को हिन्दी फ़िल्म लगान के लिए दिया गया। दोनों ने बहुत ही दक्षतापूर्वक एवं कल्पना से परे फ़िल्म के स्पष्ट प्रभाव के लिए ध्वनि की रिकार्डिंग की। इन के द्वारा की गई रिकार्डिंग ने कलात्मक ध्वनि प्रभावों से फ़िल्म के दृश्यों को बल प्रदान किया।

BEST AUDIOGRAPHY

H. SRIDHAR and NAKUL KAMTE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000/- each to Re-recordist of the final mixed track **H. SRIDHAR and NAKUL KAMTE**

CITATION

The award for the Best Audiography of 2001 is given to H. Sridhar and Nakul Kamte for the Hindi film Lagaan. The sound effects recorded both efficiently and imaginatively heighten the visual impact of the film

एच. श्रीधर

गणित स्नातक होने के साथ इलैक्ट्रॉनिक्स में रुचि रखने वाले एवं संगीत में औपचारिक रूप से प्रशिक्षित एच. श्रीधर ने 1988 में संगीत अभियन्ता के रूप में अपना कैरियर शुरू किया। वे अभी तक 200 से ज्यादा फ़िल्मों का ध्वनि आलेखन कर चुके हैं और भारतीय सिनेमा के जाने माने लोगों जैसे मणिरत्नम, सुभाष घई, के बालाचन्दर, ए. आर. रहमान एवं बहुत से अन्य फ़िल्मकारों के साथ काम कर चुके हैं। उन्होंने रंगीला जैसी महत्वपूर्ण फ़िल्मों में काम किया जो कि भारत में फ़िल्मों के पश्च-निर्माण के लिए पहली डॉल्बी स्टीरियो फ़िल्म थी। उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय संगीतकारों जैसे जार्ज हैरीसन एवं रविशंकर के लिए भी एलबम्स का निर्माण एवं मिश्रण किया। साथ ही वे अभी *बोम्बे ड्रीम्स* के लिए एन्ड्रयू लॉयड वेबर के साथ काम कर चुके हैं।

H. SRIDHAR

A mathematics graduate with a keen interest in electronics and formally trained in music, H. Sridhar started out as a sound engineer in 1988. He has since engineered over 200 films and worked with some of the biggest names of Indian cinema like Shyam Benegal, Mani Ratnam, Subhash Ghai, K. Balachandar, A.R. Rahman and many others. He worked on landmark films like *Rangeela*, which was the first Dolby stereo film to have post-production in India. He has also engineered and mixed albums for international music stars like George Harrison and Ravi Shankar, besides recently working with Andrew Lloyd Webber on *Bombay Dreams*.

नकुल कामटे

लॉस एंजेल्स में स्थित साउन्ड मास्टर ऑडियो विडियो रिकार्डिंग इंजीनियरिंग स्कूल से ध्वनि अभियांत्रिकी में डिप्लोमा प्राप्त नकुल काम्टे ने रेडियो एवं टेलीविजन के लिए लगभग 3000 से ज्यादा विज्ञापनों की रिकार्डिंग एवं मिश्रण किया है। उन्होंने विभिन्न प्रकार के संगीत समूहों जिनमें रॉक मशीन भी शामिल है के लिए एलबम्स का निर्माण किया है। वे लगान से पहले फ़िल्म '*दस*' तथा '*भोपाल एक्सप्रेस*' में काम कर चुके हैं।

NAKUL KAMTE

A diploma holder in audio engineering from the Soundmaster Audio Video Recording Enginer Schools in Los Angeles, Nakul Kamte has recorded and mixed over 3,000 commercials for radio and television. He has engineered albums for various music groups including Rock Machine. He has worked in films like *Dus* and *Bhopal Express* before *Lagaan*.

सर्वोत्तम सम्पादन

बीना पॉल

सम्पादक बीना पॉल को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम सम्पादन का पुरस्कार बीना पॉल को अंग्रेजी फ़िल्म 'मित्र माई-फ्रैंड' के लिए दिया गया है। उनके सुस्पष्ट एवं अच्छे संपादन के कारण उनको ये पुरस्कार दिया गया है। फ़िल्म के दृश्यों में उन का कल्पनात्मक संपादन झलकता है।

BEST EDITING

BINA PAUL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Editor **BINA PAUL**

CITATION

The award for the Best Editing of 2001 is given to Bina Paul in the English film Mitr - My Friend. Her crisp and taut cutting makes her bag this award. The excellence is on view in frames offering imaginative touch.

बीना पॉल

फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे से प्रशिक्षित बीना पॉल भारत के बहुत से जाने माने निर्देशकों के साथ काम कर चुकी हैं वे 40 वृत्तचित्रों और फ़ीचर फ़िल्मों का सम्पादन कर चुकी हैं। उन्हें सम्पादन के लिए बहुत से पुरस्कार मिल चुके हैं। वे चार वृत्तचित्रों का निर्देशन भी कर चुकी हैं। वे वर्तमान में केरल अन्तर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में उप-निदेशक के पद पर कार्यरत हैं।

BINA PAUL

A film editor trained at the Film and Television Institute, Pune, Bina Paul has worked with many of India's major directors. She has edited 40 documentaries and feature films and won numerous awards for editing. She has also directed four documentary films. She currently is the Deputy Director of the International Film Festival of Kerala.

सर्वोत्तम कला निर्देशन

नितिन चन्द्राकांत देसाई

कला निर्देशकः नितिन चन्द्रकांत देसाई को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम कला निर्देशन का पुरस्कार नितिन चन्द्रकांत देसाई को हिन्दी फ़िल्म 'लगान' के लिए दिया गया। इस कला-निर्देशक ने स्वतंत्रता से पहले के गाँवों का प्रामाणिक विवरणों के साथ सौन्दर्यपरक चित्रण किया है।

BEST ART DIRECTION

NITIN CHANDRAKANT DESAI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Art Director **NITIN CHANDRAKANT DESAI**

CITATION

The award for the Best Art Direction of 2001 is given to Nitin Chandrakant Desai in the Hindi film Lagaan. The art director has aesthetically recreated the pre-independence period village with authentic details.

नितिन चन्द्रकांत देसाई

बॉलीवुड के जाने माने कला निर्देशक नितिन चन्द्रकांत देसाई ने जे जे स्कूल ऑफ आर्टस से प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने कला निर्देशन का कार्य आत्मनिर्भरता से फ़िल्म '*चाणक्य*' से शुरू किया और इसके बाद '*तमस*' और '*डिस्कवरी ऑफ इंडिया*' में भी काम किया। उन्होंने बहुत सी अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्मों जैसे '*सच ए लॉग जर्नी*', *होली स्मॉक*, *कामसूत्र*, *सलाम बॉम्बे* एवं *जंगल बुक* में कला निर्देशन किया। वे जानी मानी भारतीय फ़िल्मों *परिंदा*, *1942 ए लव स्टोरी*, *इश्क*, *जोश*, *हम दिल दे चुके सनम*, *देवदास* और *मिशन कश्मीर* में भी काम कर चुके हैं।

NITIN CHANDRAKANT DESAI

One of Bollywood's best known art directors, Nitin Chandrakant Desai trained at the J.J. School of Art. He started providing art direction independently with serials like *Chanakya*, following it up with *Tamas* and *Discovery of India*. He has provided art direction for a number of international films like *Such A Long Journey*, *Holy Smoke*, *Kamasutra*, *Salaam Bombay* and *Jungle Book*. Major Indian films that have showcaset his work included *Parinda*, *1942 - A Love Story*, *Ishq*, *Josh*, *Hum Dil De Chuke Sanam*, *Mission Kashmir* and *Devdas*.

सर्वोत्तम वेशभूषाकार

भानु अथैया

वेशभूषाकारः भानू अथैया को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम वेशभूषाकार का पुरस्कार भानू अथैया को हिन्दी फ़िल्म 'लगान' के लिए दिया गया है। उन्होंने स्वतंत्रता पूर्व की वेशभूषाओं को बहुत ही सुन्दर ढंग से तैयार किया है जिससे फ़िल्म को वास्तविकता का पुट मिलता है।

BEST COSTUME DESIGNER

BHANU ATHAIYA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Costume Designer **BHANU ATHAIYA**

CITATION

The award for the Best Costume Designer of 2001 is given to Bhanu Athaiya for her work in the Hindi film Lagaan. The costume designer has taken microscopic care in designing the costumes of pre independence era, which gives the film an authentic look.

भानु अथैया

रिचर्ड एटनबरो की फ़िल्म गांधी में सर्वोत्तम वेशभूषाकार भानू अथैया ने जे जे स्कूल ऑफ आर्ट तथा फ्रांस से वेशभूषाकार का प्रशिक्षण प्राप्त किया। वे राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वेशभूषा के लिए अनेकों पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं। वे बहुत से जाने-माने भारतीय फ़िल्म निर्माताओं जैसे गुरूदत्त, राजकपूर, गुलजार एवं मणिरत्नम की फ़िल्मों में अपने अनुग्रह एवं वेशभूषा के माध्यम से सौन्दर्यता प्रदान कर चुकी हैं। वह विभिन्न संस्थानों में पढा चुकी हैं और बहुत से फैशन शो के लिए वेशभूषा डिजाइन कर चुकी हैं।

BHANU ATHAIYA

Best known for her work in Richard Attenborough's *Gandhi*, Bhanu Athaiya trained at the J.J. School of Art and in France in costume designing. She has won many awards for costume design, nationally and internationally. She has worked with leading Indian filmmakers like Guru Dutt, Raj Kapoor, Gulzar and Mani Ratnam, lending grace and authenticity through her costume designs to the films. She has also taught at various institutes and designed numerous fashion shows.

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन

ए. आर. रहमान

संगीत निर्देशक : ए. आर. रहमान को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का पुरस्कार ए. आर. रहमान को हिन्दी फिल्म 'लगान' में दिए सराहनीय संगीत के लिए दिया गया जिसमें क्षेत्रीय किरदारों एवं सौराष्ट्र की प्रकृति के अनुरूप संगीत का बहुत ही प्रभावी ढंग से निर्देशन किया है।

BEST MUSIC DIRECTION

A.R. RAHMAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Music Director (songs and background music score) **A.R. RAHMAN**

CITATION

The award for the Best Music Direction of 2001 is given to A.R. Rahman for the Hindi film Lagaan for a music score that is both regional in character and popular in appeal bringing out the ethos of Saurashtra.

ए. आर. रहमान

फिल्म संगीत निर्देशक के रूप में प्रसिद्ध होने के साथ-साथ अपने उच्च गुणों के लिए भी प्रसिद्ध ए. आर. रहमान के संगीत का सितारा बुलन्दियों की ओर है। इस वंशानुगत संगीतज्ञ ने पहले ट्रिनिटी कॉलेज ऑफ म्युजिक से संगीत में शिक्षण एवं प्रशिक्षण लिया और लंदन में उन्होंने नवयुवकों में अपने संगीत की पहचान बनाई। उन्हें मणिरत्नम के साथ फ़िल्म *'रोजा'* में गीत तमीडा-तमीडा का संगीत निर्देशन करने का मौका मिला जो कि काफी चर्चित रहा। उसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उनकी उल्लेखनीय प्रस्तुतियों में *'वन्दे मातरम'* रहा जो कि भारतीय स्वतंत्रता के 50 वर्ष पूरे होने पर गाया गया। बहुत सी फ़िल्मों में किए कार्य की सराहना के साथ-साथ 'स्प्रिट ऑफ फ्रीडम' तथा 'जन गण मन' भी काफी लोकप्रिय रहे।

A.R. RAHMAN

Easily one of the most sought after film music director in India today, A.R. Rahman's rise to stardom has been meteoric. Inherited musical genes, early musical apprenticeship and training at the Trinity College of Music, London have made Rahman's music the one most young Indians identify with. A chance meeting with Mani Ratnam led him to compose the music for the song Tamizha Tamizha in *Roja*, which became a rage. Since then he has not had to look back as the queue of people who want to work with him grows daily. Among his notable productions have been *Vandemataram* to commemorate 50 years of India's independence, *Spirit of Freedom* and *Jana Gana Mana* besides a number of films where his work has stood out and found popular acclaim.

सर्वोत्तम गीतकार

जावेद अख्तर

गीतकारः जावेद अख्तर को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम गीतकार का पुरस्कार जावेद अख्तर को हिन्दी फ़िल्म लगान के गीत 'राधा कैसे ना जले' एवं 'घनन घनन' के लिए दिया गया। गीतकार ने इन गानों में बहुत साधारण भाषा का प्रयोग कर फ़िल्म में कच्छ की स्थानीयता को उभारा है।

BEST LYRICS

JAVED AKHTAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Lyricist **JAVED AKHTAR**

CITATION

The award for the Best Lyrics of 2001 is given to Javed Akhtar for his two lyrics *Radha kaise na jale* and *Ghanan ghanan* in the Hindi film Lagaan. The poet used very simple language to bring out the richness of the Kutch locales.

जावेद अख्तर

शायर जान निसार अख्तर एवं लेखिका साफिया अख्तर के पुत्र जावेद अख्तर के गीतों ने भारतीयों का सदैव मनोरंजन किया है। उन्होंने सन 1980 से गीत लिखना शुरू किया था। यद्यपि उन्होंने युगल गीत लेखक सलीम जावेद के साथ भी काम किया जिन्होंने यादगार फ़िल्मों जैसे *शोले*, *शक्ति*, *सीता* और *गीता*, *डॉन*, *त्रिशूल* के गीत लिखे हैं। उन्होंने फ़िल्मों में लेखन को जारी रखते हुए *सागर*, *मि. इंडिया* और *मैं आजाद हूँ* जैसी फ़िल्मों के लिए भी लिखा। यह उनके गीत ही थे जिनके कारण वे आधुनिक वर्षों में चर्चित हुए ओर फ़िल्म *साज*, *बॉर्डर*, *गॉडमदर* एवं *रिफ्यूजी* जैसी फ़िल्मों के लिए विख्यात हुए।

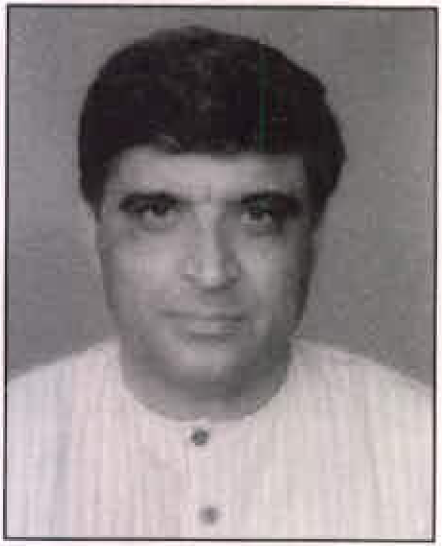

JAVED AKHTAR

Son of poet Jan Nissar Akhtar and writer Safia Akhtar, Javed Akhtar's lyrics have been bringing pleasure to Indians ever since he started writing poetry in 1980. However he shot into fame earlier as the one of the writer duo Salim Javed, who scripted memorable films like *Sholay, Shakti, Seeta Aur Geeta, Don* and *Trishul*. He continued to pen film scripts after that for films like *Saagar*, *Mr India* and *Main Azaad Hoon*. It has been his lyrics however that have been more visible in recent years and he has been widely acclaimed for films like *Saaz, Border, Godmother* and *Refugee*.

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

जानकी विश्वनाथन

जानकी विश्वनाथन को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार फ़िल्म निर्देशक जानकी विश्वनाथन को तमिल फ़िल्म कुट्टी के लिए दिया है जिसमें एक बच्ची के बचपन को संवारने के लिए तमिलनाडू के ग्रामीण क्षेत्र से चेन्नई लाने का वास्तविक चित्रण दर्शाया है। यह फ़िल्म मध्यम वर्गीय परिवारों में प्रचलित घरेलू बाल श्रमिकों के शोषण से संबंधित व्यथा को भी दर्शाती है।

SPECIAL JURY AWARD

JANAKI VISWANATHAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to Director **JANAKI VISWANATHAN**

CITATION

The special jury award of 2001 is given to the film director Janaki Viswanathan of the Tamil film Kutty for its realistic portrayal of the transition of a girl child from rural Tamil Nadu to Chennai in search of a livelihood. The film sensitises its viewers to the exploitation of child domestic labour, commonly prevalent within middle class families.

जानकी विश्वनाथन

मद्रास विश्वविद्यालय से पत्रकारिता एवं जनसंपर्क माध्यम में स्नातकोत्तर जानकी विश्वनाथन जनसंर्पक के माध्यम से विकास एवं सामाजिक समस्याओं के प्रति वचनबद्ध है जिससे सामाजिक विकास एवं सूचनाओं के प्रचार-प्रसार में सहायता मिलती है। समाचार पत्रों एवं साप्ताहिक पत्रों की नियमित लेखिका विश्वनाथन बहुत से मीडिया संगठनों में काम कर चुकी हैं और उन्हें दिल छू लेने वाले बहुत से विषयों पर फ़िल्म बनाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय अनुदान भी मिल चुका है।

JANAKI VISWANATHAN

A post-graduate in journalism and mass communications from the University of Madras, Janaki Viswanathan is deeply committed to development and social issues, viewing mass media as a tool that will aid the dissemination of developmental and social messages to the society. A regular writer in newspapers and journals, Viswanathan has worked for various media organisations and has won international grants to make films on numerous subjects close to her heart.

सर्वोत्तम विशेष प्रभाव

मधुसूदनन

सृजक एन. मधुसूदनन को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम विशेष प्रभाव का पुरस्कार एन.मधुसूदनन को तमिल फ़िल्म आलावंदन में जीवन के सृजनात्मक और विशेष प्रभाव का सजीव चित्रण किए जाने के लिए दिया गया है जो कि फ़िल्म के नाटकीय प्रभाव में वृद्धि करता है।

BEST SPECIAL EFFECTS

N. MADHUSUDHANAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Creator **N. MADHUSUDHANAN**

CITATION

The award for the Best Special Effects of 2001 is given to N. Madhusudhanan for the Tamil film Aalavandaan for its creative execution of live and animated special effects which enhance the dramatic impact of the film.

एन. मधुसूदनन

बिक्रीकर्ता के रूप में मधुसूदनन ने मल्टी मीडिया व्यापार में सन 1992 में अपना कार्य प्रारंभ किया। उन्होंने सन 1994 में एन ई पी सी के लिये पहली कॉरपोरेट फ़िल्म बनाई। तब से अब तक वे कई कॉरपोरेट और फ़ीचर फ़िल्मों जैसे अलेक्जान्डर, अलईपायुथे, आलावंदन और बाबा आदि में काम कर चुके हैं। वे आजकल कई हॉलीवुड फ़िल्मों जैस 'द रिटर्न ऑफ़ द किंग' (लार्ड ऑफ़ द रिंग्स) और कुंगफू मिलियनेयर आदि में भी काम कर रहे हैं।

N. MADHUSUDHANAN

Starting his career as a salesman, N. Madhusudhanan entered the multimedia industry in 1992. He produced his first corporate film for NEPC in 1994. Since then he has been involved in a number of corporate films and later feature films like *Alexander, Alaipayuthe, Aalavandan* and *Baba*. He is currently working on a number of Hollywood projects including *The Return of the King (Lord of the Rings)* and *Kungfu Millionaire*.

सर्वोत्तम नृत्य संयोजन

राजू खान

नृत्य संयोजकः राजू खान को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम नृत्य संयोजन का पुरस्कार राजू खान को हिन्दी फ़िल्म लगान के गीत घनन-घनन के लिए दिया गया है। इस विशिष्ट गीत का नृत्य संयोजन परम्पराओं एवं विरासत को ध्यान में रखते हुए जीवंतता एवं कुशाग्रता के साथ किया है।

BEST CHOREOGRAPHY

RAJU KHAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Choreographer **Raju Khan**

CITATION

The award for the Best Choreography of 2001 is given to Raju Khan in the Hindi film Lagaan for the song *Ghanan ghanan*. Choreography of that particular song is very lively and skilfully composed keeping our tradition and heritage in mind.

राजू खान

जाने माने नृत्य निर्देशक राजू खान अपनी मां सरोज खान के पद चिन्हों पर चले हैं। मां के सहायक के रूप में कार्य प्रारंभ करने के बाद राजू ने फ़िल्म 'दो पल' से कैरियर की शुरूआत की। उन की महत्त्वपूर्ण फ़िल्में हैं: *सड़क, बाजीगर, हम हैं राही प्यार के, दिलजले, फरेब, कच्चे धागे, मेला* और *लगान।*

RAJU KHAN

One of the best-known film choreographers, Raju Khan has followed in the footsteps of his mother, choreographer Saroj Khan. He began his career by assisting his mother before branching out on his own with *Do Pal*. Amongst his most notable films are *Sadak, Baazigar, Hum Hain Rahi Pyaar Ke, Diljale, Fareb, Kacche Dhaage, Mela* and *Lagaan*.

सर्वोत्तम बंगला फ़िल्म

हेमन्तर पाखी

निर्माताः एन एफ डी सी को रजत कमल और रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशकः उर्मी चक्रबर्ती को रजत कमल और रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम बंगला फ़िल्म का पुरस्कार हेमन्तर पाखी को दिया गया है जिसमें एक शिक्षित महिला की दशा का चित्रण है जो माता एवं पत्नी के पारम्परिक किरदार में अपनी पहचान ढूँढने का यत्न करती है। फ़िल्म में इस समसामयिक सामाजिक समस्या को बहुत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

BEST FEATURE FILM IN EACH OF THE LANGUAGE SPECIFIED IN THE SCHEDULE VIII OF THE CONSTITUTION

BEST FEATURE FILM IN BENGALI

HEMANTAR PAKHI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Producer **NFDC**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Director **URMI CHAKRABORTY**

CITATION

The award for the Best Feature Film in Bengali of 2001 is given to Hemantar Pakhi for delineating effectively the plight of an educated woman who seeks her own identity within the trappings of her traditional role of mother & wife. A contemporary socially relevant issue has been handled with great sensitivity.

उर्मी चक्रबर्ती

सामाजिक चेतना में राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार विजेता उर्मी चक्रबर्ती ने स्नातक और कानून की शिक्षा ग्रहण करने के बाद फ़िल्मों और टेलीविजन में एक्टिंग की शुरूआत सन 1989 में की। सन 1994 में निर्देशन की शुरूआत उन्होंने वृत्त चित्रों और लघु फ़िल्मों से की। वे भरतनाट्यम नृत्यांगना है और देश-विदेश में कार्यक्रम प्रस्तुत कर चुकी हैं।

URMI CHAKRABORTY

Winner of the National Award for the Best Documentary for Social Awareness, Urmi Chakraborty completed her BA and LLB before starting as an actress in films and television in 1989. She took up direction of films in 1994 and has directed documentaries and short films. She is a trained Bharatnatyam dancer and has given recitals in India and abroad.

सर्वोत्तम हिन्दी फ़ीचर फ़िल्म

दिल चाहता है

निर्माताः रितेश सिधवानी को रजत कमल और रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशकः फरहान अख्तर को रजत कमल और रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 की सर्वोत्तम हिन्दी फ़ीचर फ़िल्म का पुरस्कार 'दिल चाहता है' को दिया गया है जिसमें आधुनिक समाज में नवयुवकों की मानसिक परिपक्वता प्राप्त करने की स्थिति का कला एवं हास्यता बोध के साथ चित्रण किया है।

BEST FEATURE FILM IN HINDI

DIL CHAHTA HAI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Producer **RITESH SIDHWANI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Director **FARHAN AKHTAR**

CITATION

The award for the Best Feature Film in Hindi of 2001 is given to Dil Chahta Hai for artistically and humorously portraying the growing up years of young persons in modern society.

रितेश सिधवानी

घरेलू समान बनने वाली पारिवारिक पृष्ठभूमि के साथ रितेश सिधवानी को लगा कि वहाँ पर उनका भविष्य ठीक नहीं है। लेकिन उनका रुझान फ़िल्मों में होने से उन्होंने अपनी एक्सल एन्टरटेनमेंट नामक फ़िल्म प्रोडक्शन कम्पनी बनाई जिसके माध्यम से उन्होंने हिन्दी फ़िल्म *'दिल चाहता है'* बनाई। इससे उनको पुराने मित्रों के साथ निर्देशन का कार्य करने में मदद मिली और उनके साथ वे अपने सपनों को साकार कर सके।

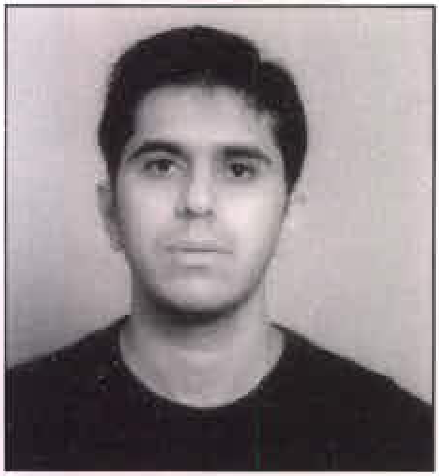

RITESH SIDHWANI

With his family's background in manufacturing of home appliances, Ritesh Sidhwani seemed slated for a career there. But his interest in films saw him launch his film production company called Excel Entertainment, which produced *Dil Chahta Hai*. It helped that his long-standing friend wielded the directorial baton and together they were able to realise their dreams.

फरहान अख्तर

जावेद अख्तर एवं हनी इरानी के पुत्र फरहान अख्तर ने अक्षय खन्ना की चर्चित फ़िल्म *'हिमालय पुत्र'* में पंकज पाराशर के सहायक के रूप में अपने कैरियर की शुरुआत की। उसके बाद उन्होंने तीन वर्ष टेलीविजन सॉफ्टवेयर प्रोडक्शन हाउस में बिताए जहाँ विज्ञापन लेखन एवं पारिस्थिक कामदी के लिए उनके अच्छे कार्य के कारण उन्हें निर्माण प्रबंधक से सहायक निदेशक बनाया गया। उसके बाद उन्होंने लोकप्रिय फ़िल्म *दिल चाहता है* के लेखन से पहले म्यूजिक विडियोज जैसे ब्रेथलेस एन्ड प्राइस ऑफ बुलेट्स का निर्देशन किया।

FARHAN AKHTAR

Son of famous writer parents, Javed Akhtar and Honey Irani, Farhan Akhtar started off as an assistant to Pankaj Parashar during the making of Akshaye Khanna's debut films *Himalayputra*. He then spent three years at a television software production house, where his work ranged from being production manager to assistant director of post-production and scripting commercials and sitcoms. After that, he directed music videos like Breathless and Price of Bullets, before starting work on the script of his debut film, *Dil Chahta Hai*.

सर्वोत्तम कन्नड़ फ़ीचर फ़िल्म

अतिथि

निर्माताः मित्रचित्रा को रजत कमल और रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशकः पी. शेषाद्री को रजत कमल और रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 की सर्वोत्तम कन्नड़ फ़ीचर फ़िल्म का पुरस्कार फ़िल्म अतिथि को दिया गया है जिसमें आतंकवाद की हर जगह व्याप्त विपदा को दर्शाया है। इस फ़िल्म में निर्दोष लोगों, मानवीय संबंधों और व्यवहारिक आदर्शों पर किए गए उत्पीड़न का बहुत प्रभावी चित्रण किया है। यह फ़िल्म मानवीय स्तर पर उन समस्याओं का चित्रांकन करती है जिनसे दर्शक इसकी अनुभूति कर सकें।

BEST FEATURE FILM IN KANNADA

ATITHI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Producer **MITRACHITRA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Director **P. SHESHADRI**

CITATION

The award for the Best Feature Film in Kannada of 2001 is given to Atithi, which addresses the universal affliction of terrorism. It portrays the impact of this scourge on innocent lives, human relations and behavioural patterns. It examines the issue at a human level with which viewers can empathise.

पी. शेषाद्री

कन्नड़ साहित्य में परा-स्नातक एवं पत्रकारिता में डिप्लोमाधारक पी. शेषाद्री ने प्रसिद्ध कलाकार एम टी वी आचार्य के अधीन भी शिक्षुता हासिल की है जिनसे उन्होंने विज्ञापन कला सीखी है। शुद्दी संगति नामक साप्ताहिक पत्र में पत्रकार के रूप में थोड़ा काम करने के बाद वे सन 1990 में फ़िल्मों में आए और उन्होंने फ़िल्म गौरी शंकर के लिए पटकथा एवं संवाद लेखन का कार्य किया। स्वयं को स्थापित करने से पहले उन्होंने प्रसिद्ध निर्देशक टी. एस. नागभरणा के साथ काम किया। उन्होंने प्रारम्भ में टेलीविजन धारावाहिकों, वृत्तचित्रों एवं टेलीफ़िल्मों में काम किया। सन 2000 में उन्होंने अपनी पहली फ़ीचर फ़िल्म मुन्नुडी का निर्देशन किया जिससे उन्हें काफी लोकप्रियता मिली। अतिथि उनकी दूसरी फ़ीचर फ़िल्म है।

P. SHESHADRI

A postgraduate in Kannada literature and a diploma holder in journalism, P. Sheshadri has also been an apprentice under noted artist MTV Acharya, from whom he learnt commercial art. After a short stint as a journalist in *Suddi Sangati Weekly*, he entered films in 1990 when he wrote the screenplay and dialogues for the film *Gourishankara*. He worked with eminent director TS Nagarbharana before launching out on his own. He initially worked on television serials, documentaries and telefilms. In 2000, he directed his first feature film, *Munnudi*, which got him widespread recognition and acclaim. *Atithi* is his second feature film.

सर्वोत्तम मलयालम फ़िल्म

डैनी

निर्माताः टी.वी. चन्द्रन को रजत कमल और रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशकः टी. वी. चन्द्रन को रजत कमल और रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम मलयालम फ़िल्म का पुरस्कार फ़िल्म डैनी को दिया गया है। इस फ़िल्म में एक साधारण मानव के जीवन का प्रलेखन है जिसका कि अपने परिवार में कोई अस्तित्व नहीं है। यद्यपि फ़िल्म के अन्त में काफी जटिलता है लेकिन मानवीय संबंधों की गरिमा को बहुत प्रभावित ढंग से दर्शाया है।

BEST FEATURE FILM IN MALAYALAM

DANY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Producer **T.V. CHANDRAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Director **T.V. CHANDRAN**

CITATION

The award for the best feature film in Malayalam of 2001 is given to Dany. The film is the documentation of life of an ordinary human being who is denied any meaningful relationship within his family. In the end however the film very subtly but effectively brings out the triumph of the dignity of human relationships.

टी. वी. चन्द्रन

केरल वासी फ़िल्मकार टी. वी. चन्द्रन फ़िल्म निर्माण से कई प्रकार से जुड़े रहे हैं। उनकी फ़ीचर फ़िल्मों *अलीचिन्ते अन्वेशवनम, पोंथन मदा, ओरमईकड़ उनदाइरीक्कानम, मंगम्मा, सुसन्ना* और *डैनी* को कई पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

T.V. CHANDRAN

A Kerala-based filmmaker, T.V. Chandran has been associated with filmmaking in numerous capacities. His feature films *Alicinte Anweshwanam, Ponthen Mada, Ormaikal Undayirikkanam, Mangamma, Susanna* and *Dany* have received widespread accolade.

सर्वोत्तम उड़िया फ़िल्म

मगुनीरा शगदा

निर्माताः एन एफ डी सी को रजत कमल और रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशकः प्रफुल्ल मोहन्ती को रजत कमल और रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 की सर्वोत्तम उड़िया फ़ीचर फ़िल्म का पुरस्कार मगुनीरा शगदा को दिया गया है जिसमे परम्पराओं में फँसे एक व्यक्ति की व्यथा का चित्रण है जो कि अपने चारों तरफ के जीवन के अनुरूप अपने आप को नहीं बदल पाता है।

BEST FEATURE FILM IN ORIYA

MAGUNIRA SHAGADA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Producer **NFDC**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Director **PRAFULLA MOHANTY**

CITATION

The award for the Best Feature Film in Oriya of 2001 is given to Magunira Shagada for showing the agony of a man trapped within tradition and unable to accept the changes that impact life around him.

प्रफुल्ल मोहन्ती

भारतीय फ़िल्म एवं टेलीविजन संस्थान पुणे से दीक्षित प्रफुल्ल मोहंती 23 वर्ष तक दूरदर्शन में निर्माता के रूप में कार्यरत रहे। उन्होंने उड़िया फ़िल्मों *बंग सिलत, तथापि, देवकी* तथा बाल फ़िल्म *बरगद दादा* का लेखन-निर्देशन किया। उन्होंने कई नाटकों और धारावाहिकों का भी निर्माण किया है।

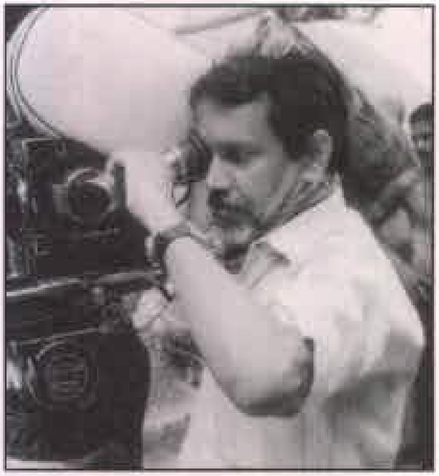

PRAFULLA MOHANTY

After training at the Film and Television Institute of India, Pune, Prafulla Mohanty worked with Doordarshan for 23 years. He wrote and directed the Oriya films *Banga Silat, Tathapi, Devaki* and the children's film, *Bargad Dada*. He has also directed plays and teleserials.

सर्वोत्तम तमिल फ़िल्म

उरुकु नुरूपेर

निर्माताः एल सुरेश को रजत कमल और रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशकः बी. लेनिन को रजत कमल और रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम तमिल फ़िल्म का पुरस्कार उरुकु नुरूपेर को दिया गया है। यह फ़िल्म वैचारिक सिद्धान्तों पर आधारित एक अपराधिक कहानी के उत्तेजित विचारों का चित्रण करती है। यह फ़िल्म जीवन, मरण एवं न्याय को प्रतिबिंबित करती है।

BEST FEATURE FILM IN TAMIL

OORUKU NOORUPER

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Producer **L. SURESH**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Director **B. LENIN**

CITATION

The award for the Best Feature Film in Tamil of 2001 is given to Ooruku Nooruper. The film depicts a thought-provoking story about crime, based on ideology. It reflects upon life, death and justice.

एल. सुरेश

प्रसिद्ध फ़िल्म निर्माता एल. सुरेश ने अपना कैरियर चार्टर्ड एकांउटेंट के रूप में शुरू किया। धीरे-धीरे उन्होंने फ़िल्म फायनांस और डिस्ट्रीब्यूशन में कदम रखा। अपने पिता वी.एस. लक्ष्मणन द्वारा शुरू की गई कंपनी से उन्होंने अनेक बड़ी तमिल और दक्षिण भारतीय फ़िल्मों का निर्माण किया। सेंसर बोर्ड के अलावा सुरेश अनेक फ़िल्म संस्थाओं में सेवा कर चुके हैं।

L. SURESH

Eminent film producer L. Suresh started his professional life as a chartered accountant. As a practising auditor, he soon moved to film finance and distribution. He is the Managing Partner of Ananda Pictures, which was started by his father, V.S. Laxmanan, in 1948. The company has released many blockbuster films of Tamil and other south Indian languages. He has been a member of various film bodies for many years besides serving as a board member of the Central Board of Film Censor.

बी. लेनिन

प्रसिद्ध फ़िल्मकार ए. भीमसिंह के पुत्र बी. लेनिन ने अपना फ़िल्मी कैरियर अनेक छोटी-मोटी विधाओं से शुरू किया। लेनिन पांच फ़ीचर, चार लघु, दो लघु वीडियो फ़िल्म और अनेक टेलीविजन धारावाहिकों का निर्माण कर चुके हैं। साथ ही वे 200 से अधिक फ़िल्मों का संपादन भी कर चुके हैं। वे सर्वोत्तम गैर कथा चित्र श्रेणी में निर्देशन के लिये राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किये जा चुके हैं।

B. LENIN

Son of veteran Chennai-based filmmaker, A. Bhimsingh, B. Lenin started his career as an associate director and editor for his father's films, often working as lab technician and sound engineer as well. He has since then grown in renown, first as a film editor, and more recently, as a director. He has directed five feature films, four short films, two short videos and several television serials besides editing more than 200 films. He has already won the National Award for the Best Non-Feature film of a Director for *Knockout*.

सर्वोत्तम तेलुगु फ़िल्म

शो

निर्माताः जी. मंजुला को रजत कमल और रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशकः नीलकंठ को रजत कमल और रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम तेलुगु फ़ीचर फ़िल्म का पुरस्कार शो को दिया गया है। जिसमें दो अपरिचित व्यक्तियों के बीच मानवीय संबंधों के विकास को सहजता एवं जीवन की सर्वोत्तम अंतर्दृष्टि के साथ चित्रित किया है।

BEST FEATURE FILM IN TELUGU

SHOW

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Producer **G. MANJULA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Director **NEELAKANTA**

CITATION

The award for the Best Feature Film in Telugu of 2001 is given to Show for depicting the development of human relations between two strangers with spontaneous humour and rare insight into life.

जी. मंजुला

पूर्व लोकसभा सदस्य एवं तेलुगु सिनेमा के विख्यात अभिनेता कृष्णा की पुत्री घट्टामनेनी मंजुला फ़िल्मों में अभिनय और निर्माण कर चुकी है। चेन्नई से समाजशास्त्र स्नातक मंजुला तेलुगु फ़िल्मों के साथ साथ तमिल एवं मलयालम फ़िल्मों में भी काम कर चुकी हैं। वे बहुत सी फ़िल्मों में अधिशासी निर्माता की हैसियत से काम कर चुकी हैं जिनमें हिन्दी फ़िल्म 'क्या दिल ने कहा' भी शामिल है।

G. MANJULA

Daughter of former MP and major star of Telugu cinema, Krishna, Ghattamaneni Manjula has been acting in and producing films. A graduate in Sociology from Chennai, she has already worked in Tamil and Malayalam films besides Telugu. She has also worked as Executive producer in various films including *Kya Dil Ne Kaha* in Hindi.

नीलकंठ

तेलुगु में जमदग्नि फ़िल्म के निर्माता के रूप में फ़िल्म उद्योग में उनका नाम नीलकंठ का पूरा नाम जी. नीलकंठ रेड्डी दर्ज हुआ। उन्होंने अभी तमिल फ़िल्म प्रियंका का निर्माण एवं निर्देशन भी किया जिसके लिए उन्हें तथा जानी मानी अभिनेत्री रेवती को पुरस्कार मिले हैं।

NEELAKANTA

Neelakanta, or to give his full name, G. Neelakanta Reddy entered the film industry as a producer with *Jamadagni* in Telugu. He has since also produced and directed Priyanka in Tamil, which won him and the lead actress Revathy awards.

सर्वोत्तम अंग्रेजी फ़िल्म

मित्र माई-फ्रैंड

निर्माताः सुरेश मेनन को रजत कमल और रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशकः रेवती (आशा मेनन) को रजत कमल और रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम अंग्रेजी फ़िल्म का पुरस्कार मित्र माई-फ्रैंड को दिया गया है जिसमें विभिन्न समाजों के सामाजिक मूल्यों के अन्तर्द्वन्द्व में फँसे लोगों का चित्रण किया गया है। यह फ़िल्म विवाह एवं परिवार में भावनाओं के बीच भेद को बताती है।

BEST FEATURE FILM IN EACH OF THE LANGUAGES OTHER THAN THOSE SPECIFIED IN SCHEDULE VIII OF THE CONSTITUTION.

BEST FEATURE FILM IN ENGLISH

MITR MY FRIEND

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Producer **SURESH MENON**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Director **REVATHY (ASHA MENON)**

CITATION

The award for the Best Feature Film in English of 2001 is given to Mitr - My Friend in English. For depicting the agony of individuals torn between social values practised in different societies. It explores the nuances of emotions within a marriage & family.

सुरेश मेनन

सन् 1982 में सिनेमाटोग्राफर के रूप में कैरियर की शुरुआत करने वाले सुरेश मेनन 20 वर्षों से अधिक समय से फ़िल्मों से जुड़े रहे हैं। अनेक वृत्तचित्रों, विज्ञापन फ़िल्मों, टेलीविज़न धारावाहिकों का वे निर्माण कर चुके हैं। वे दो तमिल फ़ीचर फ़िल्मों पुदिया मुगम और पासा मल्इरगल का निर्माण कर चुके हैं।

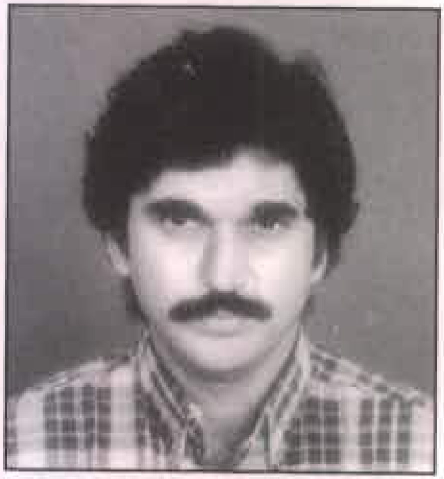

SURESH MENON

Starting as a cinematographer in 1982, Suresh Chandra Menon has been associated with the film industry for over 20 years. He has been in the business of production of advertisement films, documentaries, corporate films, television serials and feature films. His corporate clientele has included some of the biggest names in the sector. He has produced two Tamil feature films, *Pudhiya Mugam* and *Paasa Malargal*.

रेवती मेनन (आशा मेनन)

रेवती का दर्शकों से प्रथम परिचय दो दशक पहले भारती राजा निर्देशित फ़िल्म 'मनन वसनई' से कलाकार के रूप में हुआ। तब से वह पाँच भाषाओं की 90 फ़िल्मों में काम कर चुकी हैं। अन्य पुरस्कारों के साथ वे सह अभिनेत्री का राष्ट्रीय पुरस्कार भी जीत चुकी हैं। कुशल भरतनाट्यम् नृत्यांगना रेवती विकलांगों की मदद के लिये कार्यरत् हैं।

REVATHY

Revathy (Asha Menon) was first introduced to audiences as an actress about two decades ago by director Bharati Raaja in *Mann Vasanai*. Since then she has acted in about 90 films in five Indian languages. She has won many awards, including the National Award for Best Supporting Actress for *Devar Magan*. A trained Bharatnatyam dancer, Revathy has been involved in the care of people with disabilities.

विशेष उल्लेख

दिलीप डोले

नारायण सील

प्रशस्ति

जूरी ने विशेष आलेख फ़िल्म पनोई-जोंगकी के निर्देशकों का किया है। जिनमें उन्होंने अरुणाचल प्रदेश की तलहटी में बसे अश्वेत मंगोलॉयड जनजाति की विचारधाराओं को प्रभावी ढंग से दर्शाया है।

SPECIAL MENTION

DILIP DOLEY AND NARAYAN SEAL

Special Mention Certificates to Directors **DILIP DOLEY** and **NARAYAN SEAL**

CITATION

The jury makes a special mention of Dilip Doley and Narayan Seal, directors of the film Panoi-Jongki in Miri or Missing for effectively capturing the spirit of the colourful Mongoloid tribe located at the foothills of Arunachal Pradesh.

दिलीप डोले

गुवाहाटी वासी दिलीप डोले लंबे समय से फ़िल्मों से जुड़े रहे हैं। आकाशवाणी डिब्रूगढ़ में गायक रहे दिलीप मिशिंग लोक गीतों के परिक्षक हैं। वे सन 1992 में 'अबोतानी मिशिंग्स' फ़िल्म में निर्माता के रूप में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। वे अनेक वृत्त चित्र जैसे-पंचायती राज, दावरपूजा और वंगल एंड स्प्रिंग विंड आदि का निर्माण कर चुके हैं। *पनोई-जोंगकी* मिशिंग भाषा में उनकी पहली फ़िल्म है।

DILIP DOLEY

Guwahati-based Dilip Doley has been associated with films and associated fields for a long time and in multiple capacities. He has been a radio singer for AIR, Dibrugarh and was the first Mishing folk song preserver and producer. He wrote the script and produced *Sons of Abotani, the Mishings*, which won the National Award as the Best Non-feature film in 1992. He has since then produced and directed a number of documentary films including *Panchayati Raj, Dabur Poja and Wangala* and *Spring Wind*. *Panoi-Jongki*, the first Mishing feature film is also his debut feature film.

नारायण सील

कला निर्देशक और निर्देशक नारायण सील असमिया सिनेमा के सभी बड़े निर्देशकों के साथ काम कर चुके हैं। उन्होंने कई वृत्त चित्रों जैसे करबी धूप फेस्टीवल, बिलीफ एंड फेथ, नेशनल सेविंग्स ऑरगेनाइज़ेशन और इतिहासे पोरोसे उत्तर गुवाहाटी आदि का निर्माण किया है। *पनोई-जोंगकी* उनकी प्रथम फ़ीचर फ़िल्म है।

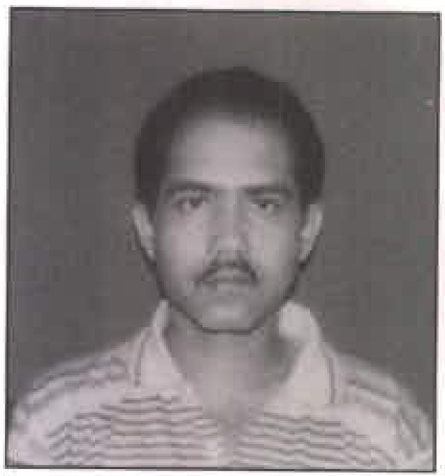

NARAYAN SEAL

Art director and director, Narayan Seal has worked with some of the biggest names in Assamese cinema, including Bhupen Hazarika, Bhabendra Nath Saikia, Gautam Bora and Nip Barua. He has also directed documentary films like *Karbi Youth Festival, Belief and Faith, National Savings Organisation* and *Itihase Porose Uttar Guwahati*. *Panoi-Jongki* is his first feature film.

कथाचित्र पुरस्कार जो नहीं दिये गये

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम कथाचित्र

पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम कथाचित्र

असमिया भाषा में सर्वोत्तम कथाचित्र

गुजराती भाषा में सर्वोत्तम कथाचित्र

मणिपुरी भाषा में सर्वोत्तम कथाचित्र

मराठी भाषा में सर्वोत्तम कथाचित्र

राजस्थानी भाषा में सर्वोत्तम कथाचित्र

FEATURE FILMS AWARDS NOT GIVEN

BEST FEATURE FILM ON FAMILY WELFARE

BEST FEATURE FILM ON ENVIRONMENT
CONSERVATION / PRESERVATION

BEST CHILDREN'S FILM

BEST FEATURE FILM IN ASSAMESE

BEST FEATURE FILM IN GUJARATI

BEST FEATURE FILM IN MANIPURI

BEST FEATURE FILM IN MARATHI

BEST FEATURE FILM IN RAJASTHANI

गैर कथाचित्र पुरस्कार

Awards for Non-Feature Films

सर्वोत्तम गैर कथाचित्र के लिए पुरस्कार

सोनल (हिन्दी एवं अंग्रेजी)

निर्माता: फ़िल्म प्रभाग को स्वर्ण कमल और रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक: प्रकाश झा को स्वर्ण कमल और रुपये 20,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम गैर फ़ीचर फ़िल्म का पुरस्कार सोनल को दिया गया है जिसमें उन्होंने सिनेमा माध्यम द्वारा भारत की एक जानी-मानी नृत्यांगना के जीवन को सहजता से प्रस्तुत किया है।

AWARD FOR THE BEST NON-FEATURE FILM

SONAL (Hindi & English)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Producer **FILMS DIVISION**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Director **PRAKASH JHA**

CITATION

The Award for the Best Non-feature Film of the year 2001 is given to the film Sonal for its excellent use of the cinematic medium to give an insight into one of the greatest dancers of India.

प्रकाश झा

ये केवल भारत के जाने माने निर्देशक ही नहीं अपितु उन्होंने गंभीर एवं विज्ञापन सिनेमा भी बहुत सफलता के साथ किए हैं। 1952 में जन्मे प्रकाश झा ने भारतीय सिनेमा में एक वांछनीय स्थान बनाया है। सामन्ती समितियों की गंभीर फ़िल्म *दामुल* (1987) एवं *मृत्युदंड* (1998) से लेकर बहुत प्रश्नचित्त फ़िल्म *हिप-हिप-हुर्रे* (1984) भी बनाई। झा भारतीय सिनेमा के कुछ जाने माने लोगों के साथ काम कर चुके हैं। उन्होंने बहुत से वृत्तचित्रों के साथ साथ बिहार शरीफ से संबंधित *'फ़िल्म फेसिस आफ्टर दी स्टॉर्म'* (1982) बहुत लोकप्रिय रही। दूरदर्शन से संबंधित कार्य में उनका धारावाहिक *मुंगेरी लाल के हसीन सपने* 1990 बहुत लोकप्रिय रहा। हाल ही की उनकी फ़िल्म *राहुल* 2001 भी काफी लोकप्रिय रही जिसमें एक बच्चे के प्रयासों को दिखाया है जो कि अपने झगड़ालू माता-पिता के साथ रहता है।

PRAKASH JHA

Not just one of India's best known directors but also one who has straddled both serious and commercial cinema with success, 1952-born Prakash Jha today occupies an enviable position in Indian cinema. From a dark look at feudal societies in *Damul* (1987) and *Mrityudand* (1998) to the more light-hearted *Hip Hip Hurray* (1984), Jha has worked with some of the best names in Indian cinema. He has also made a number of documentaries including the much acclaimed *Faces after the Storm* (1982) on the riots in Biharsharif. His work for television has included the popular series *Mungerilal Ke Haseen Sapne* (1990). His latest feature film Rahul (2001), an exploration of a child's efforts to keep his bickering parents together, was widely acclaimed.

निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम गैर फ़ीचर फ़िल्म

डायरी ऑफ ए हाउस वाइफ

निर्माताः आशा जोसफ एवं विनोद सुकुमारन को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशकः विनोद सुकुमारन को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम गैर फ़ीचर फ़िल्म का पुरस्कार मलयालम फ़िल्म डायरी ऑफ ए हाउस वाइफ को दिया गया है जिसमें एक गृहिणी की करूणा को दर्शाया है जो अपने पति का युद्ध से वापस आने का इंतज़ार करती है।

THE AWARD FOR THE BEST FIRST NON-FEATURE FILM OF A DIRECTOR

DIARY OF A HOUSEWIFE (Malayalam)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000/- each to Producer **ASHA JOSEPH AND VINOD SUKUMARAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Director **VINOD SUKUMARAN**

CITATION

The award for the Best First Non-feature Film of a Director for the year 2001 is given to the Malayalam film Diary of a Housewife for the innovative approach in narrating the pathos of a housewife who is waiting for her husband to return from war.

विनोद सुकुमारन

भारतीय फ़िल्म और टेलिविज़न संस्थान, पुणे, के पूर्व छात्र विनोद सुकुमारन ने संपादन में डिप्लोमा प्राप्त करने के बाद अनेक फ़िल्मों जैसे- *जय गंगा, परदेस* और *इस रात की सुबह नहीं* में सहायक संपादक के रूप में काम किया। इससे पहले विनोद रंगमंच से जुड़े रहे और उन्होंने 50 से अधिक नाटकों का मंचन किया। उन्होंने मलयालम फ़िल्म *'अग्निसाक्षी'* में सहायक निर्देशक के रूप में काम किया। *'डायरी ऑफ अ हाउसवाइफ'* उन के द्वारा निर्देशित प्रथम फ़िल्म है।

VINOD SUKUMARAN

Emerging Kerala-based director, Vinod Sukumaran is an alumnus of the Film and Television Institute, Pune where he pursued a diploma in cinema with specialisation in film editing. He had earlier graduated from the School of Drama, Calicut University. Actively involved in theatre, he has participated in the staging of more than 50 plays. He has been assistant editor in many feature films, including *Jaya Ganga, Pardes* and *Is Raat Ki Subah Nahin*. He has also been assistant director for the Malayalam film, *Agni Sakshi*. *Diary of A Housewife* is the first film directed by him.

आशा जोसफ

निजी मलयालम टेलीविजन चैनल की निर्माता आशा जोसफ विभिन्न संगठनों के लिए पहले शैक्षणिक एवं सामाजिक जागरूकता प्रदान करने वाली फ़िल्मों का निर्माण एवं निर्देशन कर चुकी हैं। उन्होंने पुणे विश्वविद्यालय से संचार अध्ययन में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की जहाँ से उन्होंने टेलीविजन निर्माण में विशेषज्ञता हासिल की। वे सर्वोत्तम बाल कार्यक्रम चंगट्टीकोट्टम के निर्देशन के लिए सन 1999 के केरल स्टेट टेलीविजन पुरस्कार जीत चुकी हैं। वे सन 2002 में यंग इंडियन ब्रॉडकास्ट जर्नलिस्ट्स के लिए होने वाले यूनाइटेड किंगडम के चेवनिंग छात्रवृत्ति कार्यक्रम के लिए भी चुनी गई थीं।

ASHA JOSEPH

A producer with a private Malayalam television channel, Asha Joseph has earlier produced and directed films for educational and social awareness for various organisations. She holds a post-graduate degree in Communications Studies from the University of Pune, where she specialised in television production. She has won the Kerala State television award in 1999 for directing the best children's programme, *Changatikkoottam*. She was also selected for UK's Chevening Scholarship Programme for Young Indian Broadcast Journalists in 2002.

सर्वोत्तम मानव शास्त्रीय फ़िल्म

दी मॉनपास ऑफ अरुणाचल प्रदेश (अंग्रेजी)

निर्माताः फ़िल्म प्रभाग को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशकः अरिबम श्याम शर्मा को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय फ़िल्म का पुरस्कार अंग्रेजी फ़िल्म 'द मोनपास ऑफ अरुणाचल प्रदेश' को दिया गया है जिसमें मोनपा जाति के धार्मिक अनुष्ठानों को बहुत सहज और सटीक रूप से प्रस्तुत किया है।

AWARD FOR THE BEST ANTHROPOLOGICAL/ ETHNOGRAPHIC FILM

THE MONPAS OF ARUNACHAL PRADESH (English)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Producer **FILMS DIVISION**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Director **ARIBAM SYAM SHARMA**

CITATION

The award for the Best Anthropological/Ethnographic film of 2001 is given to the English film The Monpas of Arunachal Pradesh for exploring the vibrant rites and rituals of the Monpa tribe.

अरिबम श्याम शर्मा

भारत के चर्चित फ़िल्म निर्माताओं में से एक मणिपुर के जाने माने अरिबम श्याम शर्मा की पहले ही बहुत सी फ़िल्में उन्हें देश-विदेश में सम्मान एवं पुरस्कार दिलवा चुकी हैं। यद्यपि मणिपुर के समाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के प्रति अटल उनकी फ़िल्मों के विषयों का व्यापक पुनरावेदन दुनिया में सब जगह देखा गया। एक बहुसर्जक फ़िल्म निर्माता आठ फ़ीचर फ़िल्में एवं सत्तरह गैर फ़ीचर फ़िल्में निर्देशित कर चुके हैं। उनकी फ़िल्में बड़े-बड़े अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोहों जैसे कान्स, लोकार्नो, मोन्ट्रियल, कायरो, लंदन, डेनवार इत्यादि देशों में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं। भारत में आगामी पुरस्कार के लिए लोकप्रिय शर्मा पहले भी ग्यारह बार राष्ट्रीय पुरस्कार ग्रहण कर चुके हैं।

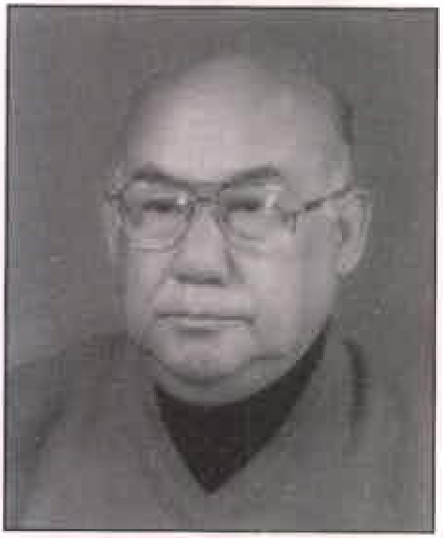

ARIBAM SYAM SHARMA

One of India's most acclaimed filmmakers and the best known from Manipur, Aribam Syam Sharma's earlier films have already won him accolades and awards around the world. Though rooted in the socio-cultural milieu of Manipur, the universal appeal of the subjects of his films has found favour globally. A fairly prolific filmmaker, he has already directed eight feature films and seventeen non-feature films. His films have represented India at the biggest of international films festivals – at Cannes, Locarno, Montreal, Cairo, London, Denver and many other festivals. Acclaim within India has been as forthcoming and he has won the National Award eleven times already.

सर्वोत्तम जीवनी आधारित फ़िल्म

तीजनबाई (हिन्दी)

निर्माताः कुलदीप सिन्हा, फ़िल्म प्रभाग को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशकः वी. पकीरीसामी को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम जीवनी आधारित फ़िल्म का पुरस्कार हिन्दी फ़िल्म तीजनबाई को लोक नृत्य की सफल कहानी के चित्रांकन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST BIOGRAPHICAL FILM

TEEJAN BAI (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Producer **KULDEEP SINHA, FILMS DIVISION**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Director **V. PACKIRISAMY**

CITATION

The award for the Best Biographical Film of 2001 is given to the Hindi film Teejan Bai for the portrayal of the success story of the folk artist.

वी. पकीरीसामी

तमिलनाडु के छोटे से गाँव से अर्थशास्त्र स्नातक वी. पकीरीसामी फ़िल्म एवं टेलीविजन संस्थान, तमिलनाडु से फ़िल्म निर्देशन और पटकथा लेखन में प्रशिक्षण प्राप्त हैं। उन्होंने फ़िल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे में थोड़े समय तक कार्य करने से पहले विभिन्न निर्देशकों के सहायक से रूप में भी कार्य किया है। उन्होंने फ़िल्म प्रभाग में निदेशक का पद सन 1991 में ग्रहण किया। वे बहुत से सामाजिक वृत्तचित्र बना चुके हैं।

V. PACKIRISAMY

An economics graduate from a small Tamil Nadu village, V. Packirisamy trained in Film Direction and Screenplay Writing in Film and Television Institute, Tamil Nadu. He worked as an assistant to various directors before a short stint at Film and Television Institute, Pune. He joined Films Division as Director in 1991. He has made several socially relevant documentaries

कुलदीप सिन्हा

फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान से स्नातक करने के पश्चात् कुलदीप सिन्हा ने 1982 में फ़िल्म प्रभाग में निदेशक के पद पर कार्य शुरु किया। उन्होंने लगभग 75 फ़िल्में बनाईं जिसके लिए उन्हें राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति मिली उन्हें पाँच बार राष्ट्रीय पुरस्कारों के साथ-साथ बर्लिन और बेलग्रेड में होने वाले फ़िल्म समारोहों में भी पुरस्कृत किया जा चुका है। उन्होंने 'कशीश' नामक कहानी संग्रह एवं 'पटकथा लेखन के तत्त्व' नामक पुस्तक भी लिखी है।

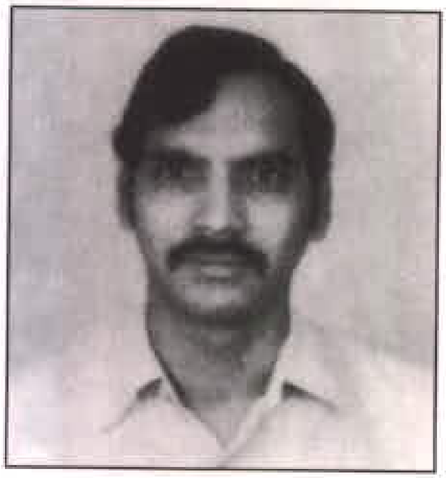

KULDEEP SINHA

After graduating from the Film and Television Institute, Kuldeep Sinha joined Films Division in 1982 as a Director. He has made about 75 films, for which he has won acclaim and awards nationally and internationally. He has already won the National Award five times besides being awarded at awarded at film festivals in Berlin, Belgrade and Santaram among others. He has written a collection of stories called *Kashish* and a book on screenplay called *Patkatha Lekan Ke Tatva.*

सर्वोत्तम पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण फ़िल्म

द होली गंगा (हिन्दी)

निर्माताः वाई. एन. इंजीनियर, फ़िल्म प्रभाग को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशकः विप्लव भाटिया को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण फ़िल्म का पुरस्कार हिन्दी फ़िल्म 'द होली गंगा' को दिया गया है जिसमें विचारोत्तेजकता के सार के साथ भक्तों को सच्चाई से अवगत कराया गया है कि गंगा के साथ कितनी बुरी तरह से बर्ताव किया जाता है।

AWARD FOR THE BEST ENVIRONMENT/CONSERVATION/ PRESERVATION FILM (Including awareness)

THE HOLY GANGA (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Producer **Y.N. ENGINEER, FILMS DIVISION**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Director **VIPLOVE BHATIA**

CITATION

The award for the Best Environment/ Conservation/ Preservation film of 2001 is given to the Hindi film The Holy Ganga for its thought provoking content which makes the viewers realize how badly the Ganga is treated.

विप्लव भाटिया

सन 1992 से फ़िल्म प्रभाग में निदेशक विपलव भाटिया ने राज्य चलचित्रिकी संस्थान, मास्को से निर्देशन में डिग्री ली थी। वह चार वर्षों तक शशि कपूर की फ़िल्मवालाज के साथ भी संबद्ध रहीं। फ़िल्म प्रभाग में उन्होंने बहुत सी नई मैगज़ीनें एवं वृत्तचित्र बनाए। उनकी फ़िल्म "*साइकल ऑफ लाइफ*" सन 1996 में बी आई एफ एफ में शामिल हुई।

VIPLOVE BHATIA

A Director at Films Division since 1992, Viplove Bhatia took her degree in direction from the State Institute of Cinematography, Moscow. She was also associated with Shashi Kapoor's Filmvalas for four years. At Films Division, she has made a number of news magazines and documentaries. Her film, *Cycle of Life*, was entered for BIFF in 1996.

वाई.एन.इंजीनियर

चलचित्र फोटोग्राफी में डिप्लोमा प्राप्त वाई.एन.इंजीनियर, भारतीय फ़िल्म एवं टेलीविज़न संस्थान, पुणे, के पूर्व छात्र हैं। दूरदर्शन में कैमरामैन की सेवा प्राप्त करने से पहले उन्होंने सिनेमैटोग्राफर जाल मिस्त्री के सहायक के रूप में काम किया। सन 1978 से वह 50 से अधिक वृत्त चित्र निर्देशित कर चुके हैं। मिलान फ़िल्म समारोह में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करने के अतिरिक्त वह अनेक राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।

Y. N. ENGINEER

A diploma holder in motion picture photography from the Film and Television Institute of India, Pune, Y.N. Engineer worked as an assistant to cinematographer Jal Mistry before joining Doordarshan as a cameraman. Since 1978, he has made more than 50 documentaries for the Films Division as Director. From 1990, he has been associated with more than 200 news magazines, documentaries and short films as Producer. He has won an international award from Milan and numerous National Awards.

सर्वोत्तम संवर्धनात्मक फ़िल्म

इन सर्च ऑफ मुगा सिल्क

निर्माताः वाई. एन. इंजीनियर, फ़िल्म प्रभाग को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशकः के जी दास को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम संवर्धनात्मक फ़िल्म का पुरस्कार अंग्रेजी फ़िल्म इन सर्च ऑफ मुगा सिल्क को दिया गया जिसमें असम की मुगासिल्क बुनाई की अनोखी कला का सुंदर चित्रण किया है।

AWARD FOR THE BEST PROMOTIONAL FILM (to cover tourism exports, crafts, industry etc.)

IN SEARCH OF MUGA SILK

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Producer **Y.N. ENGINEER, FILMS DIVISION**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Director **K.G. DAS**

CITATION

The award for the Best Promotional Film of 2001 is given to the English film In Search of Muga Silk for depicting the unique art of Muga silk weaving of Assam.

वाई.एन.इंजीनियर

चलचित्र फोटोग्राफी में डिप्लोमा प्राप्त वाई.एन.इंजीनियर, भारतीय फ़िल्म एवं टेलीविज़न संस्थान, पुणे, के पूर्व छात्र हैं। दूरदर्शन में कैमरामैन की सेवा प्राप्त करने से पहले उन्होंने सिनेमैटोग्राफर जाल मिस्त्री के सहायक के रूप में काम किया। सन 1978 से वह 50 से अधिक वृत्त चित्र निर्देशित कर चुके हैं। मिलान फ़िल्म समारोह में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करने के अतिरिक्त वह अनेक राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।

Y. N. ENGINEER

A diploma holder in motion picture photography from the Film and Television Institute of India, Pune, Y.N. Engineer worked as an assistant to cinematographer Jal Mistry before joining Doordarshan as a cameraman. Since 1978, he has made more than 50 documentaries for the Films Division as Director. From 1990, he has been associated with more than 200 news magazines, documentaries and short films as Producer. He has won an international award from Milan and numerous National Awards.

के.जी.दास

कोलकाता विश्वविद्यालय से स्नातक, के.जी.दास, पश्चिम बंगाल के कई प्रसिद्ध फ़िल्मकारों के साथ काम कर चुके हैं। उन्होंने स्वयं फिल्म्स डिवीज़न में सेवा के दौरान अनेक वृत्त चित्रों और फ़ीचर फ़िल्मों का निर्माण किया। उन की फ़िल्में 'गौरीशंकर रॉय' और 'नब कलेवर' 1996 और 1997 में भारतीय पैनोरमा में चुनी गईं।

K.G. DAS

A graduate from the Calcutta University, K.G. Das has worked with several eminent film directors in West Bengal as assistant or associate director. He has himself directed several documentary and feature films for the Films Division, which he joined in 1989. His films Karamveer Gourishankar Roy and Nabakalebar were part of the Indian Panorama in 1996 and 1997 respectively.

सामाजिक मुद्दों से जुड़ी फ़िल्म का पुरस्कार

ए न्यू पैराडाइम (अंग्रेजी)

निर्माता: अरुणा राजे पाटिल को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक: अरुणा राजे पाटिल को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सामाजिक मुद्दों पर बनी फ़िल्म का पुरस्कार अंग्रेजी फ़िल्म ए न्यू पैराडाइम को दिया गया है जिसमें शारीरिक एवं मानसिक विकलांगता से पीड़ीतों के लिए एक अध्यापक द्वारा उनको समाज में स्थान दिलाने का प्रयास किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON SOCIAL ISSUES (Such as prohibition, women and child welfare, and dowry, drug abuse, Welfare of the handicapped etc.)

A NEW PARADIGM (English)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Producer **ARUNA RAJE PATIL**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Director **ARUNA RAJE PATIL**

CITATION

The award for the Best Film on Social Issues of 2001 is given to the English film A New Paradigm for dealing with the lives of the mentally challenged, the trauma of their relatives and the endless effort of the teachers to bring hope to this segment of the society.

अरुणा राजे पाटिल

अरुणा राजे पाटिल फ़िल्मों में नारी के चित्रण के लिये जानी जाती हैं। भारतीय फ़िल्म एवं टेलीविज़न संस्थान से गोल्ड मैडल विजेता, अरुणा का संबंध फ़िल्मों से बतौर निर्देशक, संपादक, निर्माता और लेखिका के रूप में रहा है। उन्होंने सात फ़ीचर फ़िल्मों- *शक, गहराई, सितम, रिहाई, पतित पावन, पतिता पावनी,* और *भैरवी* जैसी प्रसिद्ध फ़िल्मों का निर्माण किया है। उन्होंने टेली फ़िल्म '*कह दो ना*' और अनेक वृत्त चित्रों, 100 से अधिक विज्ञापन फ़िल्मों और तीन टेलीविज़न धारावाहिकों का निर्माण किया है। संपादक के रूप में अरुणा ने *वंश वृक्ष, गिद्ध, मासूम* और *फणियम्मा* आदि फ़िल्मों में काम किया है।

ARUNA RAJE PATIL

A widely respected filmmaker, Aruna Raje Patil's films have been known for the especially strong portrayal of women. A gold medallist in editing from the Film and Television Institute, Pune, she has been associated with film as a director, editor, producer and scriptwriter. She has directed seven feature films, *Shaque, Gehrayee, Situm, Rihaee, Patita Pavana, Patita Pavani* and *Bhairavi*, which have been critically acclaimed and received awards. She has also made a telefilm called *Keh Do Naa* and a number of documentaries and short films. She has made about 100 advertising films and three serials for television. As editor , she has worked on some of India's most acclaimed films like *Vamsha Vriksa, Giddh, Masoom* and *Phaniyamma* among others.

सर्वोत्तम शैक्षणिक/प्रेरक/अनुदेशात्मक फ़िल्म का पुरस्कार

कनावु मलाइलेक्कू (मलयालम)

निर्माता: टॉमी मैथ्यू को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक: एम. जी. ससी को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम शैक्षणिक/प्रेरक/अनुदेशात्मक फ़िल्म का पुरस्कार मलयालम फ़िल्म कनवु मलाईलेक्कू को दिया गया है जिसमें जनजातियों एवं उनके बच्चों की गरिमा को दर्शाया है।

AWARD FOR THE BEST EDUCATIONAL/ MOTIVATIONAL/ INSTRUCTIONAL FILM

KANAVU MALAYILEKKU (Malayalam)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Producer **TOMY MATHEW**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Director **M.G. SASI**

CITATION

The award for the Best Educational/Motivational Film of 2001 is given to the Malayalam film Kanavu Malayilekku for its attempt to reassert the tribal identity and impart a sense of dignity to tribal children.

टॉमी मैथ्यू

केरल निवासी टॉमी मैथ्यू *'कनवु मलाईलेक्कू'* के साथ ही निर्माता के रूप में आए हैं। उनके गैर फ़िल्मी कैरियर के विस्तृत क्षेत्रों में पत्रकारिता, पर्यावरण समस्याएं एवं नीतिशास्त्र मुख्य हैं। वह पटभेदम के संस्थापक एवं संपादक भी हैं। *कनवु मलाईलेक्कू* सर्वोत्तम वृत्तचित्र फ़िल्म के लिए वर्ष 2001 का जॉन अब्राहम पुरस्कार ग्रहण कर चुकी है और वे स्वयं सर्वोत्तम वृत्तचित्र का वर्ष 2001 का केरल राज्य पुरस्कार भी जीत चुके हैं।

TOMY MATHEW

Kerala-based Tomy Mathew turned producer with *Kanavu Malayilekku*. His non-film career spans areas of journalism, environmental issues and ethical and environment-friendly business concerns. He is also the founder editor of *Patabhedam*, an avant-garde Malayalam journal committed to counter culture based on tenets of ecology, peace and pluralism. *Kanavu Malayilekku* has won the John Abraham Award for the best documentary film for 2001 and the Kerala State award for best documentary for 2001.

एम. जी. ससी

केरल निवासी अभिनेता, निर्देशक और निर्माता एम. जी. ससी, काफी समय से फ़िल्म एवं थिएटर से संबद्ध हैं। अपनी प्रथम निर्देशित फ़िल्म *कनावु मलाईलेक्कू* पर काम करने से पहले वे पुरस्कार विजित फ़िल्मों के बहुत से प्रसिद्ध निर्देशकों के सहायक के रूप में काम कर चुके हैं। वे टी.वी. चन्द्रन, पी.टी. कुनई मुहम्मद, जयराज एवं श्यामा प्रसाद जैसे कलाकारों के साथ काम कर चुके हैं। उनके द्वारा सह-निर्मित फ़िल्म *निकावु अरियुनु* वर्ष 1995 की सर्वोत्तम टेलीफिल्म के लिए ओनीडा पिनाकल पुरस्कार जीत चुकी है।

M.G. SASI

An actor, director and producer, Kerala-based M G Sasi has been long associated with films and theatre. Before working on his debut directorial venture, *Kanavu Malayilekhu*, he has assisted many a renowned director on award winning films. He has worked with T.V. Chandran, P.T. Kunhu Muhammed, Jayaraj and Shyama Prasad. *Nilavu Ariyunu*, a telefilm he co-produced, won the Onida Pinnacle Award for best telefilm in 1995.

सर्वोत्तम खोज प्रधान फ़िल्म

कालाहांडी उड़िया/अंग्रेजी

निर्माता: सौदामिनी मिश्रा को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक: गौतम घोष को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 की सर्वश्रेष्ठ खोज प्रधान फ़िल्म का पुरस्कार उड़िया/अंग्रेजी फ़िल्म कालाहांडी को दिया गया है जिसमें उड़ीसा के पिछड़े क्षेत्रों में से एक विशेष क्षेत्र की गरीबी एवं राज्य की उदासीनता को अत्यंत साहसिकता से दर्शाया है।

AWARD FOR THE BEST INVESTIGATIVE FILM

KALAHANDI (Oriya/English)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Producer **SOUDAMINI MISHRA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Director **GOUTAM GHOSH**

CITATION

The award for the Best Investigative Film of 2001 is given to the Oriya/English film Kalahandi for its courageous expose' of endemic poverty in this backward region of Orissa and the state's apathy to it.

सौदामिनी मिश्रा

उडिया फ़िल्म उद्योग की अनुभवी अभिनेत्री सौदामिनी मिश्रा पिछले तीन दशकों से अभिनय कर रही हैं। वह फ़िल्म बनाने के दूसरी स्वरूपों जैसे निर्देशन, निर्माण एवं संवाद लेखन से भी संबद्ध हैं। वे पहले अतिबादी जगन्नाथ दास एवं *मोनुमेंट्स ऑफ उडीसा* वृत्तचित्रों का निर्माण कर चुकी हैं। वह टेलीविजन के लिए लोकप्रिय धारावाहिक *साधुसाबधान* एवं कोरापुट की बाँडा जनजाति पर काम कर चुकी हैं।

SOUDAMINI MISHRA

A veteran actress of the Oriya film industry, Soudamini Mishra has been acting for the last three decades. She has also been associated with other aspects of filmcraft like direction, production and dialogue writing. She has earlier produced documentaries including *Atibadi Jagannath Das* and *Monuments of Orissa*. Her work on television includes the popular serial *Sadhusabadhan* and a series on the Bonda tribe of Koraput.

गौतम घोष

भारत के जाने माने निर्देशकों में एक घोष अपनी फ़िल्मों में यथार्थवाद का समझौता रहित चित्रांकन करने के लिए प्रसिद्ध हैं। उनके विषयों में प्रायः अतिसीमान्तता, महाकाव्यों का संघर्ष एवं संभाव्यता से युद्धों का चित्रण मिलता है। फरीदपुर में जन्में घोष एक सक्रिय प्रतिभागी विद्यार्थी थे। उन्होंने अपना कार्य एक स्वतंत्र पत्रकार एवं समाज अनुगृहित थिएटर निर्देशक के रूप में शुरू किया था। पौराणिक वृत्तचित्र निर्माता, सुखदेव से प्रभावित होकर उन्होंने अपनी फोटो पत्रकारिता के लिए वृत्तचित्रों का बनाना भी शुरू किया। उन्होंने अपनी पहली फ़िल्म का प्रदर्शन 'तेलंगाना अपराइज़िंग' पर 1979 में बनी तेलुगु फ़िल्म *माँ भूमि* के साथ किया। इस फ़िल्म से उन्हें काफी लोकप्रियता मिली और अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्मों के लिए उन्होंने फ़िल्में *दाखल* (1981) और *पार* (1984) बनाईं। उनकी फ़िल्में जैसे *पदमा नाजिर मजही* (1992), *पतंगा* (1993) और *देखा* (2001) काफी लोकप्रिय रहीं। उन्होंने फ़िल्मों में अभिनय तथा संगीत निर्देशन का कार्य भी किया है।

GOUTAM GHOSE

One of India's most acclaimed directors, Ghose is best known for the uncompromising realism he brings to his films. His subjects are often the most marginalised, struggling in their epic, unsung battles against odds. Born in Faridpur, he was an active student activist. He started working as a freelance journalist and a fringe theatre director. Influenced by the legendary documentary filmmaker, Sukhdev, he started making documentaries as an aside to his photojournalism. He made his debut feature on the Telengana Uprising, *Maabhoomi* (1979) in Telugu. The film brought him much acclaim, and his next feature, *Dakhal* (1981) and *Paar* (1984) made him a fixture in international film circles. Though he has made comparatively few film, almost all of them gave got widespread accolades, especially *Antarjali Yatra* (1987), *Padma Nadir Majhi* (1992), *Patang* (1993) and *Dekha* (2001). He has also acted in and composed music for films.

सर्वोत्तम एनीमेशन फ़िल्म का पुरस्कार

द पिंक कैमल (हिन्दी)

निर्माताः पौशाली गांगुली को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशकः पौशाली गांगुली को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम एनीमेशन फ़िल्म का पुरस्कार हिन्दी फ़िल्म द पिंक कैमल को दिया गया है जिसमें रूचिपूर्ण व्यंग्यचित्रों के माध्यम से दर्शकों को अन्धविश्वासों से अवगत कराया है।

AWARD FOR THE BEST ANIMATION FILM

THE PINK CAMEL (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Producer **CHILDREN'S FILM SOCIETY OF INDIA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Director **PAUSHALI GANGULI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Animator **PAUSHALI GANGULY**

CITATION

The award for the Best Animation Film of 2001 is given to the Hindi film The Pink Camel for interesting animation, enlightening the viewers against superstitions.

पौशाली गांगुली

स्वतंत्र लेखिका और प्रस्तुति सहायिका पौशाली गांगुली एक दशक से अधिक समय से काम कर रही हैं। इतिहास में स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त करने के साथ ही उन्हें फोरम ऑफ फ्री एन्टरप्राइज़ द्वारा आयोजित लीडरशिप ट्रेनिंग कैंप में भाग लेने का मौका मिला। उन्होंने चैनल वी. और एम टीवी के लिये कई ऐनीमेशन फ़िल्मों का निर्माण किया है।

PAUSHALI GANGULI

Freelance writer and production assistant, Paushali Ganguly has been working in the field for about a decade. A postgraduate in history, she was selected to represent her college in the Leadership Training Camp conducted by the Forum of Free Enterprise. She has conceived and designed promotion campaigns for Channel [V] and BPL Oye and made three animation films for MTV.

विशेष ज्यूरी पुरस्कार

ऑरकेस्ट्रा (हिन्दी)

निर्माताः किरीत खुराना को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशकः भीमसेन को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का विशेष ज्यूरी पुरस्कार निर्देशक भीमसेन को हिन्दी फिल्म ऑरकेस्ट्रा को ध्वनि एवं संगीत उपकरणों के व्यंगात्मक प्रतिरूप को समकालीन प्रयोग के माध्यम से राष्ट्रीय एकता के सन्देश को प्रभावी ढंग से दर्शाने हेतु दिया गया है।

SPECIAL JURY AWARD

ORCHESTRA (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Producer **KIREET KHURANA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Director **BHIMSAIN**

CITATION

Special Jury Award for 2001 is given to the Director Bhimsain for the Hindi film *Orchestra* for effectively conveying the message of national integration through synchronous use of sound and animated images of musical instruments.

किरीट खुराना

निर्देशक, निर्माता, किरीट खुराना कनाडा के शैरिडन कालेज से शिक्षित हैं। अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय प्रौजैक्ट्स पर काम करने वाले किरीट कई ऐनीमेशन फ़िल्मों का निर्माण कर चुके हैं। उन की फ़िल्में- *द लव, नेक्टर, अल्फाकैट, सीमा* और *ऑनकोर* कई समारोहों में दिखाई जा चुकी हैं। उन की लघु ऐनीमेशन फ़िल्म 'ट्रेड' को सर्वोत्तम ऐनीमेशन के लिये राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है। उन्होंने दूरदर्शन के लिये भी 'वर्तमान' नामक ऐनीमेशन सीरीज़ का निर्माण किया है।

KIREET KHURANA

Director, producer and animator, Kireet Khurana has a Classical Animation degree from Sheridan College, Canada. Besides working on several national and international productions Khurana has also directed several animation films independently. His films, *The Love Nectar, Alphacat, Seema* and *Encore*, were shown at many festivals. His short animation film, *Trade*, received the National Award for the Best Animation Film. He has also bagged the award for *Mahagiri*. He has made an animation series for Doordarshan called *Vartmaan*.

भीमसैन

भारतीय ऐनीमेशन के जनक माने जाने वाले भीमसैन ने अनेक ऐनीमेशन और विज्ञापन फ़िल्मों का निर्माण करने के बाद फ़ीचर फ़िल्मों का निर्माण किया। भीमसैन ने कई सफल फ़ीचर फ़िल्में जैसे *घरौंदा, दूरियाँ* और *तुम लौट आओ* बनाने के अलावा कई टेलीविज़न धारावाहिकों जैसे छोटी बड़ी बातें आदि का निर्माण किया। इस के अतिरिक्त उन्होंने कई वृत्तचित्रों जैसे शादी शादी, जीवन रहस्य, सेतु और रौशनी आदि का भी निर्माण किया। भीमसैन कई अंतर्राष्ट्रीय चयन मंडलों में सदस्य रह चुके हैं।

BHIMSAIN

Hailed as a pioneer of Indian animation, Bhimsain has produced and directed several animation and ad films before diversifying into feature film production. After making successful feature films like *Gharaonda, Dooriyan* and *Tum Laut Aao*, Bhimsain made several programmes for television, including the popular Chhoti Badi Baatein. He also made a number of documentaries, of which *Shaadi Shaadi, Jeevan Rahasya, Setu* and *Roshni* were especially acclaimed. Bhimsain has served on several international juries for animation films and won awards from diverse quarters.

सर्वोत्तम लघुकाल्पनिक फ़िल्म का पुरस्कार

चैत्र (मराठी)

निर्माता: निदेशक भारतीय फ़िल्म एवं टेलीविजन संस्थान को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक: क्रांति कानडे को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वश्रेष्ठ लघु काल्पनिक फिल्म का पुरस्कार मराठी फिल्म चैत्र में हल्दी एवं कुमकुम के प्रयोग का पुराने रीतिरिवाजों के अनुसार मानवीय संबंधों का बहुत सुन्दर चित्रण किया है।

AWARD FOR THE BEST SHORT FICTION FILM

CHAITRA (Marathi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Producer **DIRECTOR, FILM & TELEVISION INSTITUTE OF INDIA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Director **KRANTI KANADE**

CITATION

The award for the Best Short Fiction Film of 2001 is given to the Marathi film Chaitra for beautifully exploring human relations centred around an age-old ritual of Haldi and Kumkum.

क्रांति कानडे

सन 1976 में महाराष्ट्र के येवला गाँव में जन्में क्रांति ने फर्गुसन कालेज, पुणे, से समाज शास्त्र में स्नातक की डिग्री ली। सन् 1997 में भारतीय फ़िल्म एवं टेलीविज़न संस्थान से निकले क्रांति की 'चैत्र' पहली फ़िल्म है।

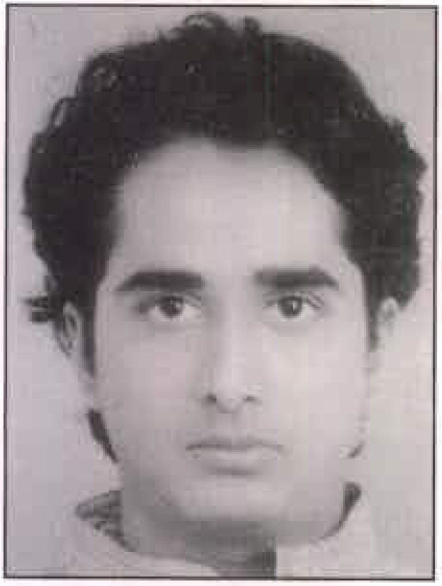

KRANTI KANADE

Kranti Kanade was born in 1976 in Yeola village of Maharashtra's Nasik district. After completing his BA in Sociology and Philosophy at Fergusson College, Pune University, he entered the Film and Television Institute of India in 1997. *Chaitra* is his graduation film.

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फ़िल्म

सायांथाना थिन्ते पाड़ावुकल (मलयालम)

निर्माताः रतीश रमैया को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशकः सतीश वेंगनूर को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फ़िल्म का पुरस्कार मलयालम फ़िल्म सायांथाना थिन्ते पाड़ावुकल को दिया गया है जिसमें वृद्धों की उनके परिवार द्वारा की गई दुर्दशा का गंभीरतापूर्वक चित्रण किया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON FAMILY WELFARE

SAYANTHANA THINTE PADAVUKAL (Malayalam)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Producer **RATHEESH RAMAYYA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Director **SATHEESH VENGANOOR**

CITATION

The award for the Best Film on Family Welfare of 2001 is given to Malayalam film Sayante Thinte Padavukal for sensitive portrayal of the plight of the aged who are neglected by their families.

रतीश रमैया

इलैक्ट्रानिक इंजीनियरिंग, वीडियोग्राफी और फोटोग्राफी में डिप्लोमा प्राप्त करने के बाद रतीश ने सहायक निर्देशक के रूप में कार्य शुरू किया। तब से वे अनेक वृत्त चित्रों आदि का निर्माण कर चुके हैं। उनके वृत्त चित्रों में क्राइम स्टॉपर और सर्व शिवमयं प्रमुख हैं। वे मार्च 2003 में एक तमिल फ़िल्म 'विन्नाई थंडी वरूवय' का निर्माण कर रहे हैं।

RATHEESH RAMAYYA

After completing his diploma in electronic engineering, videography and photography, Ratheesh Ramayya started his film career in 1996 as an assistant director. He has since produced various documantaries and special programmes for Doordarshan. Among the documentaries he has produced are Crime Stopper and Sarvam Sivamayam. He has also produced the Tamil feature film, Vinnai Thandi Varuvaya, to be released in March 2003

सतीश वेंगनूर

फिल्म निर्माता एवं थिएटर से जुडे सतीश वेंगनूर विभिन्न पदों की हैसियत से रंगमंच एवं सिनेमा से संबद्ध हैं। 15 वर्षों तक इन क्षेत्रों में काम करने के बाद उन्होंने निर्देशक, लेखक, कैमरामैन तथा अभिनय के क्षेत्र में भी काम किया। उन्होंने बहुत से पुरस्कार जीते जिनमें फ़िल्म "कोचानियान" को निर्देशन के लिए वर्ष 1995 का राष्ट्रीय पुरस्कार भी शामिल है जो कि सर्वोत्तम बाल फ़िल्म थी।

SATHEESH VENGANOOR

Filmmaker and theatre personality, Satheesh Venganoor has been associated with the stage and cinema in various capacities. The 15 years he has spent in these fields have seen him work as director, scriptwriter, cameraman and actor. He has won numerous awards including the National Award in 1995 for directing *Kochaniyan*, which was adjudged the Best Children's Film that year.

सर्वोत्तम निर्देशन का पुरस्कार

बुद्धदेव दास गुप्ता

निर्देशकः बुद्धदेव दास गुप्ता को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम निर्देशन का पुरस्कार फिल्म 'जोड़ाशांको ठाकुरबाड़ी' को दिया गया है जिसमें टैगोर के मकान का ऐतिहासिक चित्रण सुंदरता से किया गया।

AWARD FOR THE BEST DIRECTION

BUDDHADEB DASGUPTA

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Director **BUDDHADEB DASGUPTA**

CITATION

The award for the Best Direction for the Year 2001 is given to Buddhadeb Dasgupta for the film Jorasanko Thakurbari for artistically unfolding the history of the house of the Tagores.

बुद्धदेव दास गुप्ता

अर्थशास्त्र के प्रोफेसर बुद्धदेव दास गुप्ता को आज बहुत से फ़िल्म समीक्षक भारत के जाने माने निर्देशकों में गिनते हैं उनकी फ़िल्म निर्माता के रूप में जितनी पहचान गीतात्मक काव्यों में हुई उतनी ही पहचान समाज सम्बन्धी वचारों को पेश करने में भी हुई। उनकी फ़िल्मों ने उन्हें कामयाबी की बुलंदियों की ओर पहुंचाया। उनकी प्रारंभिक फ़िल्मों में *दूरत्वा* 1978 *गृहयुद्ध* 1981 एवं *अंधी गली* 1984 ने उन्हें एक निर्देशक के रूप में स्थापित किया। उसके बाद उनको बहुत सी फ़िल्में मिली जिनमें *पहरा* 1986, *बाग बहादुर* 1989, *तहादेर कथे* 1992, *चराचर* 1993, *लाल दर्जा* 1996, *उत्तरा* 2002 एवं वर्तमान फ़िल्म *मंद मैयेर उपाख्यान* 2002 प्रमुख हैं। बहुप्रतिभाशाली दास गुप्ता ने 1978 तक पढाने का कार्य किया। उसके बाद वे पहले एक कवि के रूप में मशहूर हुए। उनके उपन्यासों का बंगाल के समकालीन साहित्य में विशेष स्थान है उनके वृत्तचित्र भी काफी लोकप्रिय रहे हैं। उन पर तीन पुस्तकें पहले ही लिखी जा चुकी हैं। उन्हें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार नियमित रूप से मिलते रहे हैं और उनकी फ़िल्मों ने दुनिया भर में होने वाले फ़िल्म समारोहों में भी पुरस्कार के रूप में धन अर्जित किया है।

BUDDHADEB DASGUPTA

An economics professor by training, many critics consider Buddhadeb Dasgupta to be India's foremost director today. His reputation as a filmmaker rests as much on the lyrical poetry of the film as much on the social relevant themes he highlights. His films have seen him grow from strength to strength. His initial films, *Dooratwa* (1978), *Grihajuddha* (1981) and *Andhi Gali* (1984) formed a trilogy that served to establish him as a director to look out for. And that promise has been amply fulfilled in his later body of work, *Phera* (1986), *Bagh Bahadur* (1989), *Tahader Katha* (1992), *Charachar* (1993), *Lal Darja* (1996), *Uttara* (2000) and his latest *Mondo Meyer Upakhayan* (2002). A multi-talented person, he continued to teach till 1978. By then he had already become famous as a poet of repute. His novels have a special place in Bengal's contemporary literature. His documentaries have been no less celebrated. Three books have already been written on him. National and international accolades have regularly come his way, and his films are prized commodities at film festivals globally.

सर्वोत्तम छायांकन का पुरस्कार

नीलोत्पल सरकार एवं इरोम मैकपाक

कैमरामैन नीलोत्पल सरकार को (फिल्म जोड़ाशंको ठाकुरबाड़ी के लिए) रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

कैमरामैन ईरोम मैपाक को (द मोनपास ऑफ अरूणाचल प्रदेश के लिए) रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रसाद लैब, चेन्नई को (फिल्म 'जोड़ाशंको ठाकुरबाड़ी' के लिए)

प्रसाद कलिंगा लैब, भुवनेश्वर को (फिल्म द मोनपास ऑफ अरूणाचल प्रदेश के लिए)

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वश्रेष्ठ छायांकन का पुरस्कार निलोटपाल सरकार को फ़िल्म जोड़ाशंको ठाकुरबाड़ी में किए टैगोर के ऐतिहासिक घर के जीवन के सुचारू संचालन के माध्यम से प्रकाश एवं छाया के काल्पनिक प्रतिबिंबों को दर्शाने के लिए और ईरोम मैकपाक को फ़िल्म द मोनपास ऑफ अरूणाचल प्रदेश में उनके द्वारा अनियंत्रित परिस्थितियों में भी आकर्षक रूप से किए गए छायांकन के लिए संयुक्त रूप से प्रदान किया गया है।

AWARD FOR THE BEST CINEMATOGRAPHY

NILOTPAL SARKAR and IROM MAIPAK

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000/- each to Cameramen

NILOTPAL SARKAR *(for Jorasanko Thakurbari)* and

IROM MAIPAK *(for The Monpas of Arunachal Pradesh)*

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000/- each Laboratories processing the film:

Prasad Labs, Chennai for Jorasanko Thakurbari and

Prasad Kalinga Lab, Bhubaneshwar for The Monpas of Arunachal Pradesh

CITATION

The award for the Best Cinematography for 2001 is given jointly to Nilotpal Sarkar for the film Jorasanko Thakurbari for imaginatively capturing images in light and shade, through smooth movements to bring life to the historical house of the Tagores'and Irom Maipak for the film The Monpas of Arunachal Pradesh for his fascinating style of framing under uncontrolled situations.

नीलोत्पल सरकार

बंगला फ़िल्मोद्योग के प्रतिष्ठित सिनेमेटोग्राफर नीलोत्पल सरकार ने अनेक राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार विजित फ़िल्मों में काम किया है। नामी निर्देशकों के अलावा वह सत्यजित रॉय के प्रसिद्ध कैमरामैन शौमेन्दु रॉय के साथ भी काम कर चुके हैं।

NILOTPAL SARKAR

One of Bengali film industry's leading cinematographers, Nilotpal Sarkar has worked in many a National Award winning film earlier including *Ek Doctor Ki Maut, Antardhan, Charachar* and *Atmiya Swajan*. He has been associated with Satyajit Ray's famous cameraman, Soumyendu Roy, besides working with leading directors like Tapan Sinha, Buddhadeb Dasgupta and Raja Sen. He has also worked on National Award winning documentaries.

इरोम मैपाक

1969 में मणिपुर में जन्मे प्रतिभाशाली छायाकार इरोम मैपाक दस वर्षों से भी अधिक समय से फ़िल्म एवं टेलीविजन में काम कर रहे हैं। वह 30 से भी अधिक वीडियो फ़िल्मों के लिए काम कर चुके हैं और उन्हें इस कार्य के लिए ऑल मणिपुर वीडियो फ़िल्म समारोह द्वारा सम्मानित भी किया गया है। वे जाने-माने फ़िल्म निर्माता अरिबम शाम शर्मा के साथ सहायक कैमरामैन के रूप में भी संबद्ध रहे हैं। उन्होंने अपना अलग रास्ता बनाते हुए फ़िल्म द मोनपास ऑफ अरूणाचल प्रदेश का छायांकन किया।

IROM MAIPAK

Born in 1969, Irom Maipak, a talented cinematographer from Manipur has been working in films and television for more than a decade. He has shot more than 30 productions on video and has been awarded for his work the All Manipur Video Film Festival. Associated with noted filmmaker Aribam Syam Sharma as his assistant cameraman, he got his breakthrough when he shot his fist celluloid film, *The Monpas of Arunachal Pradesh*.

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन

अनूप मुखर्जी

अन्तिम मिश्रित ट्रैक के पुनः ध्वनि आलेखक अनूप मुखर्जी को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का पुरस्कार अनूप मुखर्जी को अंग्रेजी फ़िल्म "इनफ़ ऑफ़ साइलेंस" को नवीन ध्वनि ट्रैक के माध्यम से नई दिशा प्रदान करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST AUDIOGRAPHY

ANUP MUKHERJEE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Re-recordist of the final mixed track **ANUP MUKHERJEE**

CITATION

The award for the Best Audiography for the year 2001 is given to Anup Mukherjee for the English film Enough of Silence for adding a new dimension to the film through innovative sound track.

अनूप मुखर्जी

वरिष्ठ ध्वनि निर्देशक अनूप मुखर्जी ने सभी नामी निर्देशकों के साथ काम किया है। भारतीय फ़िल्म एवं टेलीविजन संस्थान पुणे से शिक्षा प्राप्त अनूप ने एरिया पैसिफिक इंस्टिटयूट फॉर ब्राडकास्टिंग डेवलपमेंट, क्वालालंपुर से भी शिक्षण प्राप्त किया। दूरदर्शन, एन.एफ.डी.सी. आदि में कार्य कर चुके अनूप सत्यजित रॉय फ़िल्म एवं टेलीविजन संस्थान में 'डीन' रह चुके हैं।

ANUP MUKHERJEE

Veteran audiographer Anup Mukherjee has worked with almost all the top names in Bengali cinema, ranging from Satyajit Ray, Mrinal Sen and Tapan Sinha to the next generation of filmmakers like Aparna Sen and Sandip Ray. A graduate of the Film and Television Institute, Pune, with specialisation in Sound Recording and Sound Engineering, he received further training at the Asia Pacific Institute for Broadcasting Development, Kuala Lumpur. He has since worked with organisations like Doordarshan and NFDC Film Centre. He has also served as Dean of Satyajit Ray Film and Television Institute, Kolkata.

सर्वोत्तम संपादन के लिए पुरस्कार

बी. अजित कुमार

सम्पादकः अजित को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम सम्पादन का पुरस्कार अजित को फ़िल्म 'आत्मन' के लिए दिया गया है जिसमें बिना कुछ बोले ही फ़िल्म की गति एवं कहानी को बनाए रखा है।

AWARD FOR THE BEST EDITING

B. AJITH KUMAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Editor **B. AJITH KUMAR**

CITATION

The award for the Best Editing for 2001 is given to B. Ajith Kumar for the film Athman for maintaining the pace and drama of the film without any spoken words.

बी. अजित कुमार

फिल्म और टेलीविजन संपादक अजित ने अपने शहर कोटमंगलम में शिक्षा प्राप्त करने के बाद भारतीय फ़िल्म एवं टेलीविजन संस्थान में प्रशिक्षण प्राप्त किया। बाद में उन्होंने मुंबई और फिर केरल में कई बड़े निर्देशकों के साथ काम किया।

B. AJITH KUMAR

A film and television editor, B. Ajithkumar pursued his studies in his hometown Kothamangalam and later Thiruvananthapuram before joining the Film and Television Institute of India, Pune for a diploma in cinema with a specialisation in editing. After passing out, he initially worked in Mumbai. He then shifted to Kerala, where he has worked with many top directors. He has also been occasionally directing films for the C-Dit, Thiruvananthapuram.

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का पुरस्कार

भास्कर चन्दावरकर

संगीत निर्देशक: भास्कर चन्दावरकर को रजत कमल और रुपये 10,000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का पुरस्कार भास्कर चन्दावरकर को मराठी फ़िल्म "चैत्र" के लिए दिया गया है जिसमें पारम्परिक संगीत का मिश्रण करते हुए फ़िल्म की विषयवस्तु को सौन्दर्य प्रदान किया है।

AWARD FOR THE BEST MUSIC DIRECTION

BHASKAR CHANDAVARKAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Music Director **BHASKAR CHANDAVARKAR**

CITATION

The award for the Best Music Direction for 2001 is given to Bhaskar Chandavarkar for the Marathi film Chaitra for creating traditional music that blends aesthetically with the theme of the film.

भास्कर चन्दावरकर

भारत के जाने-माने संगीत निर्देशक भास्कर चन्दावरकर ने लगभग सभी प्रसिद्ध फ़िल्मकारों और नाटककारों के साथ काम किया है। भारतीय शास्त्रीय संगीत, जाज और पाश्चात्य संगीत में पारंगत भास्कार भारतीय फ़िल्म और टेलीविजन संस्थान पुणे में वर्षों तक संगीत के शिक्षक रह चुके हैं। वे कलात्मक संगीत के लिये संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार भी जीत चुके हैं।

BHASKAR CHANDAVARKAR

One of India's most acclaimed directors of film music, Bhaskar Chandavarkar has had a long and illustrious career in which he has worked with some of the most renowned filmmakers. Trained in Hindustani classical singing and sitar, and later in contemporary western music including jazz, he has taught background music for many years at the Film and Television Institute, Pune. He is also visiting faculty member for music in a number of institutions around the world. He has also worked in theatre and has won the Sangeet Natak Academy Award for his contribution in creative music.

विशेष उल्लेख

ए. आर. त्रिपाठी एवं सोनाली कुलकर्णी

वर्ष 2001 के लिए विशेष उल्लेख ए. आर. त्रिपाठी को उनके द्वारा फ़िल्म कालाहांडी के लिए सावधानीपूर्वक चुने शब्दों के द्वारा फ़िल्म को नये आयाम देने के लिए कथनों की प्रस्तुति के लिए किया है और सोनाली कुलकर्णी को फ़िल्म "चैत्र" में उनके भावुकतापूर्ण अभिनय का कुशाग्रतापूर्वक प्रदर्शन किया है।

SPECIAL MENTION

A.B.TRIPATHY AND SONALI KULKARNI

Certificate of Written Narration to **A.B. TRIPATHY**

Certificate of Acting to **SONALI KULKARNI**

CITATION

The Special Mention for 2001 is made on written narration to A.R. Tripathi for the film Kalahandi for his carefully crafted words giving an additional dimension to the film and for Sonali Kulkarni for her acting in the film Chaitra for the subtle display of her wide range of emotions.

ए.बी. त्रिपाठी

उड़ीसा के सोनपुर जिले में जन्में त्रिपाठी भारतीय पुलिस सेवा में रह चुके हैं। अनेक सम्मानों के विजेता त्रिपाठी स्कॉटलैंड यार्ड और इंटरपोल के साथ काम कर चुके हैं। राष्ट्रपति पुलिस पदक विजेता ने काफी सामाजिक कार्य भी किया है। उड़िया पत्रों में लिखने वाले त्रिपाठी ने पहली बार फ़िल्म कालाहांडी के लिये लिखा है।

A.B.TRIPATHI

A former member of the Indian Police Service, A. B. Tripathy hails from Sonepur district of Orissa. His long and varied career has seen him serve the Orissa and India governments at various levels and capacities. Widely travelled, his work has also seen him attached to the Scotland Yard and Interpol. Winner of the President's Police Medal for Distinguished Service, he has been associated with several social activities in Orissa. A columnist in Oriya newspapers, he is currently involved in the quality of higher education in state among his other interests. His maiden venture into films was with the production of *Kalahandi*.

सोनाली कुलकर्णी

रंगमंच से अभिनय की शुरुआत करने वाली सोनाली कुशल संगीतज्ञ ओर राजनीति विज्ञान में स्नातक भी हैं। चेलुवी से फ़िल्म कैरियर की शुरुआत करने के बाद उन्होंने कई फ़िल्मों में काम किया है। उन्होंने मराठी नाटक 'चाहूल' के 160 से अधिक शो किये हैं। फ़िल्म 'दायरा' के लिये उन्हें वेलेन्सिया फ़िल्म समारोह में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार मिला।

SONALI KULKARNI

An early entrant to acting on stage, Sonali Kulkarni was fortunate to hone her skills under Satyadev Dubey. She won a number of state awards for her roles and also trained in classical singing, besides completing her graduation in Political Science and doing a diploma course in Bharatnatyam. She made her cinematic debut in *Cheluvi* and since then worked in a number of prestigious projects. She has done over 160 shows of the Marathi play *Chahool* and is part of Pune's Samanway theatre group. Awards have included one for Best Actress at Valenciennes Film Festival for *Daayra*.

गैर कथाचित्र पुरस्कार
जो नहीं दिए गए

सर्वोत्तम कला/संस्कृति फ़िल्म पुरस्कार
सर्वोत्तम वैज्ञानिक फ़िल्म पुरस्कार
सर्वोत्तम कृषि फ़िल्म पुरस्कार
सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निमाण एवं संकलन फ़िल्म
सर्वोत्तम अन्वेषणात्मक/रोमांचक फ़िल्म पुरस्कार

NON-FEATURE FILM AWARDS NOT GIVEN

AWARD FOR BEST ARTS / CULTURAL FILM
AWARD FOR BEST SCIENTIFIC FILM
AWARD FOR BEST AGRICULTURAL FILM
AWARD FOR BEST HISTORICAL RECONSTRUCTION/COMPILATION
AWARD FOR BEST EXPLORATION ADVENTURE

सिनेमा लेखन का पुरस्कार

Awards for writing on Cinema

सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन का पुरस्कार

असोमिया चलचित्रर छा-पोहर (असमिया) एवं मौलिक मराठी चित्र-गीत (मराठी)

लेखकों अपूर्व सर्मा एवं गंगाधर म्हाम्बरे प्रत्येक को स्वर्ण कमल और रुपये 7500/- का नकद पुरस्कार

प्रकाशकों ज्ञान पुजारी और राजीव डी बर्वे प्रत्येक को स्वर्ण कमल और रुपये 7500/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 की सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक लेखन का पुरस्कार असमिया फ़िल्म असोमिया चलचित्र छा-पोहर को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य के प्रसंग में असमिया सिनेमा के सर्वदृश्यों एवं तीक्ष्णतापूर्वक चित्रण के लिए तथा मौलिक मराठी चित्रगीत को फ़िल्मी गीतों के माध्यम से मराठी सिनेमा के विकास के सजीव एवं विशद वर्णन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST BOOK ON CINEMA

ASOMIYA CHALACHITRAR CHHA-POHAR (Assamese) AND MOULIK MARATHI CHITRAGEETE (Marathi)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 7,500/- each to the authors **APURBA SARMA AND GANGADHAR MAHAMBARE**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 7,500/- each to the publishers **JNAN PUJARI AND RAJEEV D BARVE**

CITATION

The award for the best book on cinema for 2001 goes to Asomiya Chalachitrar Chha-Pohar (Assamese) for its panoramic and incisive analysis of Assamese cinema in the context of national and international scenario and Moulik Marathi Chitrageete (Marathi) for its lucid, anecdotal narration of the growth of Marathi cinema through its film songs.

अपूर्व सर्मा

असम के एक चिर-परिचित समसामयिक लेखक अपूर्व का गद्य ताज़गी और जीवंतता से परिपूर्ण है। असम के एक प्रसिद्ध फ़िल्म आलोचक की यह पुस्तक असोमियां चलचित्रार छा-पोहार असमिया फ़िल्म उद्योग की अच्छी पुस्तकों में से है। वे आजकल नोगाँव बालिका विद्यालय में प्राध्यापक हैं।

APURBA SARMA

One of Assam's most important contemporary short story writers, Apurba Sarma's prose is characterised by a freshness and passion that are rare in Indian fiction today. He is also one of Assam's best known film critics and his book, *Asomiya Chalachitrar Chha-Pohar,* has been widely acknowledged as one of the best books on the film industry in Assam. Sarma is currently the Principal of Nowgong Girls' College, Nagaon.

गंगाधर म्हाम्बरे

प्रसिद्ध मराठी कवि और लेखक हैं गंगाधर म्हाम्बरे। वे भारतीय सिने जगत के पिता दादासाहिब फाल्के की जीवनी के लेखक हैं। भारतीय फ़िल्म संस्थान के लाइब्रेरियन होने के साथ इस पुस्तकालय को बनाने का श्रेय भी उन्हें प्राप्त है। कई पदकों के विजेता म्हाम्बरे महाराष्ट्र सरकार विश्व शब्दकोष के विज़िटिंग ऐडिटर भी हैं।

GANGADHAR MAHAMBARE

A multi-talented person, Gangadhar Mahambare is a well known Marathi poet and author. He has penned a biography of the pioneer of Indian cinema, Dadasaheb Phalke. As the first Librarian of the Film Institute of India, he was instrumental in building the Institute's library. Winner of many awards, Mahambare has been visiting editor of Maharashtra Government's World Encyclopaedia.

सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक का पुरस्कार

विनोद अनुपम (हिन्दी)

हिन्दी फ़िल्म समीक्षक विनोद अनुपम को स्वर्ण कमल और रुपये 15000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2001 का सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक का पुरस्कार विनोद अनुपम (हिन्दी) को दिया गया है। उन्होंने हिन्दी सिनेमा के पर्दे से ग्रामीण पृष्ठभूमि के लगभग ग़ायब होने और आतंकवाद को गौरवशाली रूप में प्रस्तुत किये जाने पर प्रश्न चिन्ह लगाया।

AWARD FOR THE BEST FILM CRITIC 2001

VINOD ANUPAM (Hindi)

Swarna Kamal and cash prize of Rs. 15,000/- to **VINOD ANUPAM**

CITATION

Award for the Best Film Critic 2001 goes to Vinod Anupam (Hindi) for the deep insight and social concern reflected in his questioning of phenomenon as varied as the disappearance of villages from the Hindi screen and the glorification of terrorism.

विनोद अनुपम

कला में स्नातकोत्तर और पेशे से सिविल इंजीनियर विनोद अनुपम फ़िल्म पत्रकारिता से काफी समय से जुड़े रहे हैं। उन्होंने काफी समय हिन्दुस्तान और दैनिक आज में फ़िल्मों पर टिप्पणियाँ कीं। उन्होंने लगातार अन्य पत्रिकाओं के लिये फ़िल्मों पर कॉलम लिखे हैं। साथ ही उन्होंने कई धारावाहिकों और वृत्तचित्रों के लिये स्क्रिप्ट भी लिखी हैं।

VINOD ANUPAM

A Postgraduate in Arts and a civil engineer by training, Vinod Anupam has been associated with film journalism for an extended period. He has had fairly long stints at *Hindustan* and *Dainik Aaj* where he wrote extensively on films, including critiquing them. He has also regularly written columns for various other publications. A scriptwriter too, he has also penned scripts for serials and documentaries.

विशेष उल्लेख

लेखन ज्यूरी ने डा. सी एस वेंकिटेश्वरन (अंग्रेजी) का विशेष आलेख उनके द्वारा अधूरी कहावतों एवं सामाजिक समस्याओं को बहुत गंभीर सादृश्यता के लिए किया है।

SPECIAL MENTION

The Jury makes a Special Mention of Dr. C.S. Venkiteswaran (English) for his serious approach in understanding the celluloid idiom and its social implications.

सी. एस. वेंकिटेश्वरन

फिल्म सोसायटी एक्टिविस्ट वेंकिटेश्वरन ओडेसा मूवीज़ नामक सोसायटी से संबद्ध रहे हैं। उनके लेख मलयालम और अंग्रेजी भाषाओं में मीडिया, सिनेमा और संस्कृति आदि विषयों पर डीप फोकस, इंडियन एक्सप्रेस, मातृभूमि, संवादम् आदि में छपते रहे हैं। उन्हें कला और संस्कृति की श्रेणी में एक वृत्त चित्र 'पकर्णट्टम-अम्मानूर' बनाने के लिये 1995 में राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

C.S. VENKITESWARAN

A film society activist from the 1970s, C.S. Venkiteswaran was actively involved in Odessa Movies – one of the earliest people's film movement in India. He has been regularly writing on film, media and culture in Malayalam and English in newspapers and magazines like *Deep Focus, Indian Express, Mathrubhumi, Samvadam* and many others. He received the National Award for the Best Documentary on Art and Culture in 1995 for directing *Pakarnnattam – Ammannur the Actor.*

कथासार : Synopsis :
कथाचित्र Feature Films

आलावंदन

तमिल/152 मिनट/रंगीन

सेना का अधिकारी विजय समाचार पाठक तेजस्विनी से प्यार करता है और उससे शादी करना चाहता है। विजय तेजस्विनी को अपने जुड़वा भाई "नन्दू" जो कि पागलखाने में कैद है, के विषय में बताता है। यद्यपि नन्दू पागलखाने में डाक्टरों के सामने स्वस्थ दिखाई देता है। नन्दू को बचपन में जिसने चोट पहुंचाई उससे बदला लेना चाहता है। वह अपनी सौतेली माँ से मिलना चाहता है जिसने कि उसके साथ निष्ठुरतापूर्वक व्यवहार किया।

नन्दू, विजय की शादी तेजस्विनी से रुकवाना चाहता है और पागलखाने से बाहर आना चाहता है लेकिन वह ऐसा नहीं कर पाता है। लेकिन नन्दू, तेजस्विनी पर दो बार हमला करता है और वह दोनों बार बाल-बाल बच जाती है। नन्दू नर्तक शर्मीली को मार देता है और फिर बाद में वह किसी अन्य व्यक्ति का शरीर जिस पर वह पानी के अपने पहचान चिन्ह बना देता है जिससे लोग यह समझे कि नन्दू ने खुदकुशी कर ली है।

नन्दू तेजस्विनी का पीछा जारी रखता है और एक बार फिर वह बाल-बाल बच जाती है। विजय अपनी पत्नी को नन्दू से बचाता है। उसके बाद नन्दू अपने भाई तथा उनकी पत्नी से क्षमा माँगता है और आग लगने से मारा जाता है।

AALAVANDAN

Tamil/ 152 min/ 35mm/ Col

Vijay, a military officer loves Tejaswini, a newsreader and are about to get married when Vijay reveals to Tejaswini that he has a twin brother, Nandu, who is confined to an asylum. Though Nandu appears to be normal to the doctors at the asylum he wants to have revenge on someone, a hurt possibly dating back to his childhood days. He seems to see his stepmother, who treated him harshly, in Tejaswini.

He wants to prevent Vijay's marriage to Tejaswini and escapes from the asylum but is unable to do so. But Nandu does not stop his attacks on Tejaswini, who has two close escapes. Nandu kills the dancer Sharmili and then leads everyone to believe that he has committed suicide by throwing another man's body with his identification marks in the water.

Nandu continues his pursuit of Tejaswini and after another close shave, Vijay is able to save his wife from Nandu. Nandu then begs his brother and his wife for forgiveness and is killed by a fire.

अतिथि

कन्नड़/90 मिनट/35 मिमी/रंगीन

संसार के बहुत से भाग संयोजित आतंकवाद के द्वारा फैली हिंसा के प्रभाव की चपेट में हैं जिसके कारण चारों तरफ तोड़-फोड़, मृत्यु, घरों को नष्ट करना, मानसिक आघात, असुरक्षा एवं भय व्यापत है। वस्तुतः सारा संसार एक जैसा है क्योंकि सभी संघर्ष की धमकी पूरी शक्ति के साथ देते हैं इसलिए स्थायी शान्ति नजर नहीं आती। फिल्म आतंकवाद तथा शान्ति के पुजारी डाक्टर को साथ रखकर गृह परिस्थितियों का सूक्ष्म अध्ययन करती है। तीन आतंकवादी अगले लक्ष्य तक पहुंचने के लिए एक पुल बनाते हैं उनमें से एक आतंकवादी घायल हो जाता है और उसे चिकित्सकीय सहायता की आवश्यकता पड़ती है। वे डाक्टर के पास जाते हैं और बंदूक की नोंक पर अपने साथी का इलाज करने को कहते हैं। डाक्टर कहता है कि रोगी को वहीं रखकर इलाज करना पड़ेगा इस पर वे डाक्टर की पत्नी को बंधक बनाकर उसके घर में अपना अड्डा बना लेते हैं। एक बच्चे के आकस्मिक प्रवेश से माहौल में अव्यवस्था उत्पन्न हो जाती है। अबोध बालक की वजह से उनके संबंध, विचार तथा व्यवहार में बदलाव आ जाता है। अतिथि इन्हीं सब जटिलताओं की समीक्षा है।

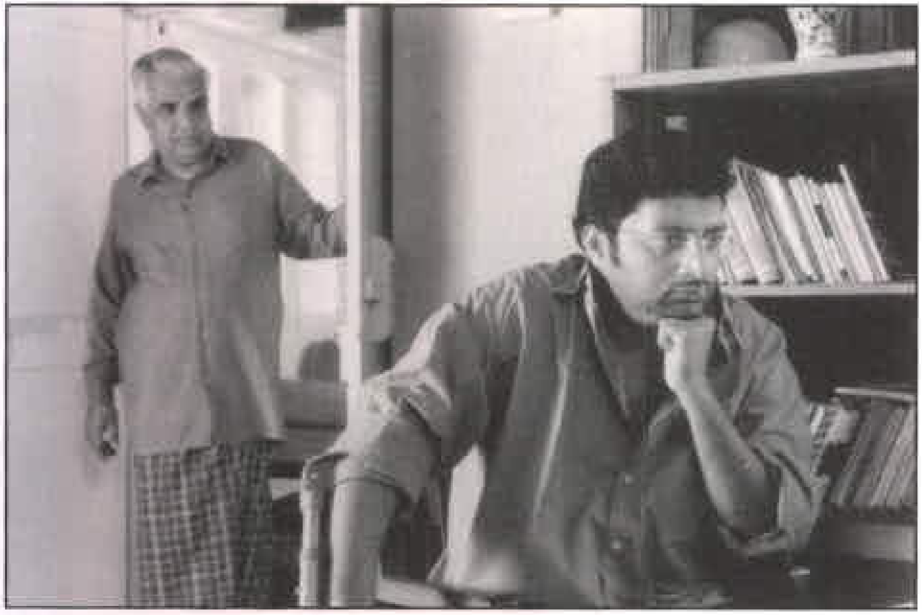

ATITHI

Kannada/ 90 min/ 35mm/ Col

Many parts of the world are reeling under the impact of the violence unleashed by organised terrorism. There is widespread destruction, loss of life, shattered homes, mental shock, insecurity and fear. Virtually the whole world is standing as one to fight the menace with all its might. But durable peace is not in sight. Atithi tries to simulate this macro situation at a micro level by putting a terrorist and a peace-loving doctor under the same roof for a few days. Three terrorists blow up a bridge and are on their way to the next target. One of them is injured and needs medical aid. They enter a doctor's house and at gunpoint extract treatment and shelter for the patient until he is fit to move about. The doctor's wife is taken hostage and the house turns into a base for terrorists. A casual entry of a small child into that house adds to the confusion. The innocent child transforms the whole complexion of their relationships, thinking and behaviour pattern. *Atithi* examines these complexities..

BUB

Kashmiri/ 114 min/ 35mm/ Col

Vinod is young victim of terrorism-stricken Kashmir, orphaned when he is the only survivor of an attack on his locality. Scorned by his relatives, his fortunes revive when encouraged by a sympathetic bureaucrat, Shiban Lal, he meets the Prime Minister. The Prime Minister, moved by his harrowing tale, promises him an aid of ten lakh rupees.

Vinod's uncle comes looking for Vinod and wants to take him away. He accuses of Lal of greed, after which Lal has Vinod sent away to a school in Dehradun. His uncle reaches there too and takes the boy away to his house. However, on reaching home, he realises that Vinod will get just a pocket money of Rs 500 per month, while the rest of the money is kept in trust for him. Disillusioned, he starts cursing and ill-treating Vinod. Lal again hears of Vinod's pathetic condition and wants to adopt Vinod. But Lal's wife throws a tantrum and threatens to walk out. Saddened, Lal takes Vinod to a BSF school, telling him to look after himself.

बब

कश्मीरी/114 मिनट/35 मिमी/रंगीन

कश्मीर आतंकवाद के शिकार विनोद नामक युवक की कहानी है जो अपने इलाके पर हुए आतंकवादी हमले में अकेला बचता है। अपने रिश्तेदारों द्वारा तिरस्कृत विनोद का भाग्य पुनः तब बनता है जब उसे सहानुभूतिशील सरकारी अफसर शिबन लाल के द्वारा प्रधानमंत्री से मिलने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। प्रधानमंत्री उसकी दुखः भरी कहानी सुनकर उसे दस लाख रुपये दिलवाने का वादा करते हैं।

विनोद के चाचा उससे मिलने आते हैं तथा अपने साथ ले जाना चाहते हैं। वे मिस्टर लाल पर लालची होने का आरोप लगाते हैं जिस पर मिस्टर लाल विनोद को देहरादून के स्कूल में भेज देते हैं। विनोद के चाचा वहाँ भी पहुंचकर उसे घर ले आते हैं। लेकिन घर पहुंचने पर जब उन्हें ज्ञात होता है कि विनोद को केवल पाँच सौ रुपये ही जेब खर्च के रूप में मिलेंगे, शेष रुपये न्यास में जमा होंगे तो वे उसे प्रताड़ित करना शुरू कर देते हैं। जब लाल को उसकी दयनीय स्थिति का पता लगता है तो वे उसे गोद लेना चाहते हैं लेकिन लाल की पत्नी घर छोड़ जाने की धमकी देती है। दुखी लाल विनोद को बी एस एफ के एक स्कूल में ले जाते हैं और अपनी देखभाल स्वयं करने को कहते हैं।

चाँदनी बार

हिन्दी/155 मिनट/35 मिमी/रंगीन

1985 में हुए साम्प्रदायिक दंगों के दौरान मुमताज को उसके मामा इरफ़ान मुमताज़ को मेरठ से मुंबई ले आते हैं और मुमताज़ को बीयर बार में काम करने के लिए बाध्य करता है। भयभीत मुमताज़ से जबरदस्ती ऐसा करवाया जाता है। बार का मालिक अन्ना मुमताज़ को दीपा को सौंप देता है जो कि बहुत पुरानी नर्तक है और उससे मुमताज़ को सिखाने के लिए कहता है। जल्द ही मुमताज पैसा कमाना शुरू कर देती है जिससे उसका मामा बहुत खुश होता है क्योंकि वह उसकी कमाई से एक फ्लैट लेना चाहता है। उसके बाद अन्ना उसका बलात्कार कर देता है। कुछ भी न कर पाने से मजबूर मुमताज़ नाचना जारी कर देती है और काम के बाद अपने मामा के साथ ही रहती है।

इसी बीच मुंबई के अन्डरवर्ल्ड से पोट्या आता है जो कि मुमताज़ को ले जाता है और उससे शादी कर लेता है। मुमताज़ बीयर बार से काम छोड़ देती है और चारों तरफ खुशी की लहर सी दौड़ जाती है। तभी पोट्या को पुलिस मार देती है। मुमताज़ फिर से बीयर बार में काम करने लगती है और अपने बच्चों पायल एवं अभय का पालन पोषण करती है।

CHANDNI BAR

Hindi/ 155 min/ 35mm/ Col

Mumtaz is forced to flee Meerut with her Irfan Mamu in 1985 during a communal riot. They land up in Mumbai, where Mumtaz is hired as a dancing girl in a beer bar. Frightened, Mumtaz is reluctant, but is forced to go. The bar owner Anna hands over Mumtaz to Deepa, a long-time dancer and asks her to guide Mumtaz. Soon Mumtaz does start getting money, which makes her Mamu happy, as he dreams of getting a flat with the earnings. And then he rapes her. Helpless to change anything, Mumtaz continues to dance and comes back to Mamu at the end of each day's work.

Meanwhile Potya, a rising goon entrenched in the Mumbai underworld, takes a fancy to Mumtaz. Mumtaz is glad to quit working at the bar, and happiness seems to be around the corner when Potya is killed by the police. Life turns full circle as Mumtaz is forced to take up her previous job in the beer bar, this time to sustain her children Payal and Abhay as well.

DANY

Malayalam/ 120 min/ 35mm/ Col

Dany, a 73-year old man, barring a chance encounter with an elderly woman, was denied any meaningful relationships with fellow humans in his life. Born to a Catholic household in coastal Kerala, Dany lost his parents early in life. And before he was 30, Dany lost his belongings in a fire and lived in a makeshift hut on the seashore, playing the guitar and singing at funerals. Dany then joined the church choir as a sax player and married Clara, daughter of the village carpenter.

Life with Clara and their daughter Lucien made Dany a happy man until Clara left with Lucien. Dejected Dany expressed his sorrow through the saxophone. Soon Dany was made to marry Margaret, who was pregnant by another man. Margaret taught him English, took him to parties. But their son's wife had him put in an old age home, where he met Bhargavi, a retired headmistress, admitted with a heart ailment. And thus began a friendship that other people found awkward to accept.

डैनी

मलयालम/120 मिनट/35 मिमी/रंगीन

एक 73 वर्षीय पुरुष डैनी के जीवन में एक अधेड़ स्त्री से मिलने के बाद उससे सार्थक रिश्ता बनाना चाहता है। परन्तु समाज स्त्री-पुरुष के इस रिश्ते को मान्यता नहीं देता। केरल मे समुन्द्रतट पर बसे एक कैथोलिक कुटुम्ब में जन्मे डैनी ने छोटी सी उम्र में ही अपने माता-पिता को खो दिया था और तभी से समुन्द्रतट पर झोंपड़ी बनाकर रहते थे। वे गिटार और बांसुरी बजाते थे। उसके बाद डैनी एक चर्च गायन मंडली में सैक्सोफ़ोन प्लेयर के रूप में शामिल हो गए और एक ग्रामीण बढ़ई की पुत्री क्लारा से विवाह कर लिया।

डैनी जब तक क्लारा एवं उसकी पुत्री ल्यूसिन के साथ रहा उसका जीवन बहुत खुशहाली में व्यतीत हुआ। उसक बाद वह दुखी रहने लगा और अपने दुखः को फौजी वाद्ययंत्र के द्वारा व्यक्त करने लगा। जल्द ही डैनी मार्गरिट से मिलता है जो कि किसी अन्य व्यक्ति से गर्भवती है। मार्गरिट उसे अंग्रेजी पढ़ाती है और पार्टियों में ले जाती है। लेकिन मार्गरिट की पुत्र वधू डैनी को वृद्धों के कमरों में ही रखती है जहां उसकी मुलाकात सेवानिवृत्त मुख्याधपिका भार्गवी से होती होती है और उसे अपनी दुखः भरी व्यथा सुनाता है। इस प्रकार उनकी मित्रता शुरू होती है जिसकी किसी भी दुखी व्यक्ति को तलाश होती है।

दिल चाहता है

हिन्दी/186 मिनट/35 मिमी/रंगीन

मुंबई में बनी यह फ़िल्म मित्रता पर आधारित है जिसमें तीन मित्रों द्वारा एक जीवनसाथी की खोज की जाती है। एक उद्योगपति का इकलौता पुत्र आकाश अपने भाई के साथ अपने कैरियर के लिए बहुत व्यस्तता में जीवन व्यतीत करता है। समीर को एक अच्छे मित्र की तलाश रहती है परन्तु उसका हमेशा गलत व्यक्तियों से ही वास्ता पड़ता है। परन्तु उसे विश्वास है कि एक न एक दिन उसे अच्छा दोस्त जरूर मिल जाएगा। यह फ़िल्म उनके दो वर्ष के जीवन के माध्यम से हमारा पथ प्रदर्शन करती है। वे विजय को स्वीकारने के लिए शुरू से ही तैयार हैं। कोई उन्हें जीने की राह से अलग नहीं कर सकता है। जिन्दगी स्वयं चलती है या फिर अलग अलग आँसू रुलाती है। तब अचानक कुछ घटित हो जाता है और प्रत्येक मुश्किल में आ जाता है जिससे उनकी एक मित्रता पर भी प्रभाव पड़ता है। अन्त में तीनों मित्र एक दूसरे के साथ मिलकर अपनी, रोमांचकारी घटनाओं एवं विवादों का समझौता कर लेते हैं।

DIL CHAHTA HAI

Hindi/ 186 min/ 35mm/ Col

Set in Mumbai, the film takes a look at friendship and the search for a mate by three friends. Akash, the only son of an industrialist, is too busy living life at the moment to bother about either career or anything else. Sameer longs to be in a stable relationship but always seems to run into the wrong person. For Siddharth, an artist, love is a state of being and he is confident it will happen when the right person comes along.

The film leads us through two years of their lives. Poised on the threshold on their adult lives, they share a sense of invincibility. Nothing can stop them from living the way life should be lived or tear them apart. Till something does. And each one of them is left to make difficult choices about their lives, which even affects their friendship with each other. Each of the three friends finally finds his way of settling their romantic affairs, and their discord with each other.

DWEEPA

Kannada/ 175 min/ 35mm/ Col

The monsoon is about to set in and the government has decided to close the gates of the newly built dam to store water. The backwater level of the dam has started rising, creating many islands. Nagi, moving from one island to another in her boat, learns from the peon the decision to forcibly evict people who have stayed back rather than accept the compensation and move out.

Ganappa, Nagi's husband views things differently. His father Dugappa will move out only if the government compensates for their honour and dignity. But the officials can compensate for only material assets. When the rains set in, the officer comes to reassess the family's assets. Dugappa takes him around his world where beliefs are much stronger than facts. The officer laughs at his contention that the trees, the hills, the valley are all part of his existence and therefore his property. Dugappa spurns the official's request and decides to stay put on the island. The film explores this microcosm and the new hope that dawns.

द्वीप

कन्नड/175 मिनट/35 मिमी/रंगीन

मानसून आने वाला है और सरकार ने पानी जमा करने के नवनिर्मित बाँध के द्वारों को बन्द करने का निर्णय लिया है। बाँध के अप्रवाह जल का स्तर चढ़ना शुरू हो गया है जिसके कारण बहुत से द्वीप बन गए हैं। नागी एक द्वीप से दूसरे द्वीप अपनी नाव द्वारा जाती है और पत्रवाहक से लोगो को जबरदस्ती बेदखल करने के निर्णय के बारे में पूछती है कि जो लोग यहाँ से हटने का मुआवजा लेने के बावजूद भी ठहरे हुए हैं।

नागी का पति गनप्पा इस पर कई तरह से विचार करता है। उनके पिता दुगप्पा केवल तभी हटेंगे जब सरकार उनके सम्मान एवं प्रतिष्ठा की भी प्रतिपूर्ति करती है। लेकिन अधिकारी केवल परिसम्पत्तियों की ही क्षतिपूर्ति कर सकते हैं। तभी वर्षा होती है और एक सरकारी अधिकारी परिवार की परिसम्पत्तियों का मूल्याकन करने आता है। दुगप्पा उसे सांसारिक परिवेश में ले जाता है जहाँ कि आस्था वास्तविकता से ज्यादा मजबूत है। अधिकारी उसके इस दावे पर हँसता है कि पेड़, पहाड़ियाँ एवं घाटियाँ उसके जीवन का हिस्सा है और उसकी संपत्ति है। दुगप्पा अधिकारी के अनुरोध को ठुकरा देता है और द्वीप पर ही रहने के लिए कहता है। यह फिल्म लघुजगत एवं उसमें आने वाली नई आशाओं का चित्रण करती है।

हेमन्तेर पाखी

बंगाली/113 मिनट/रंगीन/मोनो

अदिति अपने जीवन की स्वर्णिम अवधि अपने दो पुत्रों के जीवन संचारण एवं पति को सुख प्रदान करने में लगा देती है। उसके पास अपने विषय में सोचने का वक्त नहीं है और न ही उसकी कोई इच्छा है। इसी बीच उसके पति अपने कैरियर को आगे बढ़ाते हैं और उसके दोनों पुत्र जवानी की दहलीज पर कदम रखते हैं। अदिति एक पत्नी एवं माँ के रूप में अपनी दर्दनाक अनुभूति के लिए बहुत छोटी सी माँग रखती है जिसके लिए वह स्वयं ही कुछ करती है।

तभी हेमेन मामा वहाँ पहुँचते हैं और अदिति के साहित्य एवं पुनर्लेखन के लिए जागृत करते हैं। अदिति के पति एवं पुत्र की देखभाल अब नहीं की जाती है। यद्यपि लेखन से उसके परिवार वालों को भय है कि अगर लेखन उसका शौक रहा तो अदिति उनकी देखभाल नहीं कर पाएगी। उसका परिवार उसके इस कार्य से नाराज रहता है। उनके अनुसार एक महिला केवल समर्पित पत्नी एवं माता के रूप में ही सफल हो सकती है।

HEMANTER PAKHI

Bengali/ 113 min/ 35mm /Col

Aditi has spent the golden period of her life bringing up her two sons and catering to the whims of her husband. She had no time to think of herself - nor did she want to. Meanwhile her husband has risen in his career and the children are on the threshold of adulthood. That the demands of 'Wife Aditi' and 'Mother Aditi' are diminishing comes as a painful realisation to her. With little to do, the middle-aged woman is very lonely.

Hemen Mama arrives in this scenario and rekindles Aditi's love for literature and pick up a pen again. Her husband and sons are relieved. Though Aditi sits down to write after a gap of twenty years, the doors of her mind open and she gets totally immersed in writing. This however shocks the rest of her family, who fear they will lose her to this new passion. The men resent the fact that she now has an independent identity. For them, a woman can be a successful professional only after being a devoted wife and mother.

कुट्टी

तमिल/115 मिनट/35 मिमी/रंगीन

कुट्टी या कनम्मा एक गरीब कुम्हार की 10 वर्षीय पुत्री है। लेकिन अन्य लडकियों की तरह ही वह भी अपने माता-पिता की मदद करती है। कुट्टी स्वतंत्र रूप से खेल सकती है और कहीं भी आ जा सकती है। उसके पिता कहते हैं कि वह स्वतंत्र रूप से अपना बचपन बिता सकती है।

लेकिन कुट्टी के जीवन में अचानक बदलाव आता है जब उसके पिता एक दुर्घटना में मारे जाते हैं। वह शहर में एक घर में नौकरी करती है। वह जिस घर में नौकरी करती है उस घर के दम्पत्ति उससे सहानुभूति रखते हैं परन्तु उनका पुत्र तथा दादी, कुट्टी के साथ दुर्व्यवहार करते हैं। उनके पुत्र को कुट्टी को सताने मे बहुत आनन्द आता है। दादी कहती थी कि नौकरों को अपनी हैसियत में ही रहना चाहिए। यद्यपि कुट्टी अपने घर जाना चाहती है परन्तु वह अपने गाँव का नाम नहीं जानती। तभी उसे लगता है कि दम्पत्ति कहीं यात्रा पर जाने वाले हैं और तब उसे वृद्ध महिला एवं उसके पौत्र के साथ रहना होगा। कुट्टी उस घर में अपनी सुरक्षा के लिए चिंतित होती है और वहाँ से भागने का निणर्य लेती है।

KUTTY

Tamil/ 115 min/ 35 mm/ Col

Kutty or Kanamma is ten years old poor potter's daughter. But in a significant departure to other girls her age and background, who have to help their parents, Kutty is free to play, to run around to enjoy herself as her father believes his daughter should have as carefree a childhood as possible.

But Kutty's life suddenly changes drastically when her father is killed in an accident. She is sent to town to work as a domestic help. The couple she works empathise with Kutty, but their son and his grandmother, who stays with them, trouble her a lot. The boy revels in treating her shabbily and humiliating her. The grandmother thinks servants should be 'kept in their place'. Though Kutty wants to go back home, she does not know the name of her village. And then one she learns that the couple are going away on a trip and she would be left alone with the old lady and her grandson. Shorn of the only protection she has in that house, she decides to run away.

लगान

हिन्दी/222 मिनट/35 मिमी/ रंगीन

इस फिल्म की पृष्ठभूमि सन 1893 में मध्य भारत के एक छोटे से गाँव चंपानेर में स्थित है। अन्य भारतीय गाँवों की तरह चंपानेर भी कृषि पर निर्भर करता है। वे अपने सपनों कि सभी को पर्याप्त भोजन हो, को साकार करना चाहते हैं। गाँव के बर्हिभाग पर एक ब्रिटिश छावनी है जिसका कमान कैप्टन रसेल द्वारा किया जाता है जो कि एक अहंकारी एवं सनकी व्यक्ति है और चंपानेर पर अपना शासन चलाना चाहते हैं। पिछले वर्ष बहुत कम बरसात हुई। ग्रामवासियों को लगता है कि अगर इस वर्ष भी वर्षा नहीं हुई तो वे भूखे मर जाएंगे और फिर उनके साथ ऐसा ही होता है जिसका उनका आभास था। क्षेत्रीय राजा के दूत अपने कार्यक्षेत्र में कठोरतापूर्वक दुगने लगान की घोषणा कर देते हैं। इससे चंपानेर को और अधिक विपत्तियों का सामना करना पड़ता है। तभी एक असाधारण प्रस्ताव लाया जाता है जो कि चंपानेर वासियों के लिए मददगार भी साबित हो सकता है और उन्हें बर्बाद भी कर सकता है। लगान बिना रक्तपात के नायकों द्वारा लड़ा गया युद्ध है। एक नवयुवक किसान भुवन ग्रामवासियों का नेतृत्व करता है और उन्हें बर्बादी की अपेक्षाओं की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करता है। वे विपत्ति का धीरतापूर्वक और अन्याय का गरिमा के साथ सामना करते हैं। वे जोश के साथ सामना करते हैं और उनकी विजय होती है।

LAGAAN

Hindi/ 222 min/ 35mm / Col

Lagaan is set in Champaner, a small village in central India in the year 1893. Like every other Indian village, Champaner depends on agriculture. They want to realise their modest dreams – especially enough food for all. On the outskirts of the village is a British cantonment, commanded by Captain Russell – an arrogant, capricious man who wields the power of life and death over Champaner. The previous year has seen rain, but very little. The villagers know that if the monsoon fails this year, they will starve.

And then comes a bolt from the blue. The local raja's emissaries thunder through the province announcing *dugna lagaan*, double tax. Champaner is faced with a crisis. And then comes an unusual offer that promises succour... or ruin.

Lagaan is the story of a battle fought without bloodshed by an unlikely set of heroes. Led by a young peasant, Bhuvan, the village gears up to face the challenge everyone expects to lose. Adversity is faced with fortitude and injustice with dignity. And when faced with arrogance and ruthlessness, it is the human spirit that triumphs.

MAGUNIRA SHAGADA

Oriya/ 89 min/ 35mm/ Col

Bullock cart driver Maguni has won the heart of Khalikote, a township in Orissa. He takes locals to their varied destinations, and carts visitors from the railway station. One day the news spreads that people no longer would need the cart as the Singh family was buying a motor bus.

Maguni hears this and smiles, smug in the knowledge that no bus can replicate the personal bond that exists between a bullock cart driver and his passengers. But he is proved wrong. When the bus starts plying, people start flocking to it until Maguni is pushed to starvation. When he has to sell his bulls, Maguni is heartbroken. One morning the townsfolk force open his door and recover his corpse.

मगुनीरा शगदा

उड़िया/89 मिनट/35 मिमी/रंगीन

बैलगाडी चालक मगुनी ने उडीसा के एक कस्बे "खालीकोटे" के निवासियों का दिल लुभाया हुआ है। वह यात्रियों को उनके भिन्न भिन्न गंतव्य स्थानों पर छोड़ता है और आगन्तुकों को स्टेशन से लाता है। एक दिन शहर में एक खबर फैलती है कि अब बैलगाड़ी की यात्रा करने के बजाए मोटर बस की यात्रा करेंगे क्योंकि गाँव में एक बस खरीद ली गई है।

मगुनी यह सुनकर हँस पड़ता है और मन ही मन यह संतुष्टी भी होती है कि जो अनुबंध यात्रियों के मेरे साथ थे वे किसी बस के साथ नहीं हो सकते हैं लेकिन वह गलत सिद्ध हुआ जब बस नियमित रूप से चली और काफी लोग इसमें सफ़र करने लगे। मगुनी की भूखे मरने की नौबत आ जाती है। जब वह अपने बैलों को बेचता है तो उसके घर में ही हृदयाघात से उसकी मृत्यु हो जाती है और तब एक दिन पुलिस आकर दरवाजा खोलती है और शव बरामद करती है।

मित्र माई फ्रैंड

अंग्रेजी/98 मिनट/35 मिमी/रंगीन

संयुक्त राज्य में जन्में पृथ्वी का पालन-पोषण भी वहीं होता है। उसकी शादी लक्ष्मी नाम की एक छोटे से गाँव में रहने वाली भारतीय लड़की से होती है। पृथ्वी लक्ष्मी को संयुक्त राज्य अमेरिका ले जाता है जहाँ सभी उसे बहुत प्यार करते हैं। लक्ष्मी का जीवन पहले अपने पति के साथ बीतता है और फिर अपनी पुत्री दिव्या के साथ बीतता है। दिव्या कुछ बड़ी होती है और उसकी माँ पर उसकी निर्भरता कम होती है। धीरे धीरे दिव्या को अपनी माता की संस्कृति एवं वहाँ के परिवेश की जानकारी होती है। दिव्या नाराज होती है और दोनों संस्कृतियों को आत्मसात नहीं कर पाती है जिससे उनके बीच मतभेद बढ़ जाते हैं। पृथ्वी भी लक्ष्मी के अकेलेपन एवं जरूरतों को नहीं समझ पाता है। कुछ समय बाद लक्ष्मी अपनी संस्कृति के अनुसार अलग दुनिया बसाती है। लक्ष्मी पहली बार अपनी जरूरतों एवं इच्छाओं के बारे में पसंद और नापसंद का निर्णय लेती है। इस तरह लक्ष्मी अपना रास्ता स्वयं बनाती है और अपनी जरूरतों को बिना अपनी पुत्री एवं पति की मदद के पूरा करती है।

MITR – MY FRIEND

English/ 98 min/ 35mm/ Col

Prithvi, born and raised in the US, marries Lakshmi, a small-town girl from India and brings her to the land that fascinated everyone around her since her childhood. Lakshmi's life has since revolved around her husband, and later, her daughter, Divya. But as Divya grows up, her dependence on her mother reduces and the cultural difference between her mother and the rest of her environment creates a gulf. Divya resents that Lakshmi lives in a world she left behind about two decades ago.

The two cannot each other's cultural mindsets and the conflicts become more and more frequent. Prithvi too fails to grasp Lakshmi's growing loneliness and thirst for her roots. After a while Lakshmi realises she too needs a space of her own, and no longer be taken for granted. For the first time almost she confronts her wants and desires, like and dislikes. And thus begins a voyage of discovery as Lakshmi seeks to find her bearings, without the support or links to her daughter and husband.

NEYTHUKARAN

Malayalam/ 35mm/ Col

A film set within a time span of 24 hours that starts with death of the legendary Communist leader EMS Namboodripad and ends with his funeral. The protagonist of the political film, Appa Mestri, an octogenarian and former weaver who has been an active participant in the worker's movement through which the communist Party established itself in Kerala. The film focuses on the radical shift in ethical and political commitment from Mestri's participation in the 1940s and 1950s to the present day "I and mine' ideology, represented in the film by his grandchildren.

It weaves the now senile Mestri's tale with those of his son, Joshi, and his wife Geetha, against the political backdrop. The film treats EMS as the spirit of the times that manages to weave dreams of radical change into the mindscape of Kerala. Mestri fears that with his death, a link with the past is going to be lost forever. A striking sketch of the strength and sincerity of the political consciousness and commitment of the times is recreated with speeches, clippings and photographs from the past.

नेयतुकरन

मलयालम/35 मिमी/रंगीन

24 घन्टे में बनी यह फ़िल्म प्रसिद्ध साम्यवादी नेता ई एम एस नंबूदरीपाद की मृत्यु से शुरू होकर उनकी अंत्येष्टि पर खत्म होती है। फ़िल्म का मुख्य पात्र एक अस्सी वर्षीय वृद्ध एवं पूर्व जुलाहा अप्पा मैस्ट्री है जो कि केरल मे कम्यूनिस्ट पार्टी को स्थापित करने के लिए चलाए जा रहे आन्दोलन में सक्रिय भागीदार है। फ़िल्म मूल सिद्धान्तों को दर्शाती हुई 1940 एव 1950 से लेकर आज तक मैस्ट्री की भागीदारी से उत्पन्न नीतिगत एवं राजनीतिक जिम्मेदारियों "मैं और मेरी विचारधारा" को उसके पौत्रों द्वारा दर्शाया गया है।

राजनीतिक पृटभूमि मे ये कहानी है वृद्ध मैसट्री उसकी पुत्र जोशी एवं पत्नी गीता की। फ़िल्म ई एम एस को केरल में सामाजिक परिर्वतन के पीछे रही भावना बताती है राजनैतिक चेतना और कर्मठता का ये सजीव चित्रण पुराने भाषणों और फोटो इत्यादि के द्वारा किया गया है।

वृद्ध मैस्ट्री अपने पुत्र जोशी एवं अपनी पत्नी गीता से राजनीति के विषय में

उरुकु नुरुपेर

तमिल/97 मिनट/35 मिमी/रंगीन

फिल्म फांसी की सजा तथा उसके द्वारा उत्पन्न अशांति तथा दुखः का सजीव चित्रण है समसामयिक राजनीति से निराशा 28 वर्षीय कलाकार बालन उरुकु नुरुपेर नामक क्रांतिकारी संगठन का सदस्य बनकर आज के रॉबिन हुड का रूप धारण कर लेता है डकैती और लूट उसकी दिनचर्या का हिस्सा बन जाते हैं। आनन्दन, बालन की विचारधारा का समर्थन करने वाले एक क्रांतिकारी दैनिक में पत्रकार हैं। वह फॉसी की सजा का विरोध करता है जबकि उरुकु नुरुपेर प्रतिपादित करता है कि क्रांतिकारियों को सामाजिक न्याय की रक्षा के लिए उग्र कदम भी उठाने पड़ते हैं।

परन्तु उनके परिवारों का दुख और व्यथा अनसुनी रह जाती है परिवार की मदद न कर पाने के कारण बालन की पत्नी उससे दूर होती जाती है। जब आनन्दन सरोजा से मिलता है तो वह बालन की परिवार के प्रति विरक्ति एवं समाज सेवा की भावना पर क्रोधित होती है। वस्तुतः बालन जेल की अंधेरी कोठरी में जब मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा होता है तब भी संस्था का कार्य चलता रहता है, क्योंकि उद्देश्य व्यक्ति से अधिक महत्त्वपूर्ण है।

OORUKU NOORUPER

Tamil/ 97 min/ 35mm/ Col

The film looks at capital punishment through the emotional turmoil of a man on death row, and the agony of his wife and child. Balan, a 28-year-old artist disillusioned with contemporary politics, joins a revolutionary organisation called *Ooruku Nooruper* and dons the garb of a present day Robin Hood. Arson and looting become an integral part of his everyday life. Anandan writes for a radical newspaper which supports Balan's ideology. He runs a campaign against capital punishment, while *Ooruku Nooruper* emphasises that revolutionaries are so sensitive to social injustice that they take extreme steps to voice their opinions.

But the anguish and suffering by their own families generally go unnoticed. Balan has no time or money for his family. His wife Saroja finds herself becoming increasingly alienated from her husband. When Anandan meets Saroja, she bursts out at Balan's 'need to serve society' and his indifference towards his family. Ironically, while Balan awaits his death in a dark cell, the organisation goes on with its activities because it believes that the cause is always more important than the individual.

PANOI JONGKI

Miri/ 130 min/ 35mm/ Col

The Miri tribe nestles in a village along the Subansiri river among the foothills in Arunachal Pradesh. In the village live two young lovers Panoi and Jongki. Deeply fond of each other, they face numerous obstacles to their union. Panoi's parents wanted her to marry Komud, son of the village headman and forbade any contact with a Jongki, a mere orphan. Komud had Jongki driven away from the village. Jongki was forced to take refuge with his aunt in another village. Komud meanwhile started all the prescribed rituals for his marriage to Panoi.

The lovers elope from Subansiri village, seeking refuge in a nearby forest, but before they can settle down, Komud comes and takes Panoi back to Subansiri. But Panoi again escapes from Komud's clutches and runs away to the hills. Jongki is accused of kidnapping her, but as he was unaware of her whereabouts too, he set out to look for her. They meet but this time face the hostile hill people...

पनोई जोंगकी

मीरी/130 मिनट/35 मिमी/रंगीन

मीरी जनजाति अरुणाचल प्रदेश की पहाड़ियों के बीच सुबांसिरी नदी के साथ ही एक गाँव में रहती है। इस गाँव में दो नवयुवक प्रेमी पनोई एवं जोंगकी रहते हैं। एक दूसरे के प्रेम मे डूबे पनोई एवं जोंगकी अपने मिलने के लिए बहुत सी मुश्किलों का सामना करते हैं। पनोई के माता-पिता उसकी शादी उस गाँव के प्रमुख के पुत्र कौमुद से करना चाहते हैं और जोंगकी जो कि अनाथ है के साथ कोई संबंध नहीं रखना चाहते हैं।

कौमुद जोंगकी को गाँव से बाहर अपनी चाची के यहाँ घुमाने ले जाता है और अपनी चाची के पास ही रहने के लिए बाध्य करता है। इसी बीच कौमुद ने पनोई से अपनी शादी करने के लिए निर्धारित औपचारिकताएं पूरी कर ली हैं। इसी बीच दोनों प्रेमी सुबांसिरी गाँव से फरार हो जाते हैं और पास के जंगल में आश्रय ले लेते हैं। लेकिन उनके व्यवस्थित होने से पहले ही कौमुद वहाँ आ जाता है और पनोई को सुबांसिरी गाँव वापिस ले आता है। लेकिन पनोई फिर उसके चंगुल से बच निकलती है और दूर पहाड़ियों की तरफ भाग जाती है। जोंगकी उसके अपहरण के मामले में दोषीसिद्ध होता है जबकि उसे पनोई के बारे में कुछ भी नहीं पता है। जोंगकी पनोई को ढूंढता है और मिलने पर वे पहाड़ी लोगों का सामना करते हैं।

शो

तेलुगु/126 मिनट/ 35 मिमी/रंगीन

दिल्ली की एक फार्मास्युटिकल कम्पनी में उच्च अधिशासी रिद्धिका आयुर्वेद प्रोफ़ेसर कृष्णा मोहन से मिलने दिल्ली से जाती है और उनसे एक पेटेंट खरीदती है। दो घंटे की यात्रा करने के पश्चात वह प्रोफ़ेसर के घर पहुंचने पर पाती है कि प्रोफेसर घर पर नहीं हैं और बाहर एक सूचना लगी है कि वे कुछ घंटे घर से बाहर रहेंगे। घर में अकली रिद्धिमा समय गुजारती है और तभी एक कार की आवाज आती है जिसमें माधव होता है जो कि पेशे से वकील है और पेटेंट बिक्री से संबंधित सभी कानूनी पहलुओं को वही देखेगा। इस तरह एक अनैच्छिक आकर्षण शुरु होता है जो जल्दी ही उन्हें एक दूसरे के प्रति काफी घनिष्ट हो जाते हैं।

रिद्धिमा ने मिलने पर महसूस किया कि वह बहुत काल्पनिक व्यक्ति है और उसकी प्रतिभा से बहुत प्रभावित होती है। दोनों की आगे बातचीत होती है जिससे दोनों आन्तरिक रूप से प्रभावित होते हैं। शो का अर्थ है संबंधों, आनंदों, दुखों, परीक्षणों एवं संकेतों के द्वारा बताना। अनुभवी लोगों के लिए यह एक अनुभूति है जो कि जीवन का खेल है परन्तु नाटक केवल मनोरंजन ही करता है।

SHOW

Telugu/ 126 min/ 35mm/ Col

Riddhima, a top executive of a pharmaceutical company in Delhi has flown from Delhi to meet Ayurveda professor Krishna Mohan and buy a patent from him. On reaching the professor's house after a two-hour drive, she finds him missing, with a note explaining he will be out for a few hours. Alone in the house, Riddhima tries to kill time when she hears a car drive up. It turns out to be Madhav, the advocate who will handle the legal aspects of the patent sale. Thus begins in an involuntary interaction that soon leads them to open out to each other.

Riddhima feels he is the most imaginative person she has ever met. She is even more surprised as he impresses her with his culinary skills. They open up further and Madhav reveals another side of him, which affects them both deeply. Show showcases life. It is about relationships, its joys, its sorrows, its trials and tribulations. And for the viewer, there is a realisation that this play of life is but a drama created for entertainment alone.

TILADAANAM

Telugu/ 85 min/ 35mm/ Col

Subbiah Sastry, a Vedic pandit, has fallen in life and now lives as a corpse bearer. This pushes him to accept *Tiladaanam*, one of lowest rites whereby Sastry takes on the sins of the person offering the sacrifice. Meanwhile the winds of change sweeping Hyderabad takes in its folds Sastry's son. Raghuram, who espouses terrorism, is sought by the police who have put a prize of one lakh rupees on his head. Raghuram's wife Padma gives birth to a male child who, according to Sastry, is born under an evil sign that augurs death for the father. Sastry decides to perform a ritual to ward off the evil even as the police hound the progressive son.

Meanwhile, vowing to preserve his ideology even as he financially helps his family, Raghuram tries to channel the money on his head. But the comrade responsible for handing over the money to Padma usurps it. Left to face the world alone and destitute, Padma spurns the traditional framework of her society and begins a new journey to gain an identity for herself.

तिलादानम

तेलुगु/85 मिनट/35 मिमी/ रंगीन

एक वैदिक पंडित सुभैया शास्त्री ने अपना जीवन शव वाहक की हैसियत से शुरू किया है। इस कार्य ने उन्हें "तिलादानम" के लिए प्रेरित किया। धार्मिक अनुष्ठानों में एक जिसमें शास्त्री ने लोगों के गुनाहों के लिए दिए जाने वाले बलिदान को बताया है। यह बदलाव हैदराबाद में फैलता है और शास्त्री के पुत्र रघुराम में बदलाव लाता है। रघुराम को आतंकवाद का समर्थक होने के कारण पुलिस ढूंढती है और उसके सिर पर एक लाख रुपये का इनाम रखती है। रघुराम की पत्नी पदमा बच्चे को जन्म देती है। शास्त्री कहते हैं कि यह बच्चा अशुभ है और अपने माता-पिता की मौत का आगमन है। शास्त्री निर्णय लेते हैं कि जैसे ही पुलिस उनके सुपुत्र का पीछा छोडे तो वे इस अनिष्टता से बचने के लिए एक धार्मिक यज्ञ कराएं।

तभी रघुराम अपनी विचारधारा को बदलने की प्रतिज्ञा करता है और अपने परिवार की वित्तीय सहायता करता है। रघुराम स्वयं के ऊपर पुलिस द्वारा रखे इनाम को भी लेने का रास्ता बना लेता है परन्तु उसके साथियों जिन्हें वह पदमा को पैसा देने के लिए कहता है, के द्वारा हड़प लिया जाता है। अकेली दीन हीन पदमा समाज की परम्पराओं की परवाह किए बिना नये ढंग से अपनी जीवन यात्रा शुरू करती है।

उदयगीतविन "अजाही"

तमिल/142 मिनट/35 मिमी/रंगीन

षण्मुगम एवं धनलक्ष्मी बचपन के दोस्त है। षण्मुगम धनम को प्यार करता है परन्तु कहने से डरता है कि कहीं वह मना न कर दे। इसके बाद वह अपनी पढ़ाई के लिए गाँव से शहर चला जाता है। पढ़ाई से वापिस आने के बाद उसे पता लगता है कि धनम की शादी उसके विधुर चाचा के साथ कर दी गई है। क्योंकि धनम के परिवार वालों का सारा धन चोरी हो गया था। धनम गाँव में होने वाले टेमले समारोह में जाती है जहाँ षण्मुगम उसे देखकर परेशान हो जाता है। वह अपने से बहुत बड़े उम्र के व्यक्ति और एक बच्चे के साथ होती है। अब उसकी पहले जैसी सुन्दरता को न देखकर षण्मुगम मन ही मन दुखी होता है।

कुछ वर्षों के बाद षण्मुगम, धनम और उसके पुत्र बालू को प्लेटफार्म पर देखकर बहुत दुखी होता है। वह धनम की सहायता करता है और अपने जान पहचान के एक उद्योगपति के घर में काम दिला देता है। लेकिन एक दिन वहां रात्रि भोज में षण्मुगम देखता है कि धनम के साथ दुर्व्यवहार हो रहा है तब वह धनम के काम के बदले में वलारमती नाम की स्त्री को काम करने के लिए राजी करता है। वलारमती को कुछ गलत होने का अंदेशा होने पर वह षण्मुगम से धनम के बचाव के बारे में पूछती है। एक दिन धनम एक लिखित नोट छोडकर घर छोड़कर चली जाती है।

UDAYAGEETHAVIN 'AZHAHI'

Tamil/ 142 min/ 35 mm / Col

Shanmugam and Dhanalakshmi were childhood friends. Shanmugam loved Dhanam, but hesitated to tell her as he felt it would be disapproved it. On passing out of school, he went away from the village to study in the town. On returning, he was told Dhanam had been married off to her uncle Kothandam, a widower, as her family had lost all their wealth. Dhanam visits the village during the temple festival and Shanmugam is shocked to see her. She is with a much older man and a child and has lost her earlier beauty. Shanmugam regrets not speaking up earlier.

Years later, Shanmugam is shocked to see Dhanam and her son Balu on a platform. He assists Dhanam by getting her job as a domestic help in the house of an industrialist he knows. But on going there for dinner one day, he discovers Dhanam is being ill-treated. He persuades his wife Valarmathi to get them to work in their house. Valarmathi suspects something is wrong and asks Shanmugam about Dhanam, who overhears the conversation. She at once leaves the house leaving a note...

कथासार : Synopsis :

ग़ैर कथाचित्र Non-Feature Films

आत्मन

सार्वजनिक/19 मिनट/35 मिमी/रंगीन

एक अधेड़ उम्र का मध्यम वर्ग का व्यक्ति जीवन की सार्थकता की तलाश के उद्देश्य की खोज में रहता है। उसे अमानवीय शंकाओं के बीच उसकी इस खोज को रोकने की हर कदम पर कोशिश होती है। कठिनाइयों और राजनीतिक द्वन्द के मध्य यह तलाश जारी रहती है। कुछ समय के लिए उसे पारिवारिक जीवन में सुख और शांति की प्राप्ति होती भी है परन्तु जीवन की अनेक परतों में शांति की खोज अन्त में पूरी होती है जब वह अपने आत्म को जानकर शून्य को तोड़ पाता है।

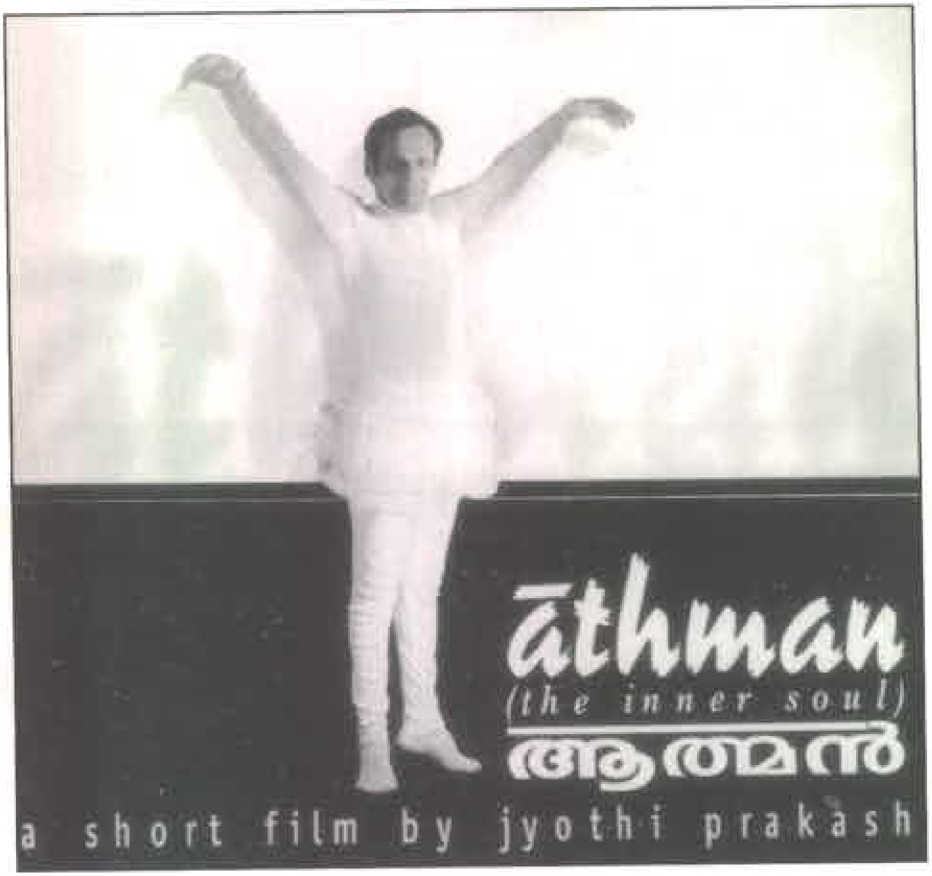

ATHMAN

Universal/ 19min/ 35mm/ Col

An average middle class man is in search of a purpose in life. And he is seeking it in the midst of dehumanising confusion, his search is foiled at every step. Despite obstacles, his pursuit of identity, meaning and solace continues as he painfully escapes the crossfire of political violence. For a while he gets glimpses of peace and comfort in familial images. But families are being torn asunder. Although overtaken by fear, the soul continues the race for meaning and peace thorough the passages in what seems to be a multi-storeyed mansion, ascending at times a spiralling staircase symbolising the pursuit for ultimate peace. Only at the end of the passage is he able to realise his self and break through into the void.

CHAITRA

Marathi/ 22 min/ 35mm/ Col

A short story exploring the complexity of human relations. Set in rural Maharashtra, *Chaitra* tells the story of Rakhma and her eight-year old son, Madhu. As part of the annual Chaitra ritual, Rakhma goes around inviting people to *haldi-kumkum*. Madhu accompanies her. He gets to drink *panha*, served to children in the houses she goes to. Rakhma is dragged by her son to Naikwada, an affluent house, where he has heard the *panha* is really good. The daughter-in-law of the house however thinks Rakhma has come earlier and refuses to part with the grain that is customarily given. That is inauspicious, and despite requests from her mother-in-law and Rakhma, she refuses.

Insulted, Rakhma gives her gold jewellery to her husband, telling him to pawn them as she will have *Haldi-kumkum* at her house...

चैत्र

मराठी/22 मिनट/35 मिमी/रंगीन

इस छोटी कहानी में मानवीय संबंधों की जटिलता का चित्रण किया है। महाराष्ट्र के ग्रामीण क्षेत्र में बनी फ़िल्म चैत्र रकमा एवं उसके आठ वर्षीय पुत्र मधु की कहानी बताती है। चैत्र के वार्षिक अनुष्ठान पर रकमा हल्दी-कुककुम के लिए लोगों को अपने बेटे मधु को साथ लेकर आमंत्रित करने जाती है वह पान्हा नामक पेय बच्चों को देती है जिस घर में वह जाती है उसका लडका रकमा को एक सम्पन्न नायकवाड परिवार की ओर ले जाता है जहां पान्हा बहुत अच्छा मिलता है नायकवाड परिवार की बहु रकमा को रीतिरिवाजों के अनुसार भी पान्हा का विरोध करते हुए देने के लए मना कर देती है। जो कि अशुभ है वह उसकी सास और रकमा के अनुरोध करने के बावजूद भी मना कर देती है।

अपमानित रकमा अपने स्वर्ण आभूषण अपने पति को रखने के लिए दे देती है क्योंकि हल्दी-कुमकुम वह अपने घर में स्वयं ही लगाएगी।

डायरी आफ ए हाउसवाईफ

मलयालम/15 मिनट/35 मिमी/रंगीन

एक गृहिणी अपने पति के समाचार का इंतजार करती है जो कि युद्ध के दौरान सीमा पर है। वह अपनी सास के साथ रहती है और सारा समय टेलीविज़न देख कर काटती है। टेलीविज़न जो पूरी दुनिया और युद्ध से उन दोनों का संबंध जोड़ता है। फ़िल्म सटीक रूप से एक पत्नी के अकेलेपन का खुलासा करती है।

DIARY OF A HOUSEWIFE

Malayalam/ 15 min/ 35 mm/ Col

A wife waits for news of her husband, away at the border during a war. She lives with her mother-in-law, with whom she has to vie for time to watch television, their link to the larger world and the war from their little port town. The film effectively brings out the loneliness of a housewife.

ENOUGH OF SILENCE

English/ 47 min/ 35mm/ Col

The signature of the present is riddled with blood. The destruction of nature seems to be paralleled in the numerous crisis faced by human societies across the world. In the midst of this cacophony is a middle-aged woman, an audiographer in search for the 'tune' that represents the spirit of nature and life in modern times.

Her search takes her to a forest, where all is calm and quiet - till a loud whirring of a hovering helicopter seem to tear apart the forest. Failing to find the right tune, she sets out for the land of a remote tribe, hoping to discover the strains of peace in their music. Even as she finds inspiration there, the world outside is never far away as the news of the blasts of September 11, 2001 in New York takes over.

एनफ़ ऑफ साइलेंस

अंग्रेजी/47 मिनट/35 मिमी/रंगीन

वर्तमान की पहचान रक्त छिद्रण से होती है प्रकृति का विनाश दुनिया भर के मानवीय समाजों के द्वारा किया जा रहा है। इस कुस्वरता के बीच एक अधेड़ उम्र की स्त्री है जो कि ध्वनि आलेखन ट्यून की खोज के लिए प्रकृति एवं आधुनिक समाज के जीवन का सजीव वर्णन करती है।

उसकी यह खोज उसे जंगल में ले जाती है जहाँ एकदम शांति है तभी एक हैलीकॉप्टर की आवाज आने से वह जंगल से भी चली जाती है। अपनी उत्तम लय पाने में असफल होने पर वह शुष्क क्षेत्र की ओर अपने संगीत में शांति की लय की तलाश में जाती है। उसे न्यूयार्क में दिनांक 11 सितंबर 2001 को हुए विस्फोटों की खबर मिलने से प्रेरणा मिलती है कि संसार बाहरी रूप से अलग से अलग नहीं है।

होली गंगा

हिन्दी/11 मिनट/35 मिमी/ रंगीन

इस फ़िल्म में धर्म के प्रति उपेक्षित अभिवृत्ति के साथ आज भारतीय जिस गंगा नदी की पूजा करते हैं और पवित्र मानते हैं उसी गंगा को प्रदूषित कर रहे हैं। इस फ़िल्म में प्रदूषण के द्वारा फैलने वाले रोगों एवं सरकार द्वारा उठाए जा रहे कदमों का सुन्दर चित्रण है।

THE HOLY GANGA

Synopsis

Hindi/ 11min/ 35mm/ Col

In the name of religion and ignorance, with an uncaring attitude, Indians are today polluting the river that we worship and consider sacred – the river Ganga. This film emphasizes the health hazards caused by such pollution and measures the steps the government plans to take.

जोरासंको ठाकुरबाड़ी

अंग्रेजी/38 मिनट/35 मिमी/रंगीन

टैगोर का एक विशिष्ट परिवार है। उनके परिवार से ही नहीं अपितु भारतीय संस्कृति के जाने माने लोगों के गुजरने के बाद भी जोरासंको स्थित टैगोर का प्राचीन मकान आज भी जादू बिखेरता है। फ़िल्म में उनके जादूई क्षणों को कैद किया है जबकि कोई भी महत्वपूर्ण व्यक्ति हमारे बीच नहीं है। रबिन्द्रनाथ टैगोर के साथ-साथ यह फ़िल्म उनके चाचा, चाची, भाइयों एवं बहनों, चचेरे भाइयों, भतीजों, भतीजियों, मित्रों एवं संबंधियों जिन्होनें इस मकान में समय गुजारा है, के बारे में है।

एक महत्वपूर्ण मकान जिसमें टैगोर ने अपना सारा काम जैसे लिखना, गाना, सुनाना एवं चित्रकारी करना जिसके माध्यम से उन्हें स्वतंत्रता, विशेषकर मस्तिष्क को, मिली। यह फ़िल्म बंगाल के पुनर्जागरण काल के प्रस्फुटन के संकटकाल में उनका योगदान विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों को स्वतंत्रता संघर्ष से जोड़कर टैगोर के विशिष्ट दस्तावेजों का चित्रण है।

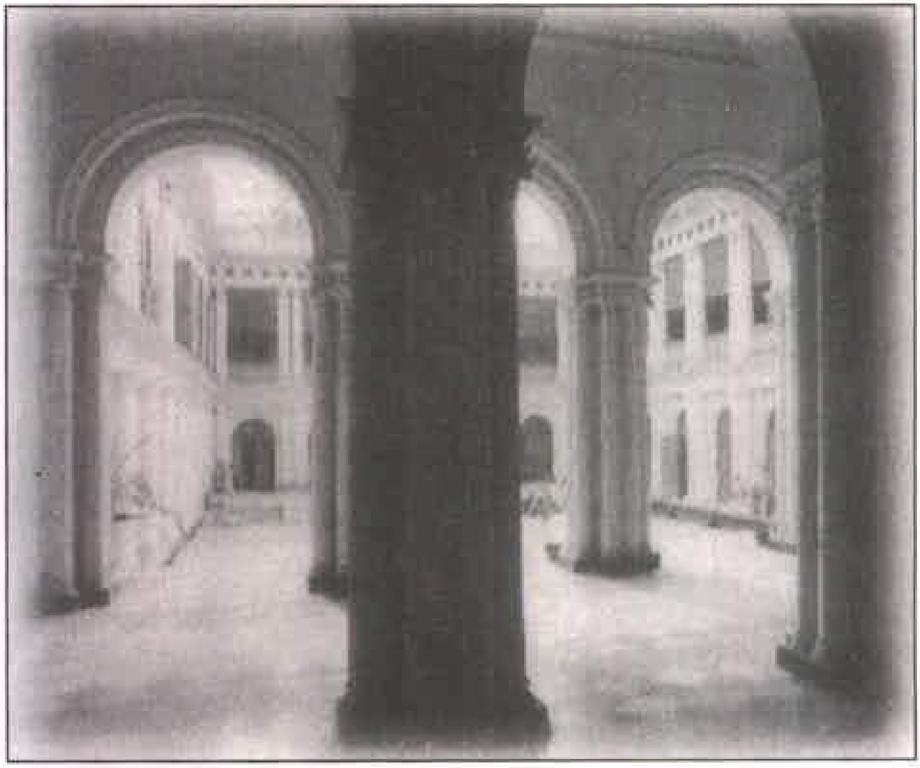

JORASANKO THAKURBARI

English/ 38 min/ 35 mm/ Col

The Tagore household was an exceptional one. Even after the passing of the some of the greatest names, not just in the family but also on the Indian cultural scene, their ancestral house at Jorasanko still radiates magic. The film is an effort to capture those magical moments, even if the main players are no longer present. Besides Rabindranath, this film is about his uncles, aunts, brothers and sisters, cousins, nephews, nieces, relatives, friends and associates who have spent time in this stately house.

More importantly, a house in which they wrote and sang, composed and painted, acted and recited, and above all perhaps strove towards liberty, especially of the mind. Crucial in the efflorescence of Bengal's Renaissance, their contributions to various cultural fields coupled with their participation in the freedom struggle make this film a remarkable document on the Tagores.

KALAHANDI

Oriya-English/ 45 min / 35 mm/ Col

Despite all the progress achieved by India, there remain pockets that seem to have been totally bypassed by the process. With its regular starvation deaths and all round misery, Kalahandi perhaps best symbolises this stark fact. Investigations in Nuapara, Lanjigarh and parts of Bolangir reveal that a yawning gap remains between the administrations of the centre and state and the people in these areas. Infrastructure facilities are almost absent, agriculture poor, drought and famine common. The resultant push and pull of migration brings its own set of miseries. People often end up as cheap labour… or in brothels. Both usually quite distant form the area.

The film also contrasts the utter indifference of not just the outsiders, but the educated in the area, who know more of the world outside. Kalahandi is forgotten by just about anyone who can afford to.

कालाहांडी

उड़िया-अंग्रेज़ी/45 मिनट/35 मिमी/रंगीन

भारत में सभी तरह की उन्नति होने के बावजूद कुछ क्षेत्रों को प्रक्रिया से अलग रखा है। भुखमरी से नियमित रूप से हो रही मौतों एवं गरीबी जैसे कड़वे सत्यों को दर्शाने के लिए कालाहांडी शायद सर्वोत्तम प्रतीक है। नौपारा, लंजीगढ एवं बोलंगीर के भागों का अन्वेषण करने पर पाया गया कि केन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार तथा इन क्षेत्रों के लोगों के बीच का अन्तर इसका मुख्य कारण है। आधारिक संरचनाएं, सुविधाएं ज्यादातर नदारद रहती है। जिसके कारण कृषि अनुपजाऊ, सूखा एवं अकाल की चपेट में आ जाती है। परिणामतः लोगों के इधर से उधर विस्थापन होने से ज्यादा गरीबी बढ़ती है। इससे लोग प्रायः सस्ती मजदूरी पर कार्य करते है या फिर गलत कार्य करते हैं और दोनों ही क्षेत्रों में उन्हें उदासीनता ही हाथ लगती है।

यह फ़िल्म न केवल बाहर रहने वाले लोगों की पूर्ण उदासीनता को दर्शाती है अपितु क्षेत्र के लोगों जो कि बाहरी दुनिया के बारे में ज्यादा जानते हैं को भी शिक्षित बनाती है। फ़िल्म कालाहांडी को वही व्यक्ति भूल सकता है जो कि उपरोक्त को सहन कर सकता है।

कनावु मलाईलेक्कू

मलयालम/45 मिनट/35 मिमी/रंगीन

फिल्म कनावु शिक्षा के लिए एक प्रयोग है जिसमें केरल के एक जिले को प्रसिद्ध मलयालम उपन्यासकार के. जे. बेबी के अनुसार प्रदर्शित किया गया है। इस फ़िल्म का मुख्य उद्देश्य जनजातियों की पहचान, उनकी गरिमा एवं मूल्यांकन का बोध कराना है। फ़िल्म की कहानी बेबी के इर्द गिर्द है। इस लेख में एक संप्रदाय, जो कि सांसारिक मोह के चक्कर में टुकडों में बंटा हुआ है, की परिवेदनाओं का चित्रण है। प्रत्येक नये कार्य के साथ, बेबी इस समुदाय के सपनों को साकार करने में सक्षम है। उसी के माध्यम से फ़िल्म कनावु भी बच्चों के एक समूह के सपनों को साकार करने के लिए मूल शिविर में खत्म होती है। इस प्रकार पूरा समुदाय उनकी गतिविधियों के साथ चलता है क्योंकि उनका विश्वास है कि उद्देश्य सदैव व्यक्ति से ज्यादा महत्वपूर्ण है।

KANAVU MALAYILEKKU

Malayalam/ 45 min/ 35mm/ Col

Kanavu is an experiment in learning that is unfolding in Kerala's Wynad district under the famous Malayalam novelist KJ Baby. The project also aims at reasserting the tribal identity, their dignity and the sense of self-worth. The narrative is built around the writings of Baby. The writings trace the anguish of a community torn asunder by the avarice of the modern world. With each new work, Baby is able to advance the tribal dream. Travelling through them, the film too arrives at Kanavu, the base camp of a group of tribal children for scaling the mountain of dreams.

The film celebrates life of tribal children and posits an alternate paradigm of culture. At a time when global development folklore is agog with paeans to the Kerala Model's achievement in the social sector, the film looks at a section the model almost inexplicably bypassed.

THE MONPAS OF ARUNACHAL PRADESH

English/ 20min/ 35mm/ Col

The Monpas are one of the several hundred tribes inhabiting a region of the north eastern state of Arunachal Pradesh. Yet they maintain a distinctive lifestyle that is readily identifiable. They observe rituals, customs and traditions that are unique, the most interesting being the system of marriage wherein the girl elopes with the chosen man and informs her mother through signs in a very distinct manner. The film traces the Monpa lifestyle in a captivating manner.

द मोनपास ऑफ़ अरूणाचल प्रदेश

अंग्रेजी/20 मिनट/35 मिमी/ रंगीन

मोनपा बहुत सी जनजातियों से अलग है जो की अरूणाचल प्रदेश के उत्तर पूर्व में निवास करते हैं वे अभी भी अपनी विशिष्ट जीवनशैली को बनाये हुए हैं जो उनकी पहचान कराती है। वे धार्मिक अनुष्ठानों, रीतिरिवाजों और परम्पराओं को मानते हैं। एक बहुत रूचिपूर्ण पद्धति शादी की है जिसमें लडकी चुने हुए व्यक्ति के साथ भाग जाती है और फिर अपनी माँ को विशिष्ट तरीकों अर्थात चिन्हों के माध्यम से बताती है।

ए न्यू पैराडिग्म

ए न्यू पैराडिग्म - बच्चों के जीवन में शारीरिक एवं मानसिक विकलांगता की खोज है। और अभी उनके लिए जो सम्भव है उसका चित्रण है। हमारे चारों तरफ ऐसे बच्चे जो व्यग्रता एवं मानसिक आघात से पीड़ित हैं उनके लिए इस फ़िल्म के रहस्यों से उनके अनुभवों एवं पारितोषिक का चित्रण है। और माता-पिता को ऐसे बच्चों के बारे में भविष्य की क्या चिंताऐं होती हैं? यह फ़िल्म इन बच्चों के उज्जवल भविष्य हेतु पहलुओं को दिखाता है साधना ऐसे ही बच्चों को प्रशिक्षण देने की एक संस्था है उसमें प्रत्येक बच्चे की प्रतिभा का अलग अलग मूल्यांकन किया जाता है। हर बच्चे की दक्षता के अनुरूप विशेष पाठ्यक्रम बनाया जाता है। दक्षताओं का प्रसार ललित कलाओं से लेकर शिल्प कलाओं तक होता है। इस प्रकार शिक्षा दीक्षा पाकर न केवल इन बच्चों को ब्लकि सभी को संतोष होता है।

A NEW PARADIGM

English / 20min/ 35mm/ Col

A New Paradigm delves into the lives of the children with physical or mental disabilities, and explores what is still possible for them. And the anxieties and traumas for those around such children, their experiences and rewards form the crux of this film. And what worries parents of such children is their future.

The film looks at this aspect – creating a future for these children. At Sadhana, an institute to train these youngsters, the skill of each child is individually assessed. According to the skills an individual curriculum is prepared for each student. Skills range from creative ones like fine arts and crafts to more routine ones like tailoring, packaging, handling money, baking, photocopying, receiving telephone calls – the range of skills is diverse. And when these children become adults and are able to hold their own not just they but everyone around them gets a tremendous sense of satisfaction.

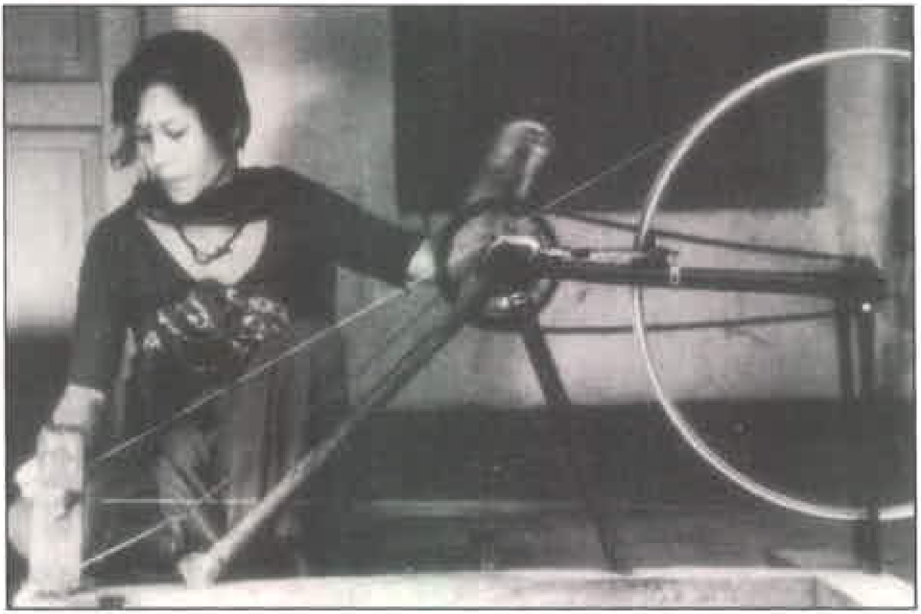

इन सर्च ऑफ़ मुगासिल्क

अंग्रेजी/18 मिनट/35 मिमी/रंगीन

असम में रेशम बुनने का इतिहास बहुत प्राचीन है। मुगासिल्क इस क्षेत्र की विरासत एवं संस्कृति का एक हिस्सा है। ऊपरी असम में बसने वाले लोगों के जीवन को समझने के लिए यह फ़िल्म बहुत ही सहायक है तथा यह फ़िल्म इस क्षेत्र की विरासत का नज़दीक से चित्रण करती है।

IN SEARCH OF MUGA SILK

English/ 18 min / 35mm/ Col

The history of silk weaving in Assam is an ancient one. Muga silk is part of the heritage and culture of the region and has a wide influence on life patterns in Assam. The film takes an insightful look into this crucial heritage of the region.

आर्केस्ट्रा

हिन्दी/7 मिनट/35 मिमी/रंगीन

संगीत भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। घराने, लोकसंगीत और अनेकों वाद्य यंत्र आज भी भारतीयों को मंत्रमुग्ध करते हैं। भिन्न-भिन्न होने पर भी ये वाद्य यंत्र हर प्रकार के सुर प्रस्तुत कर सकते हैं। और अपने आप में ये वाद्य यंत्र अपनी धाती और सुरों से एकता का संदेश देते हैं।

ORCHESTRA

Hindi/ 7 min / 35mm/ Col

Music has pervaded India's life from time immemorial. From the numerous instruments, the codified classical *gharanas*, folk music to the full-blown songs, music still brings joy and comfort to almost everyone.

Diverse as these instruments are, they have compositions for every emotion. And in their own way these instruments are a symbol of the land itself – unity in diversity. And though each of these instruments has a rich and unique history of its own, it is only when they played together that they compliment each other to form an astounding orchestra.
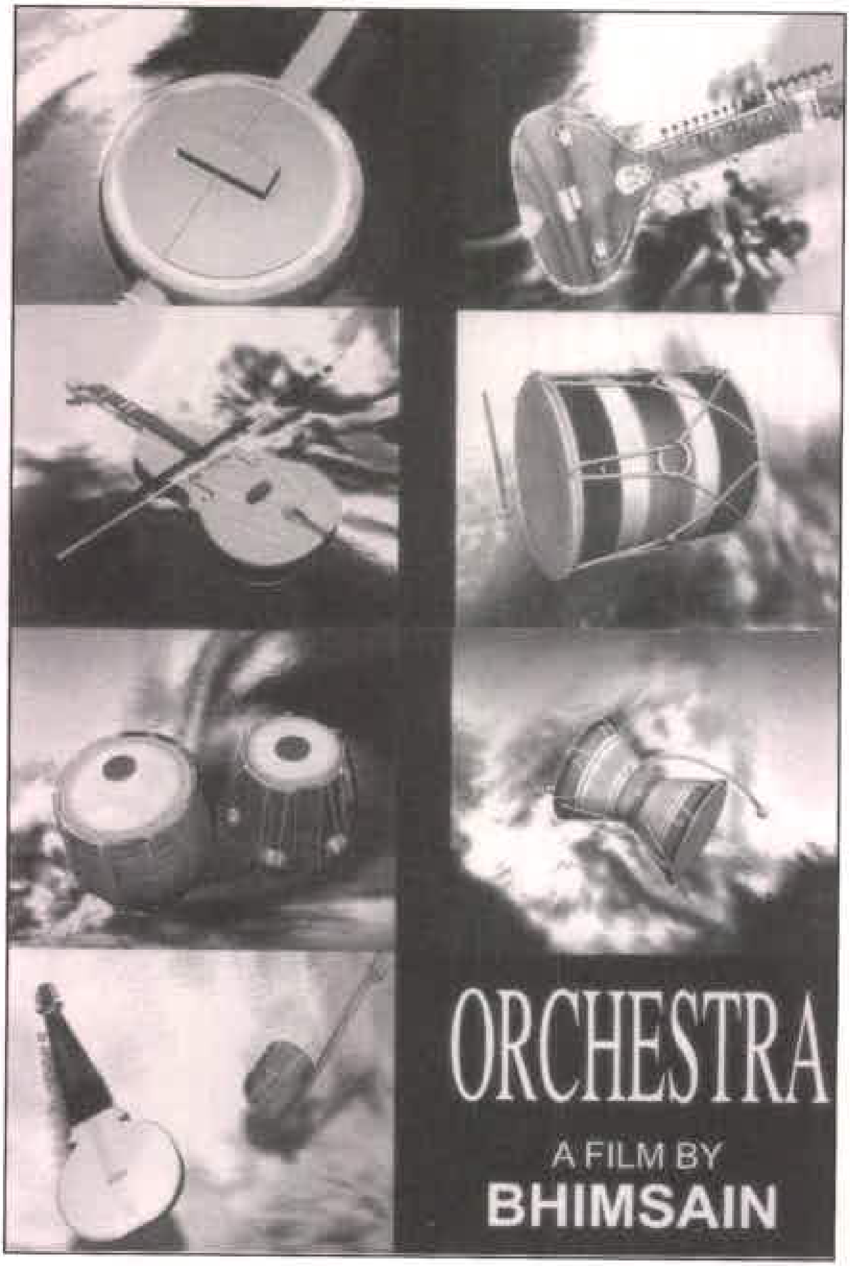
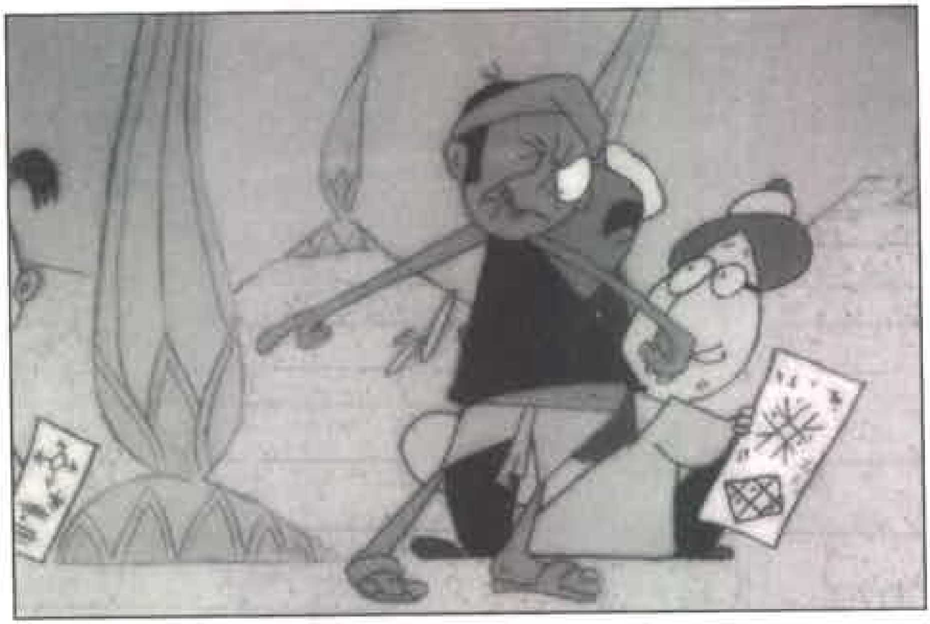

THE PINK CAMEL

HIndi/ 15 min / 35mm/ Col

A delightful parable warning about the dangers of superstition. A king of yore laid too great a stress on astrological predictions. From what to eat and wear to more major issues, everything was decided by soothsayers. Exasperated, his prime minister decided to teach the king a lesson. Disguised as a famous soothsayer from distant lands, he told past events of the king's life with great accuracy, impressing the king no end. Before leaving, he warned the king never to think of pink camels.

Though the king had never earlier thought of pink camels, now he could do little else. The camels came unbidden to his thoughts and dreams. He shivered and grew ill. Meanwhile a rumour spread around town that a pink camel had been spotted.

द पिंक कैमल

हिन्दी/15 मिनट/35 मिमी/रंगीन

अंधविश्वास के ख़तरों से सावधान करता एक उपाख्यान। प्राचीन समय में एक राजा ज्योतिष से अत्यंत तंग आ कर उस के प्रधानमंत्री ने उसे सबक सिखाने का फैसला किया। एक बड़े ज्योतिषी का वेश धरकर उसने पहले तो राजा को अपने प्रभाव में लिया और फिर उसे सावधान किया कि वह गुलाबी ऊँट के बारे में कभी न सोचे।

यद्यपि राजा ने पहले कभी गुलाबी ऊँट के बारे में सोचा नहीं था परंतु अब वह सोचने लगा और बीमार पड़ गया। तभी शहर में ख़बर फैली की गुलाबी ऊँट देखा गया है...

SAYANTHANATHINTE PADAVUKAL

Language/ 35mm/ Col

Did the old ever expect to be abandoned like this? To be outcasts form the world they helped build?

These are the hands that fed many a generation. For them food is an excuse to return to their memories. Do those memories feed them now, as they sit before their rations? Lives spending their final moments in solitude and desolation, with empty gazes recollecting those absent from their present. Will any ray of hope seep into these greyed eyes that are turned mostly inwards?

Why did they sacrifice their youth, dedicate it to their land? For the rejection and loneliness that constitutes the present. This hapless exile during the endless journey of life and death... will the days of agony ever end?

सायंथन थिन्ते पाडावुकल

क्या वृद्धों को ऐसे ही छोड़ देना चाहिये? उस संसार में जिसे उन्होंने ही बनाने में मदद की?

ये वो हाथ हैं जिन्होंने एक पीढ़ी को भोजन कराया। भोजन उन के लिये कुछ यादों तक पहुँचने का साधन मात्र है। क्या वे यादें अब उन्हें घेरती हैं जब वे स्वयं भोजन के आगे बैठते है। ज़िन्दगियाँ जो अंतिम घड़ियों को अकेलेपन के साथ जी रही हैं, टकटकी लगाए उन यादों को ढूँढ़ते जो अतीत में थी पर वर्तमान में नहीं हैं। क्या कोई आशा की किरण इन अंदर धँसी बूढ़ी आँखों तक पहुँचेगी।

क्यों उन्होंने अपना यौवन न्यौछावर कर दिया मातृभूमि के लिये। वर्तमान के इस अकेलेपन को पाने के लिये। क्या निर्वसन का ये दुख कभी समाप्त होगा?

सोनल

हिन्दी, अंग्रेजी/30 मिनट/35 मिमी/रंगीन

नृत्यांगना सोनल मानसिंह का ये जीवनवृत्त उन के अंदर छुपे मानवीय गुणों की झलक देता है। फ़िल्म न केवल उन के जीवन को दर्शाती है बल्कि उस स्त्री के व्यक्तित्व का चित्रण है जिसने भारत की प्रसिद्ध नृत्यांगना बनने के सफर में अनेक मुश्किलों का सामना किया। फ़िल्म सोनल मानसिंह को एक आशावादी उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करती है जिसका संस्कृतियों से परे भी अनुसरण किया जा सके।

SONAL

Hindi, English/ 30 min/ 35 mm/ Col

This biographical film on danseuse Sonal Mansingh traces her growth as a dancer and provides glimpses of her human qualities. The film not just documents her two decades plus career, but also takes a peek into the character of a person who overcame personal obstacles to become one of India's foremost dancers. The film depicts Sonal Mansingh as an example of hope for people to identify with across cultures and also showcases her myriad interests and involvement in numerous fields.

TEEJAN BAI

Hindi/ 33 min/ 35mm/ Col

Using tradition as means of rebellion exemplifies Pandavani singer Teejan Bai's life. In this film, Teejan Bai looks back on her life, the challenges she faced, and overcame. She narrates the social taboos she had to break, and how she resisted the pressure to give up singing. Teejan started imbibing the folk tradition at a young age from her maternal grandmother. Fascinated by Pandavani, she had to learn it clandestinely as it was supposed to be a male preserve. When villagers in remote Chattisgarh got to know, they threatened her with dire consequences and finally expelled from the village.

Her first public performance was for a village chief, to whom other villagers had complained that her singing in the fields disturbed them. He summoned her and paid her ten rupees to perform, starting off a remarkable journey. Today Teejan, is highly sought after, often by the very same people who had raised objections to her practising. But perhaps the best testament to her achievements is what she symbolises for most, a never-say-die attitude that has seen her triumphing over seemingly insurmountable odds.

तीजनबाई

हिन्दी/33 मिनट/35 मिमी/रंगीन

इस फ़िल्म में परम्पराओं का विद्रोह के रूप में प्रयोग करते हुए पांडवानी गायिका तीजनबाई के जीवन का सौदाहरण प्रतिपादन है। इस फ़िल्म में तीजनबाई ने अपनी बीती जिन्दगी में आने वाली चुनौतियों का सामना किया है और उन पर विजय पाई है। वह इस फ़िल्म में समाज में वर्जित कार्यों जिन पर वह रोक लगाना चाहती थी और वह उन विपत्तियों का कैसे गाना गाकर विरोध करती थी। तीजन ने युवावस्था में अपनी नानी से लोक परम्परा शुरू की थी। पांडवानी से मोहित होकर वह इसे गुप्त रूप से सीखती थी। यह नृत्य केवल पुरुषों के लिए ही सुरक्षित था। जब छत्तीसगढ के ग्रामवासियों को इसका पता लगा तो उन्होंने इसके भयानक परिणाम होने की धमकी दी और अन्त में तीजन को गाँव से निसकासित कर दिया जाता है। उसका पहली प्रस्तुति ग्राम प्रमुख के लिए थी जिससे अन्य लोगों ने शिकायत की थी कि उसके गानों से उन्हें परेशानी होती है। ग्राम प्रमुख ने तीजनबाई को बुलवाया और अभिनय करने के लिए दस रूपये दिये। यह उनकी उल्लेखनीय यात्रा की शुरूआत थी।

अपने गाँव में की गई प्रथम प्रस्तुति के बाद तीजन ने पीछे मुडकर नहीं देखा। आज वही ग्रामीण समाज जिसने उनकी कला पर आपत्ति उठाई थी, उन्हें पलकों पर बिठाते हैं। परंतु तीजन की उपलब्धियाँ कला के परे उनकी कर्मठता और दृढ संकल्पना तक जाती हैं।